Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

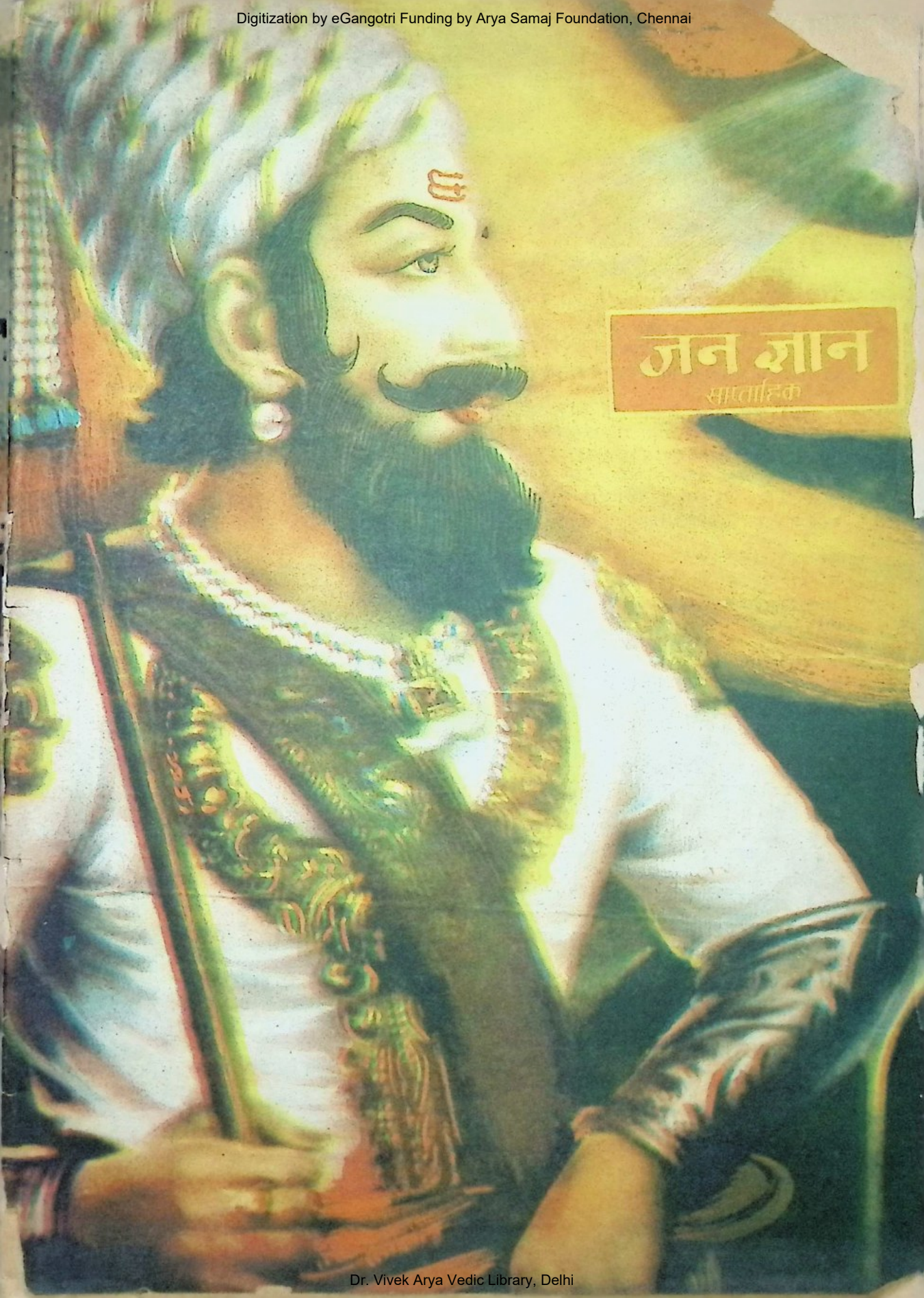

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आर्यसमाज चाहता है कि-

(१) विश्व की समस्याओं के प्रति मनुष्य का दार्शनिक दृष्टिकोण ठीक हो। जड़ और चेतन दोनों प्रकार के पदार्थों के अस्तित्वों का समुचित वैज्ञानिक कारण प्रस्तुत हो।

(२) जगत् को मिथ्या कहकर ढोंग पाखण्ड न फैलाया जावे।

(३) मनुष्य अपने आपकी सत्ता का अनुभव करते हुए भी, न तो अपनी सत्ता से ही इन्कार करे और न अपने को सृष्टि कर्ता सर्व चेतन मानने के भ्रम में पड़े।

(४) मनुष्य सृष्टि के कर्ता धर्ता हर्ता केवल चेतना मंत्र वस्तु परमात्मा की सत्ता को मान, उसके यथार्थ सगुण निगुण निराकार स्वरूप को पहिचानने और निरभिमान हो विश्वज्ञान प्राप्ति के लिए, अपनी आत्मा की उन्नति के लिए और दुखः पाप विमुक्ति के लिए उसी की स्तुति प्रार्थना उपासना करे।

(५) गुरुओं के भ्रम जाल में न फंसे। तीर्थ, कण्ठी, लिंग मस्त आदि को धर्म का चिन्ह न मान ईश्वर आज्ञा पालन-वेदानुकूल आचरण और यम नियमादि को धर्म का लक्षण माने।

(६) मनुष्य वैश्वानर अर्थात् उत्तम नागरिक बने। प्राणी मात्र में सम्भाव रक्खे। आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक विषमता को दूर करने में सदा तत्पर रहे। जात-पात के झगड़ों को मिटा दे।

(७) सब सदा संसार का उपकार करें, आत्मिक, शारीरिक और सामाजिक उन्नति सब मिलकर करें सब अपनी उन्नति में ही सन्तुष्ट न रहकर सबकी उन्नति में अपनी उन्नति मानें। परहित का ध्यान में रखकर स्वहित साधें। सबसे यथायोग्य प्रीति पूर्वक धर्मानुसार वर्तें।

(८) संसार में पूर्व जन्म कृत कर्मों के अनुसार मत भेद को छोड़ कर किसी प्रकार का भेद संसार में न हो। जैसे बछड़ा गौ को प्यार करता है वैसे सब सबसे प्यार करें। परस्पर छोटे बड़े के भेद सर्वथा मिट जावें। सामूहिक उन्नति में यत्नशील हों।

(९) अपने दुखों और पापों का बोझ दूसरे के कन्धे पर न डाल; दूसरों के दुःखों को हलका करने का प्रयत्न करें। अपने पापों को स्वीकार कर प्रायश्चित करें, ताकि पाप की वासनायें नष्ट हों।

(१०) संसार में मानव धर्म (वेदमत, आर्यजुष्ट) का विस्तार हो और विश्व में एक चक्रवर्ती राज्य का स्थापन हो, ताकि विश्वशान्ति हो सके।

आर्य वीर हुंकार

अटल व्रत लिये हम बढ़े जा रहे हैं,
कठिन सीढ़ियों पर चढे जा रहे हैं।
उमंगों की गंगा चली है उमड़ती,
विजय भावना की घटा है घुमड़ती।
खबरदार हो व्यर्थ टक्कर न खाओ,
हटो ! राह में विघ्न बन कर न आओ ।।१।।

कोई भूल कर राह में जो पड़ेगा।
महाशूल बन पैर में जो गड़ेगा,
कुचल जायगा वह, मसल जायगा, वह,
अनधिकार का दण्ड पा जाएगा वह।
न बाधक बनो दूर को भाग जाओ,
हटो ! राह में विघ्न बन कर न आओ ।।२।।

लड़ेंगे महाकाल से भी लड़ेंगे,
महावीर हैं हम समर में अड़ेंगे।
प्रलय कारिणी हैं हमारी भुजाएं,
जिन्हें प्राण प्यारे हैं सन्मुख न आएं।
बचाओ प्रथम अपना आपा बचाओ,
हटो ! राह में विघ्न बन कर न आओ ।।३।।

सुनो, दुर्जनों के लिए काल हैं हम,
सदा सज्जनों के प्रणतपाल हैं हम।
न सीखा है हमने दुराचार सहना,
न सीखा है अन्याय से दबके रहना।
समझ लो न ज्वालामुखी को जलाओ,
हटो ! राह में विघ्न बन कर न आओ ।।४।।

—सनातन

वेद पढने का अधिकार मनुष्यमात्र के लिए

'मनुष्य मात्र को (वेद) पढ़ने का अधिकार है...।'

सब मनुष्यों को वेदादि शास्त्र पढ़ने (और) सुनने का अधिकार का प्रमाण यजुर्वेद के २६ अध्याय में दूसरा मन्त्र है:—

'परमेश्वर कहता है कि (यथा) जैसे मैं (जनेभ्यः) सब मनुष्यों के लिए (इमाम्) इस कल्याणीम् कल्याण अर्थात् संसार और मुक्ति के सुख देने हारी (वाचम्) ऋग्वेदादि चारों वेदों की वाणी का (आवदानि) उपदेश करता हूँ, वैसे तुम भी किया करो..... (ब्रह्मराजन्याभ्याम्) ब्राह्मण, क्षत्रिय (आर्याय) वैश्य (शूद्राय) शूद्र और (स्वाय) अपने भृत्य वा स्त्रियादि (अरणाय) और अति शूद्रादि के लिए भी वेदों का प्रकाश किया है।'

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ओ३म्
कृण्वन्तो-विश्वमार्य्यम्
जनज्ञान
वेदाः
हिन्दी साप्ताहिक
नई दिल्ली

वर्ष १ ● रविवार २ मई १९७६ : २० वैशाख २०३२ ● अंक १२

सम्पादक
पंडिता राकेश रानी
●
सह-सम्पादक
कु० आभा
दूरभाष : ५६६६३९
: २०१५८४
●
पता : वेद मंदिर
१५९७, हरध्यानसिंह मार्ग
[निकट ३१, नाईवाला]
करोल बाग, नई दिल्ली-११०००५

●
मूल्य एक प्रति ५० पैसे
वार्षिक मूल्य २०)
विदेश में ६ पौंड : हवाई डाक से
४ पौंड : समुद्री डाक से
आजीवन ३०१ रु०
●
दयानन्दाब्द : १५१
सृष्टि संवत् : १९६०८५३०७६

निराशा छोड़ दो !

निराशा और मृत्यु में कोई अंतर नहीं, इसलिए निराशा छोड़ दो और आशा का पल्ला पकड़ कर जीवन का स्वागत करो !

जीवन नाम है कर्म का कर्म नाम है आगे बढ़ने का, आगे बढ़ना विजय का और विजय सफलता का आधार है।

विजय ही जीवन का सार है। हारा हुआ व्यक्ति जीते जी मर जाता है। कोई भी तो हारने वाले का साथ नहीं देता। इसलिए प्रत्येक मूल्य पर विजय वरण करो !

संसार को विजय करो ! सत्य की पताका भू मंडल पर फहराओ ! पाप-अज्ञान और पाखंडों को समूल नष्ट कर दो। चुनौति देती अधर्म की लहरों को समाप्त करो और आगे बढ़ो !

जीवन की लहरों पर सपनों के गीतों को किसने कब गाया है ? सोचो, तो पीछे हट, हार कर किस ने यश पाया है ? कोई भी हो, हार कर उसका पता ठिकाना कहीं नहीं मिलता।

सत्य को सत्य सिद्ध करने के लिए भी शक्ति और पुरुषार्थ चाहिए। त्याग और बलिदान चाहिए, अन्यथा असत्य ही सत्य का स्थान ग्रहण कर लेता है।]

देख सको तो आंखे खोल कर देखो, चारों ओर अज्ञान, ज्ञान और धर्म के नाम पर फैल रहा है। पाखंडों ने सत्य को खंड-खंड कर दिया है। नकली गुरूजन मानस पर अंधकार डाल रहे हैं और कांप रही है मंगल वाण !

तुम.....सत्य को जानते हुए भी नहीं जानते, धर्म का नाम लेते हुए भी तुम धर्म से बहुत दूर हो, तुम जो सत्य समझते हो, उसे भी आचरण में लाते हुए डरते हो, यही तो निराशा का परिणाम है।

आशा का स्वर्णिम विहान देखो, सूरज की प्रखर किरणें निहारो और फिर जीवन के सत्य को गहरायी में पैठ कर देखो, सचमुच तुम्हारा जीवन दर्शन बदल जाएगा।

क्रांति का अर्थ है आशा, निर्माण की आनन्दमयी भाषा, जिस के पास कभी नहीं आती हार, मिलता है विजय का संदेश और मनुष्य बन जाता है, अपने पिता का सच्चा पुत्र।

आदि काल से आज तक, १ अरब ९६ करोड़ वर्ष पहले से जो सत्य मुखरित था उसे पुनः प्रतिष्ठित करने के लिए अब समय आ गया है।

प्राण शक्ति से जिन के मानस में सत्य के प्रति श्रद्धा हो और असत्य से प्यार, वे सत्य की पूजा करें और जीवन में उसे ढालें ताकि निराशा की काली निशा कभी भी हमारे जीवन में न आए।

पर निर्झर का संगीत कौन सुनेगा ?

राकेशरानी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वेद भक्त ऋषि दयानन्द के अनुयायियों को

वेद-प्रचार-यज्ञ का आवाहन

एक लाख परिवारों में प्रभु की अमर वाणी

चारों वेदों का हिन्दी भाष्य

पहुँचाने का संकल्प पूरा कीजिए

आश्चर्यजनक ..... सस्ता नाम मात्र के मूल्य पर

नया जनता संस्करण : दो सुनहरी जिल्दों में

रियायती मूल्य १५१)

[केवल ७ मई १९७६ तक]

साथ में १०१) का साहित्य मुफ्त

इतना सस्ता : इतना आकर्षक और श्रद्धापूर्ण प्रकाशन आपके अपने दयानन्द संस्थान की गौरवपूर्ण परम्परा है।

१५५०० परिवारों में पुस्तकालय संस्करण

४ सुनहरी जिल्दों में पहुँच चुका है

वेद वाणी गुंजाने में आप के सहयोग की इच्छुक

पंडिता राकेश रानी प्रधानमंत्री दयानन्द संस्थान वेद मंदिर

३१ नाई वाला करौल बाग, नई दिल्ली-५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

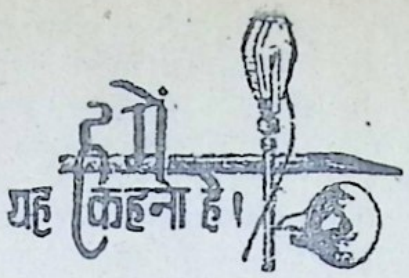

नहीं–नहीं–नहीं !

आग लगी है, घर जल रहे हैं, बस्ती उजड़ रही है, सब कुछ समाप्त होने को है; क्या तुम आग बुझाने चलोगे ?

नहीं !

अरे देखो, पास-पड़ौस में कुछ डाकू आ गए हैं। घरों को लूट रहे हैं, बच्चों को मार रहे हैं, बहनों को अपमानित कर रहे हैं · उनकी, आततायियों से रक्षा करने चलोगे ?

नहीं !

तुम्हारा अपना घर जल रहा है। उस का सामान भी लोग उठा रहे हैं, सभी कुछ समाप्ति पर है···क्या तुम अपना घर बचाने भी चलोगे ?

नहीं !

प्रत्येक प्रश्न का, निमंत्रण का, आज एक ही उत्तर मिलता है, नहीं, नहीं नहीं !

हमने निरन्तर आवाहन किया, कुछ करने के लिए जीवन देने का निमंत्रण दिया; बहुत कहा, पुकारा सभी का उत्तर मिला, नहीं !

इस 'नहीं' के दर्शन का समाधान कैसे हो ? क्या किया जाए कि जन मानस में बलिदान की भावना उत्पन्न हो ? अधर्म की आंधी रोकने के लिए कौन आगे आए, जब सर्वत्र 'नहीं' का ही उत्तर गूंज रहा हो !

पाखंडों की बढ़ती आंधी से धर्म का अस्तित्व लुप्त हो रहा है। नकली गुरुओं ने भोली-भाली जनता को बहका रखा है, आत्म-ज्ञान का अभाव सभी के मस्तिष्क को विकृत किए हुए है।

किसे ज्ञात है जीवन का सत्य ? धर्म का रहस्य, परमात्मा के दर्शन का मार्ग···धर्म धुरीण केवल भाषण दे सकते हैं, धर्म की रक्षा नहीं कर सकते ?

कोई सन्तान आज माता-पिता के आदेश पर जीवन भेंट नहीं चढ़ा सकती। कोई सत्य कार्य में आहुति नहीं दे सकता सत्य का गला अपने हाथों घोट कर हम झूठ का झण्डा फहराते हैं। धन्य हैं हम, पाकिस्तान बना, हमारा बहुत कुछ वहां रह गया पर हमने शिक्षा ग्रहण नहीं की। धन संग्रह की भूख और भी बढ़ गई कभी-कभी तो ऐसा लगता है कि हम अर्थ पिशाच बन गए हैं। धन किसके साथ गया है भवनों में सदा कौन रहा है, आभूषण क्या चिता में साथ देंगे पर इन प्रश्नों पर विचार के लिये किसके पास अवकाश है ? हर बात को नकारने के मार्ग ने हमें घाटे का व्यापारी बना दिया है। अपने को भूलकर शरीर का शृङ्गार हमारा मार्ग दर्शक बन गया है।

कौन सुनता है कहानी जिन्दगी की,
प्यार की झंकार किस के पास रहती,
स्वप्न में भूले हुए, चलते सभी हैं,
सत्य किसने जान पाया है, यहाँ पर !

जीवन चल रहा है·· चलता रहेगा, पर जब यह धरती छोड़नी पड़ेगी, तब क्या होगा ?

प्रश्न होगा—
कुछ साथ ले जा रहे हो ?
नहीं !
जिस के लिए जीवन भर पाप किए,
क्या वह तुम्हारे काम आया ?
नहीं !
मां-बाप, भाई-बहन, पति-पत्नी,
पुत्र-कन्या, क्या साथ देंगे ?
नहीं !

तब खुलेंगी आँखें और नहीं का दर्शन तब तुम्हें तड़पाएगा। पर फिर तो वही होगा कि 'अब पछताए होत क्या जब चिड़ियाँ चुग गयीं खेत।'

भूलो मत, तुम सब एक यात्री हो ! यात्रा को जीवन लक्ष्य मत बनाओ ! मंजिल तक पहुंचने के लिए कुछ करो, कुछ कमाओ···और 'हां' का जीवन पाठ पढ़ो।

हमारा साथी है भगवान

अनेक पूछते हैं, तुम कैसे यह सब कुछ कर रहे हो ? कौन है तुम्हारे साथ···

लौकिक दृष्टि से हम अपने को अकेला पाते हैं। कोई भी तो आकर बोझ बांटने वाला नहीं। बहुतों से गालियां मिलती हैं, पर किसी का अबाध प्यार नहीं मिलता। हमारे साथ—जीने और मरने के लिए भी तो कोई तैयार नहीं हो सका।

धन हमारे पास नहीं। कर्जे के बोझ में डूबे दिन-रात संघर्ष में लगे, एकाकी मन को जब अंधेरा अनुभव होता है तभी स्वयं प्रभु प्रकाश-शक्ति-प्रेरणा बनकर हमारे लिए वरदान बन जाते हैं।

वही है माता, पिता हमारा,
वही सखा है, वही है मंजिल,
निराश - पीड़ा से पूर्ण झोंके,
उसी ने रोके, वही है रक्षक !

...भारतेन्द्र नाथ

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—आचार्य पं० प्रियव्रत जी

रोग भगाने का उपाय

द्वाविमौ वातौ वात आ सिन्धोरा परावतः।
दक्षं ते अन्य आ वातु परान्या वातु यद्रपः॥

ऋ० १०।१३७।२

अर्थ—(इमौ) ये (द्वौ) दो (वातौ) वायु (वातः) चल रहे हैं, एक (आ सिन्धोः) हृदय तक, दूसरा (आपरावतः) हृदय से बाहर तक (अन्यः) उनमें से एक (ते) तेरे लिए (दक्षं) बल को (आवातु) लाये (अन्यः) एक (यद्) जो (रपः) रोग है उसे (परावातु) बाहर फेंक देवे।

इस वेदमन्त्र में प्राणायाम की विद्या का उपदेश दिया गया है। प्राणायाम का क्या उद्देश्य है? बाहर से भीतर और भीतर से बाहर जो प्राण आता-जाता है उससे हमें क्या लाभ पहुंचता है? वेदमन्त्र कहता है कि जो वायु बाहर से भीतर लिया जाता है वह हमारे अन्दर आकर हमें बल पहुंचाता है और जो भीतर से बाहर फेंका जाता है वह शरीर का रोग अपने साथ ले जाता है। जब हम शरीर से कोई परिश्रम का काम करते हैं और मन से विचार का कार्य कर लेते हैं तो उससे हमारे शरीर में स्थान-स्थान पर अनेक विष इकट्ठे हो जाते हैं। न सिर्फ जब हम शरीर और मन से कोई कठिन काम लेते हैं तब, बल्कि जब हम इन दोनों से कोई काम नहीं कर रहे होते, खाली चारपाई पर आराम से लेटे पड़े होते हैं, उस समय भी खाली शरीर-धारण की क्रियामात्र से भी हमारे शरीर में अनेक जहर इकट्ठे होते रहते हैं। ये सारे जहर यदि अपने स्थानों में ही पड़े रहें तो वहां अनेक प्रकार की बीमारियां पैदा हो जायें। इसलिए शरीर में ऐसा प्रबन्ध किया गया है कि हमारा खून सारे शरीर में चक्कर लगाता है और सब भागों के जहर को धोकर अपने में मिला लेता है। इस प्रकार यह खून गन्दा होकर काला हो जाता है। यह काला खून शरीर में से लौट कर हृदय में आता है। हृदय इस गन्दे खून को फेफड़ों में धकेल देता है। फेफड़ों में सांस द्वारा बाहर से हवा आती है। वह इस गन्दे रक्त से मिल कर उसके जहर को अपने अन्दर खेंच लेती है, प्रश्वास द्वारा बाहर निकल जाती है। इस प्रकार रक्त फिर से पहले जैसा लाल और शुद्ध बनकर हृदय में पहुंच जाता है। वहां से वह फिर सारे शरीर में ताकत देने के लिए धकेल दिया जाता है। साधारण तौर पर जो श्वास-प्रश्वास चलता रहता है उसमें यही कुछ होता रहता है। शरीर का रोगजनक जहर प्रश्वास द्वारा बाहर निकलता रहता है और श्वास द्वारा रक्त शुद्ध होकर शरीर को शक्ति देने वाला बनता रहता है। यदि हम प्राणायाम की विधि से सांस अन्दर लिया करें—प्राण अधिक मात्रा में और शक्ति के अनुसार देर तक फेफड़ों में रोक रक्खा करें—तो हमें वायु सेवन का लाभ और भी अधिक मात्रा में मिल सकता है।

वेद मन्त्र में श्वास-प्रश्वास की क्रिया का जो प्रयोजन है, वह बड़े सुन्दर ढंग से बता दिया है। प्राणायाम द्वारा इस लाभ को और भी अधिक प्राप्त किया जा सकता है। प्राणायाम करते जाओ और रोगों को परे भगाते जाओ।

अकेला चलो !

यदि तेरी पुकार सुनकर कोई न आये तो तू अकेला ही चल पड़।
अकेला हो चल, अकेला ही चल, अकेला ही चल।
यदि कोई बात न करे,
(अरे, ओ अभागे।)
यदि सब लोग मुंह फेर लें, सब लोग डरते रहें,
तो प्राण खोलकर
मुंह खोलकर, अपने मन की बात अकेला ही कह।
यदि सभी लौट जायें,
(अरे, ओ अभागे,।)
यदि गहन मार्ग में जाने के समय तेरी ओर कोई ताके भी नहीं,
तो रास्ते के कांटे को···
तू अपने लहू-लुहान तलवे से अकेला ही दलन कर।
यदि प्रदीप न जलता हो,
(अरे, ओ अभागे।)
यदि आंधी और बादल अंधेरी रात में घर का द्वार बन्द कर दें।
तो फिर वज्र की अग्नि से,
अपनी छाती की हड्डियों को जलाकर तू अकेला ही चल पड़।

—रविन्द्रनाथ ठाकुर

★★★

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—श्री पं० श्रीराम शर्मा वैदिक

अशान्ति की जन्म भूमि : असीम इच्छाएं

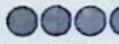

आर्यावर्त्त के अति प्राचीन इतिहास में आर्यों द्वारा किसी अन्य देश पर अकारण आक्रमण करने या धोखे से पीठ में छुरा भोंकने का प्रमाण नहीं मिलता, यहाँ तक कि देव-असुर संग्रामों में भी पहल आर्योंने नहीं की। क्योंकि उन्हें सत्य पथ पर चलने की हिदायत थी।

अर्थकामेष्वसक्तानां, धर्मज्ञानम् विधीयते।
धर्म जिज्ञासमानानां, प्रमाणं परमं श्रुतिः॥

मनु महाराज का यह निर्देश कि—'धर्म की पहचान (कर्त्तव्य-अकर्त्तव्य की वास्तविक जानकारी) तुम्हें तभी होगी, जब तुम धन और कामनाओं के दास बनने से बचे रहोगे। यह कर्माकर्म-विवेक तुम्हें श्रुति (वेद) से ही विदित होगा।' लाखों वर्षोंतक आर्यावर्त्त शान्तिनिकेतन बना रहा। इतना ही नहीं,—अन्य देशों का संरक्षक और गुरु भी रहा।

अभिमान काला बादल है

दुर्योधन धर्म-अधर्म को समझता तो था, पर उसके मस्तिष्क पर पशुबल के (अभिमान के) बादलों का घटाटोप सवार रहता था। योगेश्वर कृष्ण जैसे महा-मेधावी की बात उसके दिमाग में नहीं घुस सकी। नर-संहार न रुक सका। फिर श्रीकृष्ण महाराज के बुद्धि-वैभव के सहारे पांडवों ने भूमंडल पर शान्ति स्थापित की। भारत एकछत्र अखंड राष्ट्र बना। कौरवों का लोप हुआ।

वाम मार्ग की प्रतिक्रिया हो सम्प्रदायों की सृष्टि

महाभारत के नर-संहार से सत्योपदेष्टाओं का भी ह्रास हुआ। नर-पिशाचोंने धर्म की आड़ लेकर 'तंत्रग्रंथ' रच डाले। शराब, कबाब का दौर चला; सुरा और सुंदरी दो ही उनके आराध्य देव बने। भगवान् को धत्ता बता दी। देश अंधकार में फँस गया।

तब बुद्ध का उदय हुआ। वामपंथियों के दुराचारों से बड़ा क्षोभ हुआ। घोर तपस्या करके उन्होंने सदाचार (आर्य अष्टांग योग) अर्थात् मानव-धर्म का उपदेश देकर जनता-जनार्दन को शान्ति-पथ पर डाला। पर कई सौ वर्ष बाद इन के अनुयायी भी आलस्य और वैभव के शिकार' बन गये। पतन की पहली सीढ़ी आवश्यकता से अधिक धन का होना होता है। अतः बुद्धानुयायी भोगी विलासी होकर ईश्वर को तिलाञ्जलि दे बैठे।

महाभारत युग तक वैदिक धर्म के सिवा पृथिवीपर और कोई धर्म न था। पंथ या संप्रदाय (मजहब या रिलीजन) शब्दों से ही झलकता है कि वह मानव-धर्म (ईश्वरीय (धर्म) नहीं, अपितु एक गुट का अपना अलग रास्ता है। दल का दलदल है।

आचार्य शंकरने अब से बाईस सौ वर्ष पहले इस घोर नास्तिकवादको देख कर 'धर्म-संस्थापना' के लिये बीड़ा उठाया। सारे आर्यावर्त्त में अपनी दार्शनिक बुद्धि के बल पर शास्त्रार्थ किये और नास्तिकता का नाश तथा ब्रह्म की सत्ता स्थापित की। पर इनके अनुयायियों ने भी इनके ब्रह्मोपदेश के भिन्न-भिन्न अर्थ कर डाले, अकर्मण्यता (कर्महीनता) के गर्त्त में जा गिरे। परिणाम-स्वरूप एक वैदिक सनातन-धर्म के अनेक पन्थ बन गये।

हरित भूमि तृण संकुल, सूझि परै नहि पंथ।
ज्यों पाखंड विवादते, लुप्त भये सद्ग्रन्थ॥

विदेशी संस्कृतियां या राजनीतिक विष-कन्या

साम्प्रदायिक आंधी स्वार्थान्धता में भारतीय नरेश राह भटके हुए थे; अर्थात् राज्य-धर्म की सावधानता से अनभिज्ञ थे। तभी भारत पर महान् सिकन्दर चढ़ आया। पर उल्टी मुंह की खाकर उसे लौट जाना पड़ा। फिर जनाब मुहम्मद बिन कासिम सिंधपति दाहिरपर आ धमके। लूटपाट कर काला मुंहकर वे भी वापस हुए। यहाँ तक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भी (विभिन्न) सम्प्रदायों के उद्भव हो जाने पर भी भारतीय सांस्कृतिक एकता अक्षुण्ण रही।

पृथ्वीराज की कामुकता और मुस्लिम वेश में राजनीति

दिल्लीपति पृथ्वीराज जब महलोंमें ही कामचेष्टाओं में फँस गया, तब मुहम्मद गोरी की ताक लग गई। उसकी लार टपक रही थी, भारत। वैभव पर। इधर भारत नरेश कामासक्ति में डूबा हुआ था। हार पर हार खाकर भारत पराधीन हो गया। अब आक्रमणकारी विदेशियों के पैर जम गये। शान्त, सुबुद्ध भारत की सुध-बुध समाप्त हुई। अनेक भस्मासुरों ने इस स्वर्णभूमि शस्यश्यामला को उजाड़ डाला। मजहबी जनून के मदान्धों ने इस यज्ञीय शान्त तपोभूमिको ७०० या आठ सौ वर्षों तक रक्त-रंजित किया।

गौराङ्गों की पधरावणी

अयशोपक व्यापारी बनिया (अंग्रेज) ताक में था कि भारत का स्वर्ण-भंडार मेरे हाथ भी कुछ लगे। वह पृथ्वी पर पर फैलाने में जुटा हुआ था। इस मधुरभाषी ने चतुराई से मुस्लिम नरेशों पर धीरे-धीरे हावी होने का क्रम चलाया और उन्हें फिर गोरे सैन्यबल से भी काबू में कर स्वयं भारत भाग्य विधाता बन गया। गौरांग के पैर भारत भूमि को २०० वर्षों तक रौंदते रहे।

शान्ति स्थापक दो महान् मनस्वी :

दयानन्द और गांधी

'मेरे मन कुछ और है—कर्त्ताके कुछ और' इस सिद्धान्त के अनुसार सौराष्ट्र भूमिमें मूलशंकर नामका एक संस्कारी बालक पल रहा था। उस में बचपन से ही बुद्धि की कसौटी से काम लेने का स्वभावसिद्ध गुण था बुद्ध की तरह यह गृह त्याग कर 'भारत-दर्शन' को निकल पड़ा। 'वेद' इसे बालकपन से ही कंठस्थ थे। कुमार जीवन बिताते-बिताते ही यह अखंड ब्रह्मचारी आचार्य शंकर की तरह सब दर्शन शास्त्रों का महान् दार्शनिक तपस्वी बन गया। आध्यात्म विचार के साथ-साथ इस योगीने संपूर्ण देश में भ्रमण कर देश दशाको—इतिहास को गहराई से मनन किया। संन्यास में इसका नाम दयानन्द था। उन्नीसवीं शताब्दी में सबसे पहले इसी विज्ञान-वेत्ताने कहा कि:—

पारसमणि भारत

विदेशियों से पादाक्रान्त हो रहा है, सबसे पहले इसी ऋषि ने अपने ग्रंथों में 'स्वराज्य' और 'स्वदेशी' शब्दों का जयाघोष किया। प्रार्थनाओंमें स्वराज्य और 'चक्रवर्त्ती राजस्व' की याद दिलाई। अपने एक शिष्य श्यामजी कृष्ण वर्मा को युरोप में स्वतंत्रता के प्रचार के लिये प्रतिष्ठित किया जहाँ से वर्मा जी प्रचुर साहित्य प्रकाशित करते रहे। उसी शृंखला में ला. हरदयाल, ला. लाजपत-राय आदि त्यागी पुरुष गौरांगों की जड़ उखाड़ने में लग गये। देश जगा, अंगडाई लेकर उठा। बंगाल से अशान्त क्रान्ति की चिनगारियाँ उड़ने लगीं।

इन्हीं दिनों पूना नगर से लो. मा. बालगंगाधर तिलक का गिरिगर्भस्थ 'केसरी' दहाड़ रहा था कि 'स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है।'

उधर उसी सौराष्ट्र का एक महान् शान्त नम्र विवेचक अफ्रीका में बैरिस्टरी करते हुए विदेशियों की करतूतों का भी शांतभाव से मनन कर रहा था। दिग्-दिगन्त में जिसका यशस्वी नाम 'मोहनदास कर्मचन्द गांधी' प्रसिद्ध हुआ है।

अद्वितीय ब्रह्मास्त्रधारी

सुदर्शन चक्रधारी के पराक्रम प्रसिद्ध हैं। पर इस लंगोटी वाले बापू का-सा ब्रह्मअस्त्र किसी ने भी इतिहास में नहीं सुना होगा, संसार में इस निःशस्त्र शान्त योद्धा के युद्ध का उदाहरण कहीं नहीं मिलेगा। इस तपस्वी ने महलों में रहने वालों को भी तपस्वी जीवन सिखा दिया। इसके अनुयायी गौरांग के निष्कासन की प्रतिज्ञा कर बैठे। अन्ततः 'भारत छोड़ो' का आदेश अंग्रेजों ने सिर माथे चढ़ाया। लोकतंत्रीय भारत स्वराज्य की स्थापना १९४७ ई. में होकर रही। अहिंसा की बेमिसाल विजय हुई।

गान्धी पीढ़ी के महान् साधक

शासन प्रबंध का भार अब तपे हुए शान्त उच्च योग्य नेताओं के कंधों पर आया। ५० करोड़ की जनसंख्या वाले दो हजार मील लम्बे चौड़े देश की रक्षा और व्यवस्था हँसी खेल तो था नहीं। विदेह जनक से त्यागी बाबू राजेन्द्रप्रसाद, निर्भीक नेता पं. जवाहरलाल नेहरू, लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल, महान् दार्शनिक सर्वपल्ली राधाकृष्णन्, संस्कृतिप्रिय लाल बहादुर शास्त्री आदि महापुरुषों ने शय्या सुख त्यागकर ऐसा सुचारु शासन गढ़ा और चलाया कि जिसे देख देख कर संसार भर के राष्ट्र चकित रह गये। अभी भी ऋषिजीवन बिताने वाले तपस्वी उद्बोधक भूदेव विनोबा भावे शान्ति शिक्षा देने में तल्लीन हैं। राजर्षि पुरुषोत्तमदास टंडन ने उच्च आदर्श के प्रचार में अपना जीवन समर्पित कर दिया।

शान्ति प्रसार का विश्वव्यापी दौर

भारत की स्वतंत्रता का शान्त पवन ऐसा चला कि पूर्व पश्चिम उत्तर दक्षिण पृथ्वी के प्रायः सभी भागों के पराधीन छोटे बड़े राष्ट्र निःशस्त्र युद्ध द्वारा स्वतंत्र हो गये। भारत के शांति-पाठ की यह दूसरी विजय अद्वितीय रही।

सुकीर्त्ति से जलन

संसार व्यापी भारत का सुयश कुछ पड़ौसी राष्ट्रों को ईर्ष्याग्नि में जलाने लगा। मूर्खतावश वे शान्ति और अहिंसा को कमजोरी समझ बैठे। फलतः भारत पर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आक्रमणों का चोरी छिपे भारत में घुसने का उनका दौर चला। पर भारतने उन्हें आनन-फानन ऐसा छकाया कि वे अपनी सुधबुध तक भूल बैठे। भारतीय जनरलों की व्यूह रचना और हमारे जवान योद्धाओं का जौहर और आत्मोत्सर्ग का पुराना रिकार्ड और अधिक समुज्ज्वल चमक उठा। विश्वासघाती चीन या पाकिस्तान की तरह चुपके से पीठ पीछे छुरा भोंकना कोई वीरता नहीं। यह तो चोरों का काम है।

जलने वाले जला करें

दंडः शास्ति प्रजाः सर्वाः।
भस्मासुरों से निबटना शेष॥

देव और असुर वृत्तियों के लोग न्यूनाधिक सर्वत्र रहते हैं। स्वदेश में भस्मासुरों की बाढ़ स्वतंत्रता का गलत अर्थ समझने से आई है। इन पेटुओं पर काबू पाये बिना देश में सुख-शांति और अमन चैन नहीं रह सकता। घूसखोरों, जमाखोरों और कालाबाजारू प्रजा-पीड़कों को जब तक काल-कोठरियों में बंद नहीं किया जायेगा, तब तक इन्हें होश नहीं आयेगा कि स्वदेश हित क्या है और स्वदेश घातक क्या?

अजहबी भस्मासुर और आस्तीनों के साँप

कहते हैं कि 'अमेरिकन गेहूँ का भारतीय धन (करोड़ों रुपया) भारत में गरीबों की सहायता में उपकारी अमेरिका खर्च कर देता है।', इस कौशल की प्रतिध्वनि अशांति प्रचारक (डिस्टर्ब करने वाले) विदेशी पादरी के उस बयान से जहरीले रूप में पुष्ट होती है जिसमें उसने भारत सरकार से पैक्ट हुआ बताया है कि भारतीय गरीबों को हम ईसाई बना सकते हैं, पर भारत सरकार मौन है।

'धर्मनिरपेक्षता'

आत्महत्या सिद्ध न होगी? इन 'ईसाईस्तान' या नया 'मुस्लिमस्तान' बनने के षड्यंत्रों का भंडाफोड़ तुरन्त या तो प्रादेशिक सरकारें करें या धर्म-सभाएं। निद्रा न त्यागें तो विद्वानों और सन्यासियों को अविलंब मैदान में कूद पड़ना चाहिए।

घरेलू उपाय
रक्षा, शिक्षा, दीक्षा

विदेशी सभ्यता का चस्का केवल युवकों में ही नहीं—प्रौढ़ों में भी है। लालबहादुरशास्त्रीतो ताशकन्द मे भारतीय धौत वस्त्रों को धारण कर अपनी गौरव गरिमा की धाक जमावें, पर प्रोफेसर, लेक्चरार और टीचर पतलून और नेक्कटाई डाटें? खुले आम सिगरेट का गंदा धुआँ राहगीरों के मुंह पर उड़ावें। छात्रों को नैतिक शिक्षा बंद सी है, गुंडागीरी बढ़ रही है। कहीं कहीं छात्राएं रक्षा रहित हैं, ब्रह्मचर्य या कुमार-जीवन कैसे व्रतों से निभाया जाता है, यह शिक्षा देने वाला कोई नहीं, अविवाहित कुमारों के आश्रमों का अभाव है। ग्रेज्युएट वे भले ही बन जायें, पर उन्हें दीक्षित के शील स्वभाव और कर्त्तव्य का भान ही नहीं।

उपदेश्योपदेष्टृत्वात् तत्सिद्धिः
इतरथाऽन्धपरंपरा

हा टका, हा टका, की पुकार चहुं ओर गूंज रही है। तृष्णा तो जीर्ण नहीं पर कामुक ही जीर्ण हो रहा है। पचास करोड़ की आबादी वाले लोग विदेशी सभ्यता में पले, जो अभी तक गुलाम मनोवृत्ति के बने हुए हैं।

देश को किसी उचित अनुपात से त्यागी तपस्वी विद्वान् अपेक्षित होते हैं, ऐसे त्यागी देश में मौजूद हैं। शासन को चाहिए कि उन्हें ढूंढ़े पहचाने और उन्हें पूरी सुविधाएं देकर जिले-जिले मे नियुक्त करें। जहां उच्च विचारकों (थिंकर्स) की पूछताछ होगी, वह राष्ट्र समुन्नत और विकसित होगा। अंध परंपरा मिटेगी।

ब्रह्मचर्येण तपसा राजा राष्ट्रं विरक्षति

ब्रह्मचर्य ही जीवन है। कामुकता, असीम इच्छाएं और व्रतहीन जीवन विष है। दोनों विपरीत दिशाएं हैं।

तप — तप — तप,
नहीं तो, पत— पत— पत

अवश्यंभावी है। हे भारत के कर्णधारो! तुम मिस्र, इसराइल से लेकर सुदूरपूर्व वियतनाम तक पूर्ण शान्ति स्थापित कर सकते हो। तुम विश्वराष्ट्रसंघ को शक्ति और अधिक अधिकारों से संपन्न बना सकते हो।

हे भारतीय युवको! तुम अनुशासन और सदाचार को मानवता की आधारशिला समझो। तुम्हारे शरीर और फल फूल का रचयिता कोई परोक्ष महाज्ञानी है। उसे समझने का यत्न करो। तुम महान् बनो। भावी भारत तुम्हारे हाथों में है। अपने गौरव का अनुभव करो। पैसा हाथ का मैल है; तुम ऊँचा आदर्श पकड़ो। सृष्टि के आदि से भारत संसार भर का आदि गुरु रहा है। शान्ति का उपदेष्टा बन कर अब भी लाखों के नर-संहार को रुकवा कर शान्ति-स्थापक भारत ही रहेगा। ओं द्यौः शान्तिः पृथिवी शान्तिः अन्तरिक्षं शान्तिः॥ शमिति॥

२००) सैंकड़ा का
सत्यार्थप्रकाश बांटें
यह मूल्य केवल ३० अप्रैल तक है।
बाद में २२५) सैंकड़ा होंगे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दू धर्म उपयोगी जीवन तत्वों को महत्व देता है

डाक्टर रामचरण महेन्द्र एम० ए०, पीएच० डी०

★★★★★

संसार में जो सैंकड़ों धर्म हैं उनमें केवल सनातन हिन्दू धर्म ही ऐसा है, जो उपयोगितावाद के आधार पर खड़ा किया गया है। प्राचीन ऋषि-मुनियों ने दीर्घ अनुभव गहन अध्ययन, सूक्ष्म अवलोकन और मौलिक चिन्तन का निचोड़ हिन्दू धर्म में भर दिया है। जहाँ अन्य धर्मों में बहुत से रीतिरिवाज व्यर्थ के हैं, वहाँ हिन्दूधर्म के अन्तर्गत उन उपयोगी, स्वास्थ्यवर्द्धक, मानसिक और आध्यात्मिक उन्नति के तत्त्वों पर बल दिया गया है, जो मानव मात्र के लिये हर प्रकार से कल्याणकारी हैं।

हिन्दू मनीषियों की सदा से यह इच्छा थी कि इस व्यापक धर्म से सांसारिक, सामाजिक, स्वास्थ्य सम्बन्धी और आध्यात्मिक—हर प्रकार की उन्नति होती रहे। हिंदू हर दृष्टि से सबसे आगे रहें। जो तत्त्व भी उन्हें मानव जीवन और समाज के लिये उपयोगी जान पड़ा, उसको धर्म के अन्दर स्थान दे दिया गया जिससे हिन्दूमात्र उसे अपना लें और लाभ उठाते रहें।

स्वास्थ्य की दृष्टि से हिन्दू धर्म

हिन्दू धर्म में स्वास्थ्य का ध्यान सबसे पहले रखा गया है। यदि धार्मिक व्यक्ति का स्वास्थ्य ही ठीक न होगा, तो भला वह क्या धार्मिक बनेगा ? आरोग्य मनुष्य की प्रथम आधारभूत आवश्यकता है। स्वास्थ्य और दीर्घ जीवन महत्त्वपूर्ण विभूतियाँ हैं। सारे धर्म कर्म यज्ञ, अनुष्ठान, पूजापाठ, स्वाध्याय आदि मनुष्य के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर टिके हुए हैं। सौ वर्ष तक स्वास्थ्य बनाये रहना और जिन्दगी से पूरा-पूरा लाभ उठाना धर्म का अंग है। कम ही लोग स्वास्थ्य को चिरकाल तक स्थिर रखना और बढ़ाना जानते हैं। फलस्वरूप अधिकतर धर्म से अपरिचित व्यक्ति बीमारी और निर्बलता के शिकार बने रहते हैं। हिन्दू धर्म में आरोग्य रक्षा के निमित्त बड़ी सावधानी बरती गई है।

नित्य प्रातःकाल ब्राह्ममुहूर्त में उठना, शौचादि के लिये खुली हवा में विचरण करना, तड़के ही किसी नदी, कुएँ, या बावड़ी में स्नान करना हमारे दिन का शुभ प्रारम्भ है। अन्य धर्म प्रातःकाल जल्दी उठने को तो धर्म के अन्तर्गत स्थान देते हैं, किन्तु स्नान को इतना महत्त्व नहीं देते। हिन्दू धर्म में प्रातःकाल स्नान एक अति आवश्यक धार्मिक कृत्य है। सम्पूर्ण शरीर स्वच्छ होना चाहिए फिर साफ धुले हुए निर्मल श्वेत वस्त्र धारण किये जाएं, पूजा स्थान खूब साफ किया जाए, तब पूजा प्रारम्भ हो। शारीरिक स्वच्छता, वस्त्रों की पवित्रता, और वातावरण की पूर्ण शुद्धता को धर्म के क्षेत्रों में आवश्यक माना गया है। ये सब बातें स्वास्थ्य बनाये रखने के लिए अतीव आवश्यक हैं।

हमारे यहाँ आहार सम्बन्ध अनेक तत्व धर्म के अंग हैं। क्या खाएँ, क्या न खायें ? इस प्रश्न को लेकर वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाया गया है। समस्त वासना उद्दीपक पदार्थ जैसे मांस, मदिरा, अण्डा, प्याज, लहसन इत्यादि धर्म से बहिष्कृत हैं। अधिक मिर्च मसाले भी तामसिक भोजनों में रखे गये हैं। अन्न, दालें, शाक, तरकारियाँ फल, दूध, शहद, मेवे इत्यादि के उपयोग की सुव्यवस्थित पद्धति अपनाकर कोई भी पेट की बीमारियों से बच सकता है और तामसिक विचारों से सुरक्षित रह सकता है।

हमारे धर्म में शारीरिक और मानसिक व्यायाम पर भी जोर डाला गया है। यात्राओं में पर्वतों, नदियों नये-नये प्रदेशों के पैदल भ्रमण और प्रकृति के साहचर्य में रहने का खुला अवसर दिया गया है। भारत के चारों कोनों में ऐसे तीर्थ स्थानों, पवित्र पर्वतों और नदियों में स्नान को पुण्य माना गया है, जो स्वास्थ्यवर्द्धक है। कमजोर, बीमार, बूढ़े, बालक, युवक, स्त्रियाँ धर्म के कारण दूर-दूर तक पैदल घूमती फिरती हैं इस बात को बढ़ावा देने के लिए देवी देवताओं का निवास पर्वतों, नदियों के किनारों, वनों, गुफाओं या उद्यानों या बड़े-बड़े वृक्षों के नीचे रखा गया है। सबके लिए प्राचीन यौगिक व्यायामों की पद्धति है, जो किसी के लिये भी स्वास्थ्य संवर्धन में सहायक हो सकती है। प्राणशक्ति बढ़ाकर शरीर और मन को बलवान् बनाने के लिये अनुभूत और आश्चर्यजनक फलदायक प्राणायामों का प्रशिक्षण है।

प्राकृतिक चिकित्सा वाले आजकल उपवास, जल चिकित्सा, सूर्य चिकित्सा आदि को वैज्ञानिक और उपयोगी बताते हैं। हमारे यहाँ ये सभी धर्म के अन्तर्गत हैं। उपवास का विधान तो विशेष रूप से धर्म का अंग है। सूर्य

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती

मेरी विदेश यात्रा—३

सत्संगों एवं संस्कारों का ज्ञानप्रद और रोचक वर्णन

★★★

भारतवर्ष में जिस प्रकार आर्यसमाज के साप्ताहिक सत्संग होते हैं, ठीक उसी प्रकार मैंने सूरिनाम, गयाना और ट्रिनीडाड में भी देखे। वैसे कुछ अन्तर भी है। भारत में सत्संग प्रातःकाल होते हैं। समय २-२½ घण्टे होता है। यज्ञ के पश्चात् वेद-पाठ, सत्यार्थ-प्रकाश महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन-चरित्र की कथा आदि होती है परन्तु इन द्वीपों में सत्संग प्रायः सायंकाल होता है और केवल मात्र एक घण्टे का। यज्ञ, भजन और प्रवचन के पश्चात् कार्यक्रम समाप्त हो जाता है।

भारत की भांति वार्षिकोत्सव नहीं होते हैं। हां, विशेष अवसरों पर तीन तीन दिन के कार्यक्रम रखे जाते हैं जो केवल सायंकाल ही होते हैं। कार्यक्रम दो-ढाई घण्टे चलता है। इन कार्यक्रमों में विभिन्न व्यक्तियों को ५-५ अथवा दस मिनट बोलने के लिए दिये जाते हैं। मुख्य वक्ता का भाषण पैंतालीस मिनट से एक घन्टे तक होता है।

इन कार्यक्रमों की एक विशेषता यह है कि प्रत्येक कार्यक्रम के पश्चात् कोई पेय पदार्थ, कोका कोला आदि प्रस्तुत किया जाता है। साथ ही कुछ स्वल्प आहार पकौड़े आदि प्रस्तुत किये जाते हैं। अधिकता स्थानों पर भोजन का प्रबन्ध होता है।

भारत में जैसे ही प्रमुख वक्ता का भाषण समाप्ति पर आता है, श्रोता बिना शान्ति पाठ किये ही भागने की सोचते हैं परन्तु यहां शान्ति पाठ के पश्चात् भी कोई जाने की चेष्टा नहीं करता है। शान्ति पाठ के पश्चात् उधर भोजन का कार्यक्रम आरम्भ होता है और इधर प्रसाद आदि का वितरण शुरू होता है। फिर धीरे-धीरे लोग जाते रहते हैं।

एक बहुत-बड़ी विशेषता जो मुझे यहां के सत्संगों में दिखाई दी, वह यह कि सभी श्रोता यज्ञ के आरम्भ होने के समय से सत्संग में उपस्थित हो जाते हैं। यहां लोग केवल व्याख्यान सुनने नहीं आते। वे यज्ञ में भी पूर्ण श्रद्धा और भक्ति से भाग लेते हैं।

युवक-युवतियाँ भी भारी संख्या में भाग लेते हैं। वे केवल सत्संग में ही भाग नहीं लेते अपितु वहां भोजन आदि खिलाने में भी रुचिपूर्वक भाग लेते हैं। विशेष सत्संगों में छोटे बालक-बालिकाओं की भी पर्याप्त संख्या दिखाई देती थी परन्तु ये बहुत शान्ति-पूर्वक बैठते थे। शान्तिपूर्वक सत्संगों में बैठने वाले ये बालक धन्यवाद के पात्र हैं; साथ ही उनके माता-पिता भी, जो अपने पुत्र-पुत्रियों को सभा में शान्ति-पूर्वक बैठने की शिक्षा प्रदान करते हैं।

इन द्वीपों में मांस भक्षण की भांति शराब और तम्बाकू सेवन का भी बहुत प्रचार है। पुरुषों की भांति स्त्रियां भी सिगरेट पीती हैं। मांसाहारी और शराबी तो अपने ही स्वास्थ्य का सत्यानाश करता है परन्तु तम्बाकू का सेवन करने वाला अपने फेफड़ों को हानि पहुंचा कर नाना रोगों को तो आमन्त्रित करता ही है; इतना ही नहीं तम्बाकू सेवी सिगरेट आदि के धुएं को वायु में छोड़ कर वायु को दूषित कर अन्य लोगों को भी हानि पहुंचाता है।

यहां सत्संगों में भी मैंने देखा कि कहीं-कहीं लोग यज्ञ और व्याख्यान के मध्य में भी सिगरेट सुलगा लेते हैं। शायद यहां के पण्डित इस ओर ध्यान नहीं देते। मैंने इस ओर पर्याप्त ध्यान दिया। यज्ञ और व्याख्यान से पूर्व मैं यह प्रार्थना कर दिया करता था कि सिगरेट नहीं पीनी चाहिए, इससे कैंसर तक भी हो जाता है। इस में विष है। जब तक सत्संग चले कोई भी व्यक्ति सिगरेट न पीए; यदि किसी को बहुत ही तलब हो तो बाहर जाकर पी लें।

संस्कार यहां प्रायः नामकरण, मुण्डन, बहुत कम यज्ञोपवीत, विवाह संस्कार और अन्त्येष्टि होते हैं। कुछ वर्णन यहां प्रस्तुत कर रहा हूं।

संस्कार भी प्रायः रात्रि के समय होते हैं। बच्चा उत्पन्न होने के तीन दिन में उसका नाम रजिस्टर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कराना होता है। इस प्रकार नामकरण संस्कार तो पहले ही हो जाता है। पश्चात् ग्यारहवें दिन अथवा किसी अन्य दिन विधिवत् बालक का नामकरण संस्कार होता है। यहां मैं इतना अवश्य कहूंगा कि भारत से जो विद्वान् विदेशों में जाते हैं वे कर्मकाण्ड पर कोई ध्यान नहीं देते। न मन्त्रों का शुद्ध उच्चारण सिखाते हैं, न कर्मकाण्ड की क्रियाएं सिखाते हैं। एक स्थान पर जब एक बालक का नाम करण संस्कार कराया जा रहा था तब जहां तिथि और तिथि के देवता, नक्षत्र और नक्षत्र के देवता की आहुति देनी होती है वहां उन्होंने उन्हीं मन्त्रों से आहुतियां दिला दीं जिन्हें महर्षि दयानन्द ने उदहारण के रूप में लिखा है। इस में पण्डित का दोष नहीं। वे लोग तो धन्यवाद के पात्र हैं जो साधन न होते हुए भी वैदिक ज्योति को प्रज्वलित रखने का प्रयत्न कर रहे हैं।

सूरिनाम में यज्ञोपवीत संस्कार का प्रचार नहीं है, प्रायः पण्डितगण भी यज्ञोपवीत नहीं पहनते हैं, अथवा यज्ञ कराने के समय धारण कर लेते हैं, बाद में उतार कर खूंटी पर टांग देते हैं। गयाना और ट्रिनिडाड में यज्ञपवीत का प्रचार दिखाई दिया। इन दोनों टापुओं में सभी पण्डितों के गले में यज्ञोपवीत दिखाई दिये। ट्रिनिडाड में सभा के प्रधान श्री एल. शिव प्रसाद के पुत्रों की यज्ञोपवीत की एलबम देखी। इसी प्रकार पं० राम चरण गुसाईं के पुत्र-पुत्रियों के संस्कारों की एलबम भी देखी। अत्यन्त श्रद्धापूर्ण वातावरण दिखाई देता था।

मैंने निकीरी (सूरिनाम) में एक बालक कर्मचन्द का यज्ञोपवीत संस्कार कराया। बालक की अवस्था लगभग १४ वर्ष थी। बड़ी श्रद्धा पूर्वक उसने क्षौर—हजामत कराई। धोती पहन कर यज्ञ में बैठा, खड़ाऊं और मृग छाला का प्रबन्ध भी किया हुआ था। संस्कार में उपस्थिति भी अच्छी रही।

गयाना में भी एक युवक का यज्ञोपवीत संस्कार कराया और श्री सतीश प्रकाश की माता जी को भी यज्ञोपवीत दिया।

सूरिनाम में श्री नीरे जी और उनकी धर्मपत्नी दोनों को यज्ञोपवीत पहनाया।

सूरिनाम के विवाह संस्कारों की कई विशेषतायें हैं। पहली बात न यहां टीका और तिलक है, न ठहराव और न ही दहेज का आडम्बर। वहां आज भी पांच सौ रुपये से एक सहस्र रुपये तक में विवाह संस्कार सम्पन्न हो जाता है। दूसरी बात है विवाह के लिए न लड़के-लड़की की जन्मपत्री देखी जाती है, न कुण्डली मिलाई जाती है, न कोई मुहूर्त देखा जाता है। न केवल आर्यसमाजियों में अपितु पौराणिकों में भी यह सब-कुछ नहीं होता है। विवाह प्रायः शनि और रविवार को होते हैं और वह भी दिन में।

यज्ञ मण्डप सुन्दर बनाया जाता है। कागज की फूल-पत्तियों से उसे खूब सजाया जाता है। अलंकृत यज्ञमण्डप एक सुन्दर दृश्य उपस्थित करता है। यज्ञकुण्ड न रखकर यज्ञवेदी का निर्माण किया जाता है। रंग-विरंगे चावलों से उसे सजाया जाता है।

विवाह संस्कार में ही नहीं, जन्म दिवस के अवसरों आर्यसमाज के विशेष कार्यक्रमों, संस्कारों आदि के अवसर पर भी सजावट की ओर विशेष ध्यान दिया जाता है। वक्ता के जिए जो वेदी बनाई जाती है उसे भी अलंकृत किया जाता है।

विवाह से एक दिन पूर्व यहां भत्तवान होता है। यह कार्यक्रम विवाह का एक पूर्व अंग है और सर्वत्र, सभी परिवारों में, चाहे वे आर्य हों या पौराणिक, होता है। इस कार्यक्रम में किसी विद्वान् को बुलाकर यज्ञ कराया जाता है। तत्पश्चात् कहीं वेद की और कहीं उननिषद् की कथा होती है। कथा के पश्चात् गृह-देवियां धान की खील भूनती हैं। वहां भारत की भांति खील बाजार में नहीं मिलती इस-लिए भी वह भत्तवान अवश्य होता है। न केवल लड़की के के घर पर अपितु लड़के वालों के घर पर भी भत्तवान होता है। मैंने एक बार एक व्यक्ति से पूछा कि लड़की यहां मत्तवान होने की तुक कुछ समझ में आती है कि वहां खील भूनी जाती है और विवाह के समय उनकी आहुति दी जाएगी परन्तु लड़के के गृह पर यह भत्तवान क्यों होता है? मुझे बताया गया कि लड़के वालों के यहां भी खीलें भूनी जाती हैं और खील लड़की वालों के घर पर लाई जाती हैं। फिर दोनों को मिलाकर लाजा-होम किया जाता है।

विवाह-विधि सम्पन्न होते ही उसकी रजिस्ट्री होती है। राज्य द्वारा पण्डितों को प्राप्त रजिस्टर में पति-पत्नी दोनों के हस्ताक्षर कराये जाते हैं। इस हस्ताक्षर की विधि को देखकर जब मैंने कहा कि भारत में यह रजिस्ट्रेशन नहीं होता है तब लोगों को बड़ा आश्चर्य हुआ। कुछ ने पूछा भी कि यदि रजिस्ट्री नहीं होती है और पति-पत्नी कह दें कि विवाह ही नहीं हुआ तब क्या होता है। मैंने उत्तर दिया कि भारत में यज्ञाग्नि की साक्षी में परमात्मा को ही सबसे बड़ा न्यायाधीश माना जाता है, पुरोहित छोटे न्यायाधीश के रूप में और सभी बराती साक्षी होते है। पति-पत्नी एक दूसरे का हृदय स्पर्श करते हैं। बस यही हमारे यहां रजिस्ट्रेशन है। लाखों में शायद एक बार कोई समस्या खड़ी हो अन्यथा पति-पत्नी में कोई भी यह कहने

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

का साहस नहीं करता कि हमारा विवाह नहीं हुआ। हाँ, अब वर्तमान सभ्यता के अभिशाप के फलस्वरूप स्थिति कुछ विकृत अवश्य हुई है।

विवाह-संस्कार के पश्चात् दोनों पक्षों के माता-पिता वर और वधू को दान देते हैं। विवाह में उपस्थित सभी व्यक्तियों से भी दान की अपील की जाती है। फलतः सभी उपस्थित व्यक्ति दान देते हैं। यह सारी राशि आर्य अनाथाल के कोष में जमा करा दी जाती है।

विवाहों में ही नहीं अन्य अवसरों पर भी चाहे साधारण यज्ञ हो या कोई संस्कार केवल गृह स्वामी ही नहीं अपितु सभी व्यक्ति दान देते हैं। मुझे यह परिपाटी अच्छी लगी। भारत में भी इसका अनुकरण किया जाय तो अच्छा है।

हमने आरम्भ में ही लिखा था कि यहां के ९९% लोग मांस खाते हैं परन्तु आपको यह जानकर हर्ष होगा कि यज्ञ संस्कार और विवाह आदि के अवसर पर मांस का प्रयोग बिल्कुल नहीं होता है। यज्ञ आदि से ७ दिन पूर्व और ७ दिन पश्चात् तक मांस नहीं खाया जाता। इन अवसरों पर जो भोजन दिया जाता है वह पूर्णरूपेण निरामिष होता है।

पाठकगण सोचेंगे कि शायद स्वामी जी सूरिनाम वालों का भोजन खाकर उनकी प्रशंसा के पुल बाँध रहे हैं। परन्तु बात ऐसी नहीं। मैं तो जो तथ्य और सत्य है वह लिख रहा हूँ। मुझे एक बात वहाँ बहुत अखरी, वह यह कि विवाह संस्कार में शोर इतना होता है कि कुछ सुनाई नहीं देता। कोई विवाह-विधियों की व्याख्या करे तो अन्य की तो बात ही क्या वर-वधू तक को भी सुनाई नहीं देता कि पण्डितजी क्या कह रहे हैं।

जन्म दिन मनाने की प्रथा सूरिनाम में खूब प्रचलित है। छोटे-छोटे बच्चों का ही नहीं बड़े-बड़े व्यक्तियों-स्त्रियों और पुरुषों, पति-पत्नियों और माता-पिता सभी के जन्म दिन धूम-धाम, आनन्द और उल्लास के साथ मनाए जाते हैं। कभी-कभी तो जन्म दिन मनाने के लिए तीन-तीन दिन के कार्यक्रम भी रखे जाते हैं।

आठ-दस वर्ष पूर्व तक सूरिनाम में मुर्दों को जलाने की आज्ञा नहीं थी। चाहे आर्यसमाजी हो या पौराणिक सभी के मुर्दों को गाड़ा जाता था परन्तु श्रीमती उदयराज वर्मा की दूरदर्शिता के कारण अब राज्य की ओर से मुर्दों के जलाने की आज्ञा मिल गई है।

यह आज्ञा कैसे मिली, इसका वृतान्त भी रोचक है। श्री उदय राज सिंह वर्मा आर्यसमाज के बहुत ही उत्साही, कर्मठ एंव निष्ठावान् कार्यकर्ता थे। राज्य में ये तोलक=डुभाषिया के पद पर नियुक्त थे। इन के स्वर्गवास के अवसर पर सूरिनाम के प्रधान मंत्री पैंगल अपनी शोक समवेदना व्यक्त करने के लिए आये तो उन्होंने श्रीमती वर्मा से कहा कि मेरे योग्य कोई सेवा हो तो बताइये। देवीजी ने कहा कि मेरी इच्छा है कि पति देव की लाश को जलाया जाए। प्रधान मन्त्री ने कहा यह तो सम्भव नहीं है, मैं सरकारी खर्च पर इस लाश को गयाना भिजवा देता हूँ। वहाँ आपकी इच्छा के अनुसार अन्त्येष्टि हो जाएगी।" देवीजी ने कहा—जब पड़ौसी देश में दाह संस्कार हो सकता है तब यहां क्यों नहीं? मैं तो यह चाहती हूं कि यह सब कुछ सूरिनाम की भूमि पर ही हो।" मन्त्री महोदय ने कहा "यहाँ जलाने का नियम नहीं है।" देवीजी ने कहा कि नियम तो बनाया जा सकता है। पैंगल महोदय ने कहा कि इस में तो पन्द्रह दिन लग जाएंगे।" श्रीमती वर्मा ने कहा—"कोई बात नहीं हम पन्द्रह दिन के लिए लाश को रख लेंगे।" पैंगल महोदय वचनबद्ध हो चुके थे अतः उन्होंने आश्वासन दिया कि मैं शीघ्र ही संसद् में ऐसा नियम बनवाने का प्रयत्न करूंगा। पैंगल के आश्वासन, श्री बलकिरण संसद् सदस्य की दौड़धूप तथा पं० शिवरत्नजी के वेद से 'भस्मान्त ँ शरीरम्' प्रमाण उपस्थित करने पर अब सूरिनाम में भी दाह कर्म करने की आज्ञा मिल गई है।

आज्ञा मिल गई, परन्तु फिर भी वहाँ जलाने की अपेक्षा गाड़ते अधिक हैं। इसका एक कारण यह है कि सनातनी तो यदि जलाने का प्रचार करें तो उनका व्यापार ठप्प होता है। आप कहेंगे कि क्या जलाने और गाड़ने में भी कोई व्यापार होता है? जी हाँ, सनातन धर्म को सरकार की ओर से एक बहुत बड़ी भूमि मुर्दे गाड़ने के लिए प्राप्त है। इस भूमि में भी प्रथम, द्वितीय और तृतीय श्रेणियां बनाई हुई हैं। बिल्कुल सामने प्रथम श्रेणी में मुर्दे को गाड़ने के लिये ५०० गिलडन लेते हैं, पीछे की भूमि में यह राशि कम होती जाती है। यदि ये लोग जलाने का प्रचार करें तो इनका व्यापार समाप्त हो जाए, अतः ये लोग प्रचार नहीं करते।

आर्यसमाज ने इस ओर पर्याप्त ध्यान दिया है परन्तु अभी और अधिक देना चाहिए। मुझे तो उस दिन बहुत आश्चर्य हुआ जिस दिन आर्य प्रतिनिधि सभा के तथाकथित महामन्त्री को जलाने की बजाय गाड़ा गया।

एक ओर तो यह स्थिति है; अब आप तनिक दूसरी ओर भी देखिये। फिशरीज में काम करने वाला एक जापानी युवक मछली पकड़ने वाली नौका के ऊपरी भाग से लोह खण्ड के टूट कर गिरने से कराल काल के गाल में समा गया। इस युवक के गृह पर जापान में इस दुःखद मृत्यु की सूचना दी गई। वहां से उत्तर आया कि लाश को जापान भेज दें। इधर से व्यय बहुत अधिक होने के कारण फिशरीज कम्पनी ने अपनी असमर्थता प्रकट की।

(शेष पृष्ठ ७ पर)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

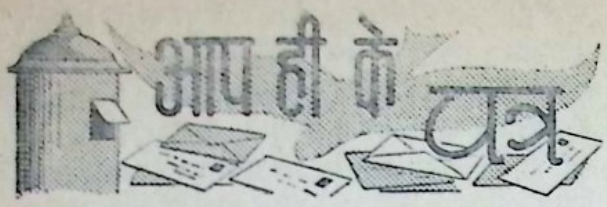

महोदया !

आपके संस्थान में 'प्रचारक सदस्य' के रूप में अपने क्षेत्र में कार्य कर रहा हूँ और आशातीत सफलता भी मिल रही है। अपने ही प्रयास से गांव में आर्य धर्म (वैदिक धर्म) प्रचार हेतु एक संस्था का भी गठन करने में सफल हुआ। वैसे मुझे क्षेत्र में प्रचार हेतु कम ही अवकाश मिलता है लेकिन मैं पत्र द्वारा संस्था के अध्यक्ष एवं मंत्री को प्रोत्साहित करता रहता हूं और आज एक मास के अन्दर ही ऐसी स्थिति आ गयी है कि हम लोग क्षेत्र के अधिकतर शादी-विवाह तथा अन्य धार्मिक कृत्य स्वयं 'वैदिक पद्धति' द्वारा सम्पन्न कराते हैं।

आपके संस्थान के सम्पर्क में आकर मैंने जो शिक्षा ग्रहण की है उसका मैं और 'आर्यसमाज फुलवारी' बहुत ही आभारी हैं, लेकिन क्षेत्र में अन्धविश्वासों एवं गुरुडम, जादू-टोना, भूत-प्रेतों में विश्वास की प्रधानता के कारण लोग वैदिक पद्धति का विरोध करते हैं। वैसे शिक्षित वर्ग वास्तविकता को समझ कर आर्यसमाज के सिद्धान्तों से बहुत ज्यादा प्रभावित हो रहा है।

—कृपाशंकर सिंह आर्य
मन्त्री, आर्यसमाज फुलवारी, राजगढ़ (मीरजापुर)

आदरणीय भारतेन्द्रनाथ जी, सादर नमस्ते।

इधर आपने जो साप्ताहिक (जन-ज्ञान) का प्रकाशन आरम्भ किया है, वह अत्यन्त ही सराहनीय कदम है। ईश्वर से यही कामना है कि आपके विचार, जनज्ञान के माध्यम से भारत के प्रत्येक नागरिक तक पहुंचें एवं जन-ज्ञान अपने निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त करता हुआ सफलता प्राप्त करे।

आपके ४ अप्रैल के अंक में "आपके ही पत्र" स्तम्भ में धनोपार्जन के लिये मैं बलवन्तसिंह जी के विचार से भी सहमत हूँ। साथ ही आपके द्वारा प्रकाशित सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के १२-सूत्रीय कार्यक्रम एवं आपके संस्थान द्वारा प्रस्तुत १०-सूत्रीय कार्यक्रम भी सराहनीय हैं, इसका मैं प्रबल समर्थन करता हूं। एवं इसके लिये मैं स्वयं को सहर्ष प्रस्तुत करने को तैयार हूं।

मैं इस वर्ष M. Com. (Final) की परीक्षा दे रहा हूँ। इस परीक्षा के पश्चात मैं दयानन्द बाल-सदन भी खोलने का तो विचार रखता हूं कि इसी माध्यम से सही, आर्यसमाज की भावी नींव डाली जा सके, मेरे सहयोग से ही कुछ काम हो। मैं अपने इस लक्ष्य प्राप्ति के पश्चात् अपने मित्रों को इससे प्रेरणा दे कर इस कार्य का प्रसार करूंगा। हमें आशा एव विश्वास है कि इस बारे में आप समुचित सहयोग एवं सुझाव देंगे।

—विजय प्रकाश आर्य, कानपुर

महोदया,

रविवार २८ मार्च १९७६ का जन-ज्ञान देख कर प्रसन्नता हुई कि अब यह साप्ताहिक हो गया है। इस अंक में सत्यार्थी जी द्वारा लिखित 'युवापीढ़ी और आर्य-समाज' लेख बहुत सुन्दर रहा। मेरे लिए आनन्द कश्यप जी का लिखा हुआ 'विवाह का मूहूर्त्त' होना चाहिये या नहीं बहुत काम का सिद्ध हुआ। अब जो कार्य मासिक होता था वही चेतना और उपदेश एक सप्ताह में मिल जाया करेगा।

—धर्मपाल शास्त्री
आचार्य, गुरुकुल महाविद्यालय, तातारपुर (मेरठ)

मान्यवर पं० भारतेन्द्रनाथ जी सादर नमस्ते।

'जन-ज्ञान' साप्ताहिक देख कर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। हमारी ओर से 'जन-ज्ञान' साप्ताहिक को हार्दिक शुभ कामनाएँ।

—रामगोपाल आर्य
तकरावद (मंदसौर)

(पृष्ठ १३ का शेष)

तब उधर से आदेश हुआ कि दाह कर्म करने के पश्चात् उसकी भस्म जापान भेज दी जाए।

अब ये जापानी कोई ऐसा पण्डित चाहते थे जो अन्त्येष्टि संस्कार कराकर उसकी व्याख्या अंग्रेजी में कर सके। सूरीनाम की राजकीय भाषा डच है, अंग्रेजी का वहां कोई विशेष प्रचार नहीं है। वहां का पण्डित वर्ग भी अंग्रेजी भाषा से अपरिचित सा ही है, अतः इस कार्य के लिए मुझे भेजा गया। अन्त्येष्टि के पश्चात् मैंने लगभग आधा घण्टा अंग्रेजी में व्याख्यान दिया। लोग बहुत प्रभावित थे। जब मैं चलने लगा तब वे मुझे दक्षिणा देने लगे। मैंने यह कहकर अस्वीकार कर दिया कि आज तक इस संस्कार की दक्षिणा कभी ली नहीं है और भविष्य में लूंगा भी नहीं।

दो दिन पश्चात् जिस नौका पर इस युवक की मृत्यु हुई थी उस पर भी यज्ञ कराया।

विदेशी लोग भारतीय संस्कृति की ओर आ रहे हैं और हम आंख मींचकर उधर दौड़ लगा रहे हैं। चेतो ! ऋषि सन्तानों ! जागो।

(क्रमशः)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

--देवीचरण

पशु-पक्षियों की भाषा

● ● ● ●

प्राचीन समय में एक राजा थे जिनका नाम जनश्रुति था। उनकी ड्योढ़ी से कोई भूखा नहीं लौटता था। उन्होंने जगह जगह पर सदाव्रत लगा रखे थे। अधिकांश जनता उनकी ही रोटी खाये, इस आशय से राजा ने अन्नक्षेत्र स्थान-स्थान पर खोले हुए थे। अतः राजा का यश चहुँ-ओर दिग्दिगन्त में फैला हुआ था। एक दिवस राजा अपनी अट्टालिका पर बैठा था कि उसने कुछ हंसों को आकाश में ठीक अपने ऊपर उड़ते देखा। उनमें से एक हंस दूसरे से यह कह रहा था कि इस राजा की कीर्ति का तेज सर्वव्यापी हो रहा है। अतः कहीं इस तेज ने छू लिया तो जल न जाये, दूर रहना ही उचित है। दूसरे हंस ने उत्तर में कहा कि यह बात इस राजा पर तो लागू नहीं होती, पर गाड़ी वाले संत रैकव पर अवश्य लागू होती है। राजा ने हंसों का यह वार्तालाप सुना और फिर उसने संत रैकव का पता लगा कर निःस्पृहता के मर्म को समझा तथा इस प्रकार उसका अहंकार चूर्ण हुआ।

प्रश्न है कि क्या राजा जनश्रुति हंसों की भाषा समझता था? इस प्रकार के अनेक कथानक पुराणादिक ग्रन्थों में आते हैं और इनका तात्पर्य आलंकारिक भाषा में मनुष्यों को कुछ न कुछ शिक्षा देना है। पर क्या मानव पशु-पक्षियों की भाषा नहीं समझ सकता? ऐसा विचारना तो यथार्थ के विपरीत ही है। मनुष्य तो सभी पशु-पक्षियों की भाषा भली प्रकार समझता है। यदि ऐसा न होता तो यह संसार का व्यवहार कैसे इतने सुन्दर रूप से चलता? अधिकतर पशु-पक्षी तो केवल एक प्रकार का शब्द ही कर सकते हैं। इसीलिए गाय का रंभाना, कुत्ते का भौंकना, घोड़े का हिनहिनाना, हाथी का चिंघाड़ना, कौवे का कांव-कांव करना, चिड़ियों का चहचहाना अथवा चूं चूं करना प्रसिद्ध है। कुछ इनेगिने एक दो पक्षी ऐसे हैं जो सिखलाने पर कुछ शब्दों को बोल सकते हैं, जैसे तोता और मैना। अतः क्योंकि ये सब पशु-पक्षी अपनी सभी बातों को—सुख, दुखः, राग, द्वेष, ज्ञान व प्रयत्न—एक ही शब्द विशेष से बोलते हैं या कभी कुछ भी नहीं बोलते हैं, तो स्पष्ट ही इनकी भाव भंगिमा को देखकर मनुष्य इनकी बात समझ सकता है और ऐसा ही प्रायः हो भी रहा है। मनुष्य बुद्धिमान् प्राणी हैं; अतः उसे पशु-पक्षियों के हाव-भाव से उनके सुख-दुःख, इच्छा अनिच्छा को समझने में कोई विशेष कठिनाई अनुभव नहीं होती। हम देखते हैं कि मानव के भी कुछेक शब्द ऐसे हैं जिन्हें वह अनेक परिस्थितियों में प्रयोग करता है, पर उनका अर्थ समयानुकूल ही लगाया जाता है। सभ्य से सभ्य भाषा में भी एक शब्द के अनेक अर्थ होते हैं; संस्कृत में तो ऐसा प्रायः है ही, पर प्रकरणानुसार उनके भिन्न-भिन्न अर्थों का अभिप्राय समझने में कोई कठिनाई नहीं होती।

'बुद्धिमान् को इशारा काफी है'—यह कहावत यहाँ कितनी उपयुक्त है। मनुष्य अपनी बुद्धि द्वारा सहज ही में उन पशु-पक्षियों की 'भाषा' अथवा इशारे, जिनके वह नित्यप्रति सम्पर्क में आता है, समझने में सक्षम है। जिस प्रकार बहरे व गूंगे आदमियों की भाषा हम समझ लेते हैं और वे हमारी, ठीक उसी प्रकार पशु-पक्षियों की भाषा भी समझना आसान है। अहिंसा, प्रेम और प्यार की भाषा को भला ऐसा कौनसा प्राणी है, जो न समझता हो? इसके विपरीत हिंसा, द्वेष और क्रोध की भाषा भी प्रत्येक प्राणी समझ लेता है।

अब पशु-पक्षियों की बात देखिए कि वे हमारी भाषा कितनी अच्छी प्रकार समझते हैं। रोज ही हम बन्दर और रीछ का तमाशा देखते हैं। कहीं-कहीं बैल वाले भी तमाशा कर रहे होते हैं तथा सड़कों की पटरियों पर छोटे से पिंजरे में एक बहुत छोटे आकार की चिड़िया और कुछ लिफाफों में पर्ची निकलवा कर भविष्य बतलाने वाले ज्योतिषी भी आपने देखे होंगे। यह सब प्रशिक्षण की कला है। सरकसों में बकरी, घोड़े, ऊँट, हाथी और शेर आदि पशुओं द्वारा जो प्रदर्शन किया जाता है, वह कितना विस्मय-कारी होता है। कुत्ते को गणित करते हुए देखकर आश्चर्य होना स्वाभाविक ही है। यह सब उनको लगातार प्रशि-क्षण के द्वारा सिखलाया जाता है। कुत्ते और घोड़े की स्वामिभक्ति तो जगत् विख्यात है। आजकल तो कुत्तों का प्रयोग चोरी आदि के अपराधों का पता लगाने में पुलिस विभाग करता है। कबूतरों द्वारा खबरें दूर-दूर भेजना बहुत पहले से होता आया है। जितने पशु वाहनादि में जोते जाते हैं, वे सभी तो मनुष्य के इशारे भली प्रकार समझते हैं, वर्ना उनसे इस प्रकार कार्य लेना संभव न हो। साधारण बोल चाल की भाषा का ज्ञान मनुष्य के बच्चे को भी दो-तीन साल में, तथा अच्छी प्रकार से किसी भी भाषा का ज्ञान अनेक वर्षों में हो पाता है। प्रायः यह कहा जाता है कि मनुष्य से सभी प्राणी डरते हैं। अनेक पशु शरीर और शक्ति में मनुष्य से कई गुना बड़े हैं, पर शायद उनको यह स्वाभाविक ही ज्ञान है कि यह दो पैरों वाला मानव कुछ ऐसा शक्तिसम्पन्न है कि इससे पार नहीं पाया जा सकता।

एक बार की बात है कि युद्ध के मैदान में एक घुड़-सवार घायल होकर अचेतन अवस्था में घोड़े से गिर पड़ा।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उनके घोड़े ने अपने मालिक की यह दशा देखकर, उसकी पेटी जो कमर में बंधी थी अपने जबड़ों में पकड़कर इस प्रकार अपने मालिक को मुँह में लटका कर घर की ओर सरपट दौड़ तथा घर पर लगाई आकर ही साँस लिया। इस तरह उस वफादार घोड़े ने अपने स्वामी की जान बचाई। किस प्रकार एक हाथी मानव भाषा को अच्छी प्रकार समझता था, यह घटना दक्षिण भारत के एक गाँव की है। हाथी और उसका महावत एक दूसरे को बहुत प्यार करते थे। एक बार महावत को कुछ ऐसा महसूस हुआ कि हाथी काबू से बाहर जा रहा है। अतः उसने एक दूसरे साथी से जो हाथी पर बैठा था कहा कि वह आगे के बजाय पीछे से उतरे। अभी वह पीछे की ओर मुड़ा भी न था कि हाथी ने फौरन अपना पिछला पैर सहारा देने के लिए मोड़ दिया। स्पष्ट ही हाथी उन दोनों के बीच हुई वार्ता को समझ गया था।

एक अन्य घटना का वर्णन आता है कि दो बादशाहों का परस्पर युद्ध हुआ। जो पराजित हुआ, वह भाग कर जंगलों में छिप गया। घूमते घामते एक दिन उसने जंगल में एक शेर देखा जो दुःख व दर्द के कारण तड़फड़ा रहा था। उसने शेर के पास जाकर देखा कि उसके अगले पंजे में एक बहुत बड़ा काँटा चुभा हुआ है, जिससे शेर का पंजा लहूलुहान हो रहा है और वह पीड़ा के कारण उस पैर को धरती पर टेकने में असमर्थ है। बिना मौत की परवाह किये, वह शेर के पास गया, उसका पंजा थाम कर अहिस्ता से काँटा निकाला और पानी से धोकर अपना कपड़ा फाड़कर उसपर भिगोकर लपेट दिया। शेर को आराम मिला। दूसरे दिन भी उसने उपकी पट्टी कर दी और दो-तीन दिन में शेर बिल्कुल ठीक होगया। उधर दूसरे दिन बादशाह के सिपाहियों ने उसको पकड़ लिया और नगरी में ले गये। विजेता बादशाह ने उसको मौत की सजा दी। यहाँ की प्रथा के अनुसार एक शेर मँगवाया गया और एक दो दिन भूखा रखने के बाद, शेर को पराजित बादशाह के ऊपर छोड़ दिया गया। अचरज की बात तो यह हुई कि शेर ज्योंही उसके पास पहुँचा, तो दुम हिला कर उसके पैरों में लौटने लगा। कारण यही था कि यह वही शेर था, जिसके घायल पैर को इस पराजित बादशाह ने ठीक किया था।

हम अपने ग्रंथों में पढ़ते हैं कि प्राचीनकाल में ऋषि मुनियों के आश्रमों में शेर और हिरण साथ-साथ घूमते थे। कण्व ऋषि के आश्रम में शकुन्तला का पुत्र भरत शेर के बच्चों के साथ ऐसे ही खेलता था, जैसे कि आज बालक कुत्ते व बिल्ली के बच्चों के साथ खेलते हैं।

जब पशु-पक्षी मानव की भाषा, भाव और इशारे तक इतनी अच्छी प्रकार समझलेते हैं, फिर भला क्या कारण है कि मनुष्य सृष्टि में सर्वोत्तम प्राणी होकर भी पशु-पक्षियों की भाषा न समझें। ●

अधिक से अधिक व्यक्तियों तक वेद का सन्देश पहुंचाएं।

दयानन्द चित्र दर्शन

अब छप कर तैयार है

●

७२ पृष्ठ : ५ रंगों में छपी

एक ऐसी पुस्तक जैसी पिछले १०० वर्ष में नहीं छपी : सर्वश्रेष्ठ कागज पर बढ़िया कपड़े की सुनहरी जिल्द और

मूल्य केवल २० रुपए

किन्तु अभी तक बढ़ा दिया गया है।
६००) की १०० २००) की २५
३५०) की ५० १००) की १०
और १५) की एक प्रति

शीघ्र से शीघ्र मंगा लें : स्टाक थोड़ा है।

●

संस्कार विधिः

छोटा साइज : सजिल्द ४)
बड़ा साइज : सजिल्द ६)

●

सत्यार्थ-प्रकाश

२२५) सैंकड़ा

ऋषि जीवनी

१००) सैंकड़ा

दयानन्द संस्थान
नई दिल्ली-११०००५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—सत्येन्द्र

विस्मृत क्रांतिकारी : भाई हृदयराम

● ● ●

मातृभूमि को ब्रिटिश राज्यसत्ता की दासता के अपावन पास से मुक्ति दिलाने हेतु जिन जयिष्णु जवांमर्दो ने अपने रक्त को स्याही, अस्थियों को लेखनी बनाकर स्वातंत्र्य समर का उज्ज्वल इतिहास लिखा था, उनमें पंजाब, बंगाल महाराष्ट्र उत्तर प्रदेश एवम् बिहार आदि के अनेकों नर रत्नों की प्रेरक है। तो सुविदित हैं, किन्तु भारत के पिछड़े रहे अंचल हिमांचल प्रदेश में जन्मे एक ऐसे ही आग्नेय जीवन व्रती की प्रेरक कहानी से सामान्य जन प्रायः अनभिज्ञ।

यह नरवीर थे भाई हृदयराम जिनका लोहा शक्तिशाली ब्रिटिश सरकार ने भी माना था। इस नर पुंगव का शशव अभावों में कटा तो उसने अपना मदमाता यौवन मातृभूमि के भाग्याकाश पर छाए गुलामी के निवारणार्थ प्रचंड अग्नि शिखा जगा गया। इसकी वृद्धावस्था भी अभावों से जूझते हुए ही कटी और २१ अगस्त १९६५ को यह नरकेहरी अस्सी वर्ष की आयु में चिर विश्रान्ति प्राप्त कर गया।

स्वयं को तिल तिलकर स्वातंत्र्य लक्ष्मी के श्रीचरणों में भस्मीभूत करने वाले इस महान् क्रान्तिकारी का जन्म २८ नवम्बर, १८८५ ई० को मण्डी नगर में श्री गज्जनसिंह के कुलदीपक के रूप में हुआ था। अभी यह आठवीं कक्षा तक ही शिक्षा प्राप्त कर पाए थे कि परिस्थितियों ने आपको पैतृक धंधे में पिता का सहयोग करने पर बाध्य कर दिया। फिर भी और अधिक शिक्षा प्राप्ति की लालसा आपके हृदय में बसी रही। उन दिनों मण्डी नगर में आठवीं कक्षा तक की शिक्षा की ही व्यवस्था थी और श्री गज्जनसिंह की आर्थिक स्थिति ऐसी नहीं थी कि वे अपने पुत्र की इच्छा को पूर्ण करते। बालक में उच्च शिक्षा के प्रति लगी इस लगन ने उसे एक नया मार्ग सुझाया और उन्होंने घर पर ही पुस्तकें तथा पत्र-पत्रिकाएं मंगाने का सिलसिला आरम्भ कर दिया। श्री गज्जनसिंह अपने कार्य के सिलसिले में प्रायः लाहौर एवं अमृतसर जाते रहते थे। वे वहाँ से आते तो अपने पुत्र के लिए पुस्तकें आदि ले आते। बाल्यकाल में ही भाई हृदयराम ने छत्रपति शिवाजी. प्रणवीर प्रताप, वीरवर छत्रसाल तथा १८५७ के स्वातंत्र्य सेनानियों के जीवन चरित्र पढ़े और उनके मन में देशभक्ति की भावनाओं का बीजारोपण हो गया।

भाई हृदयराम ने अभी जीवन के १८ वसन्त भी नदेखे थे कि उनका मन घर के कामकाज से विरक्त होने लगा। उनके मन में क्रान्तिकारी भावनाएं उद्वेलित हो उठीं। उन्हीं दिनों उनका संपर्क एक संन्यासी से हो गया और उसने आपके हृदय में भगवद्भक्ति की भावनाएं जगा दीं। परिणामतः आपने घरबार और परिवार का परित्याग कर शान्ति की खोज में हरिद्वार की राह ली। आपकी आध्यात्मिक लगन ने आपको ऋषिकेश के बनखण्डों में समाधि लगाकर प्राणायाम की साधना हेतु भी प्रेरित किया। इधर परिवार वाले आपकी खोज में व्यस्त रहने लगे। अंततः उन्हें खोज निकाला गया और वापस मंडी आने पर मना लिया गया। मंडी आने पर वीस वर्ष की अवस्था में ही उन्हें वैवाहिक जीवन में जकड़ दिया गया। कुछ दिन तो आपने घर को ही संसार माना किन्तु तभी उनके हाथ में गदर पार्टी के अखबार आने लगे और वे अपने हृदय में सुप्त राष्ट्र भक्ति की भावनाओं को जगाने लगे।

इन्हीं दिनों आपका संपर्क सानफ्रान्सिस्को से लौटे युवक हरिदेव के साथ हुआ। उस युवक ने उन्हें लाला हरदयाल द्वारा स्थापित गदर पार्टी की गतिविधियों से अवगत कराया। अमृतसर में संत गुलाबसिंह की धर्मशाला में बम बनाने का दायित्व उन्हीं को सौंपा गया।

दिसम्बर १९१४! महान् क्रान्तिकारी पिंगले भी अमृतसर आकर गदर पार्टी के सक्रिय सदस्य बन गए थे। धनाभाव के कारण सरकारी कोषागारों को लूटने और हथियारों की खरीद पर विचार किया गया। ३१ दिसम्बर १९१४ को अमृतसर की ही एक धर्मशाला में क्रान्तिकारियों की एक गुप्त बैठक हुई। इसमे सर्वश्री करतार सिंह, परमानन्द, हरनामसिंह, पिंगले, डा० मथुरासिंह व भाई हृदयराम के अतिरिक्त अमरसिंह व मूलासिंह भी शामिल हुए। इनमें से अन्तिम दोनों ने सरकारी गवाह बनकर क्रान्ति की इस योजना का रहस्योद्घाटन किया इससे पूर्व भाई हृदयराम द्वारा बनाए गए एक बम का परीक्षण भी एक दीवार पर किया गया था।

बम बनाने का यह जोखिम भरा कार्य भाई हृदयराम ही के निर्देशन में हो रहा था। संत गुलाबसिंह की धर्मशाला में बम बनाने का कार्य आरम्भ हो गया।

बमों के निर्माण हेतु जिन रासायनिक पदार्थों की आवश्यकता थी, उन्हें लेने के लिए डा० मथुरा सिंह ने भाई हृदयराम के साथ लाहौर में रामरखा केमिस्ट एवं मैडिकल कालेज के एक छात्र श्री धनराज से यह सामग्री प्राप्त की। इस कार्य में जोखिम मानकर डा० मथुरा सिंह ने जेहलम में एक झूठी फर्मबड़ी की, जिसके नाम

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पर ये रसायन उपलब्ध किए जाने लगे। इस प्रकार बमों के निर्माण का क्रम गतिमान् हो उठा और अमृतसर तो एक प्रकार से बमों का डिपो ही बन गया। भाई हृदयराम द्वारा बनाये गए इन बमों का उपयोग मूलासिंह व क्रान्तिकारी करतार सिंह सराबा ने चाबा, मंसूरन आदि में किये गये एक्शनों में किया। बाद में तो इनके द्वारा निर्मित बम लाहौर भी सुरक्षित रूप से पहुँच गए जहाँ एक निश्चित तिथि पर इनका उपयोग किया जाना था। मूलासिंह एवम् अमरसिंह आदि ने जो बयान न्यायाधीशों के समक्ष दिए थे, उनसे यह स्पष्ट है कि भाई हृदयराम का बमों के निर्माण में सक्रिय सहयोग रहा था। बम निर्माण की कला में भाई हृदयराम ने इतनी दक्षता प्राप्त करली थी कि डा० मथुरासिंह ने लुधियाना की झबवाल बम फैक्ट्री में सहायक के रूप में उन्हें भेजा था।

जब १२ जनवरी, १९१५ को महान् क्रान्तिकारी श्री रासबिहारी बोस ने अमृतसर पहुँचकर गदर पार्टी की बागडोर अपने हाथों में संभाली तो भाई हृदयराम उनके भी विश्वासपात्र बन गये। १९ फरवरी को बंदी बनाये जाने तक भाई हृदयराम को स्थान-स्थान पर हथियार एवं बम प्राप्त करने के लिये भेजा गया। उन्होंने छावनियों में भी क्रान्ति की चिनगारी सुलगाई थी। बंदी बनाये जाने से पूर्व भाई हृदयराम को डोगरा सैनिकों को क्रान्ति कार्य हेतु तैयार करने के लिए जालंधर भेजा था। आप बनारस भी पहली फरवरी, १९१५ को क्रान्तिकारी गतिविधियों के सिलसिले में गये थे। वहाँ से वे कुछ पिस्तौलें आदि भी लाए थे।

चाबा में २-३ फरवरी, १९१५ को डाली गई डकैती क्रान्तिकारियों के लिए नितांत घातक सिद्ध हुई, क्योंकि यहाँ किये गये 'एक्शन' में दो क्रान्तिकारी घायल हो गये थे और ने उन्हें बंदी बनाकर पुलिस सक्रिय हो उठी थी।

१२ फरवरी को क्रान्तिकारियों की जो बैठक श्रीरासबिहारी बोस ने बुलाई थी उसमें भी भाई हृदयराम सम्मिलित हुए थे और इसमें २१ फरवरी, १९१५ की तिथि क्रान्ति के लिए निर्धारित कर सारी सेना में एक एक साथ विस्फोट की योजना बनाई गई। किन्तु १३ फरवरी को ही मूलासिंह लाहौर से अमृतसर लौटने पर बंदी बना लिया गया। क्रान्तिकारियों में पुलिस द्वारा भेजा गया एक भेदिया कृपालसिंह ही सारी योजना की असफलताओं का कारण बना। किन्तु क्रान्तिकारियों ने भी कृपालसिंह को संदिग्ध व्यक्ति समझकर क्रान्ति की तिथि २१ फरवरी के स्थान पर २९ फरवरी कर दी। किन्तु कृपालसिंह को इस नवीन तिथि का भी पता लग गया और उसने पुलिस को इस विषय में भी सूचना दे दी। उसी के द्वारा दिये गये सुराग पर कई क्रान्तिकारी बन्दी बना लिए गए। जो सात क्रान्तिकारी गिरफ्तार हुए उनमें भाई हृदयराम बमों समेत पकड़े गये थे।

२६ अप्रैल १९१५ को लाहौर सेन्ट्रल जेल में क्रान्तिकारियों के विरुद्ध अभियोग की कार्रवाई आरम्भ हुई। ६२ व्यक्तियों पर भारतीय दंड विधान की विभिन्न धाराओं के अंतर्गत अभियोग चलाया गया। इनमें भाई हृदयराम अभियुक्त क्रमांक २६ थे। ३० जुलाई को इस मुकद्दमे में बहस समाप्त हुई और भाई हृदयराम को मृत्यु दंड सुना दिया गया और २१ वर्ष के इस युवक ने इस कठोर दंड को सुनकर भी अपने मुख पर विषाद न आने दिया।

जब उनके कुछ मित्र लाहौर सेन्ट्रल जेल में उनसे मिलने गये तो वे उनकों बेड़ियों में जकड़े हुए देखकर रो पड़े। भाई हृदयराम ने इन वाक्यों में वैदिक सिद्धान्तों के प्रति अपनी अनन्य निष्ठा व्यक्त की कि 'आत्मा अजर-अमर है। शरीर मरता है, तो आज मरे अथवा कल। अच्छा है फाँसी पाकर आत्मा की मुक्ति हो जिससे कि पुनर्जन्म ग्रहण कर क्रान्ति के अधूरे कार्य को पूर्ण कर भारत माता को बंधन मुक्त करा सकूं।'

भाई जी की पत्नी श्रीमती सरला देवी द्वारा तत् कालीन वाइसराय लार्ड हार्डिंग से अपील किये जाने पर उनका मृत्युदंड आजीवन कारावास में बदल दिया गया और उन्हें अंडमान के कारावास में भेज दिया गया। वहाँ आप स्वातंत्र्यवीर सावरकर के संपर्क में आकर प्रखर हिन्दुत्ववादी बन गए। यहाँ ६ वर्ष तक क्रूर यातनाएँ भोगने के बाद आपने २ वर्ष तक मद्रास में तथा फिर ६ वर्ष तक पूना के कारागार में यातनाएँ झेलीं और १९२९ में मुक्त होकर मंडी लौटे। यहाँ आने पर आप अपनी विश्रृंखलित पारिवारिक व्यवस्था को सुधारने में लगे किन्तु पुलिस की कड़ी नजर आप पर बनी रही।

भाई हृदयराम ने भारत की स्वतंत्रता में अपनी चिर साध पूर्ण की किन्तु आपका स्वास्थ्य दिन प्रतिदिन क्षीण होता गया। फिर भी आप हिन्दू महासभा के आंदोलन में यथाशक्ति सहयोग देते रहे। १९५७ में भारतीय स्वातंत्र्य समर (१८५७ ई०) की शताब्दी के अवसर पर दिल्ली भी पधारे और वीर सावरकर तथा श्री अशुतोष लाहिडी आदि क्रान्तिकारी नेताओं के साथ राजधानी की जनता ने आपका भी सम्मान किया।

जीवन की अंतिम घड़ी तक आप सक्रिय थे। २१ अगस्त १९६५ को रांजोली (हिमाचल प्रदेश) में दिलकी बीमारी के दौरे से यह महान् क्रान्तिकारी संसार से चिर विदाई ले गया। रात भर आकाश रोता रहा, धरती का दामन पसीजता रहा और कुहरे के रूप में प्रकृति भी मातमी जान पड़ती रही।

वेदभाष्य का वितरण

अब केवल सूर्यनगर कार्यालय से ही हो रहा है। सारे रजिस्टर रिकार्ड वहीं है।

कृपया वहीं पत्र लिखें या सम्पर्क करें—

प्रबन्धक—वेद भाष्य कार्यालय, ३३७-ए सूर्यनगर
P. O. चिकम्बरपुर दिल्ली-३२
फोन—२०१५८४

यह स्थान विवेक बिहार के निकट है —दिल्ली-गाजियाबाद चुंगी बार्डर से दक्षिण की ओर—

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—प्रो० रत्नसिंह

सत्यार्थप्रकाश में क्या लिखा है—२

शिक्षा ग्रहण करते समय

विद्यार्थी क्या करें ?

जब तीन उत्तम शिक्षक अर्थात् एक माता दूसरा पिता और तीसरा आचार्य होवे तभी मनुष्य ज्ञानवान् होता है।

—वह कुल धन्य ! वह सन्तान बड़ा भाग्यवान् ! जिसके माता और पिता धार्मिक विद्वान् हों।

—जितना माता से सन्तानों को उपदेश और उपकार पहुँचता है उतना किसी से नहीं।

—जैसे माता सन्तानों पर प्रेम और उनका हित करना चाहती है उतना अन्य कोई नहीं करता, धन्य वह माता है कि जो गर्भाधान से लेकर जब तक पूरी विद्या न हो तब तक सुशीलता का उपदेश करे।

—बालकों को माता सदा उत्तम शिक्षा करे, जिससे सन्तान सभ्य हों और किसी अंग से कुचेष्टा न करने पावें। सदा सत्यभाषण, शौर्य, धैर्य प्रसन्नवदन आदि गुणों की प्राप्ति जिस प्रकार हो करावें।

—जब पाँच-पाँच वर्ष के लड़का-लड़की हों तब देवनागरी अक्षरों का अभ्यास करावें, अन्य देशीय भाषाओं के अक्षरों का भी।

—जब कोई प्राणी मरता है तब उसका जीव पाप, पुण्य के वश होकर परमेश्वर की व्यवस्था से सुख-दुःख के फल भोगने के अर्थ जन्मान्तर धारण करता है।

—इन सब मिथ्या व्यवहारों को छोड़कर धार्मिक, सब देश के उपकारकर्त्ता, निष्कपटता से सबको विद्या पढ़ाने वाले, उत्तम विद्वान् लोगों का प्रत्युपकार करना, जैसा वे जगत् का उपकार करते हैं, इस काम को कभी न छोड़ना चाहिये।

—जिसके शरीर में सुरक्षित वीर्य रहता है तब उसको आरोग्य, बुद्धि, बल, पराक्रम बढ़ के बहुत सुख की प्राप्ति होती है। जिसके शरीर में वीर्य नहीं होता वह नपुंसक, महाकुलक्षणी और जिसको प्रमेह रोग होता है वह दुर्बल, निस्तेज, निर्बुद्धि, उत्साह, साहस, धैर्य, बल, पराक्रमादि गुणों से रहित होकर नष्ट हो जाता है।

—जो तुम लोग सुशिक्षा और विद्या के ग्रहण, वीर्य की रक्षा करने में इस समय चूकोगे तो पुनः इस जन्म में तुमको यह अमूल्य समय प्राप्त नहीं हो सकेगा।

—उन्हीं के सन्तान विद्वान्, सभ्य और सुशिक्षित होते हैं, जो पढ़ाने में सन्तानों का लाड़न कभी नहीं करते, किन्तु ताड़ना भी करते रहते हैं।

—जो माता, पिता और आचार्य्य सन्तान और शिष्यों का ताड़न करते हैं वे जानो अपने सन्तान और शिष्यों को अपने हाथ से अमृत पिला रहे हैं और जो सन्तानों वा शिष्यों का, लाड़न करते हैं वे अपने सन्तानों और शिष्यों को विष पिला के नष्ट-भ्रष्ट कर देते हैं। क्योंकि लाड़न से सन्तान और शिष्य दोष युक्त तथा ताड़ना से गुण युक्त होते हैं। सन्तान और शिष्य लोग भी ताड़ना से प्रसन्न और लाड़न से अप्रसन्न सदा रहा करें। माता. पिता तथा अध्यापक लोग ईर्ष्या, द्वेष से ताड़न न करें, किन्तु ऊपर से भय प्रदान और भीतर से कृपा दृष्टि रक्खें।

—जिस पुरुष ने जिसके सामने एक बार चोरी, जारी, मिथ्याभाषणादि कर्म किया, उसकी प्रतिष्ठा उसके सामने मृत्यु पर्य्यन्त नहीं होती।

—जैसी हानि प्रतिज्ञा मिथ्या करने वाले की होती है वैसी अन्य किसी की नहीं।

—जिसके साथ जैसी प्रतिज्ञा करनी, उसके साथ वैसी ही पूरी करनी चाहिये।

—इसलिए सदा सत्य भाषण और सत्य प्रतिज्ञायुक्त सबको होना चाहिये।

—किसी को अभिमान न करना चाहिये।

—छल, कपट वा कृतघ्नता से अपना ही हृदय दुःखित होता है तो दूसरे की क्या कथा कहनी चाहिये।

—'छल' और 'कपट' उसको कहते हैं जो भीतर और बाहर और, दूसरे को मोह में डाल और दूसरे की हानि पर ध्यान न देकर स्वप्रयोजन सिद्ध करना।

—'कृतघ्नता' उसको कहते हैं कि किसी के किये हुए उपकार को न मानना।

—क्रोधादि दोष और कटुवचन को छोड़ शान्त और मधुर वचन ही बोले और बहुत बकवाद न करे।

—जितना बोलना चाहिये उससे न्यून वा अधिक न बोले।

—बड़ों को मान्य दे, उनके सामने उठ कर जाके उच्चासन पर बैठावे, प्रथम "नमस्ते" करे। उनके सामने उत्तमासन पर न बैठे।

—सभा में वैसे स्थान में बैठे जैसी अपनी योग्यता हो और दूसरा कोई न उठावे।

—विरोध किसी से न करें।

—सम्पन्न होकर गुणों का ग्रहण और दोषों का त्याग रक्खें।

—सज्जनों का संग और दुष्टों का त्याग, अपने माता,

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पिता और आचार्य की तन, मन और धनादि उत्तम-उत्तम पदार्थों से प्रीतिपूर्वक सेवा करें।

—माता-पिता आचार्य्य अपने सन्तान और शिष्यों को सदा सत्य उपदेश करें और यह भी कहें कि जो-जो हमारे धर्मयुक्त कर्म हैं उन-उनका ग्रहण करो और जो-जो दुष्ट कर्म हों उनका त्याग कर दिया करो।

—जो-जो सत्य जानें उन-उन का प्रकाश और प्रचार करें।

—किसी पाखण्डी, दुष्टाचारी मनुष्य पर विश्वास न करें और जिस-जिस उत्तम कर्म के लिये माता, पिता और आचार्य आज्ञा देवें उस-उसका यथेष्ट पालन कर, जैसे माता-पिता ने धर्म, विद्या, अच्छे आचरण के श्लोक "निघण्टु" "निरुक्त" "अष्टाध्यायी" अथवा अन्य सूत्र वा वेदमन्त्र कण्ठस्थ कराये हों उन-उन का पुनः अर्थ विद्यार्थियों को विदित करावें।

—जिसको क्षुधा हो उससे कुछ न्यून भोजन करें।

—मद्य, मांसादि के सेवन से अलग रहें।

—अज्ञात गम्भीर जल में प्रवेश न करें।

—नीचे दृष्टि कर ऊंचे-नीचे स्थान को देखके चले, वस्त्र से छान के जल पीये, सत्य से पवित्र करके वचन बोले, मन से विचार के आचरण करें।

—वे माता और पिता अपने सन्तानों के पूर्ण वैरी हैं जिन्होंने उनको विद्या की प्राप्ति न कराई, वे विद्वानों की सभा में वैसे तिरस्कृत और कुशोभित होते हैं जैसे हंसों के बीच में बगुला।

—यही माता, पिता का कर्त्तव्य कर्म, परमधर्म और कीर्ति का काम है जो अपने सन्तानों को तन, मन, धन, विद्या, धर्म, सभ्यता और उत्तम शिक्षायुक्त करना।

तनिक आप भी हंसिए ?

२. एक साहब नदी में कूदे परन्तु उन्हें तैरना न आता था, सो डुबकियां खाने लगे। दूसरे सज्जन ने यह देखकर उन्हें बचा लिया। पहले साहब ने इनाम देने के लिए दस का नोट बचाने वाले को दिया और पांच रुपए वापस मांगने लगे, दूसरे सज्जन ने कहा—आप एक बार और कूद जाइए मैं आपको बचा लूंगा, अपना हिसाब बराबर हो जाएगा ?

° ° °

३. प्रोफेसर—आज किसी उचक्के ने मेरा सुनहरा फाउन्टेनपैन जेब से निकाल लिया।

पत्नी—जब उसने आपकी जेब में हाथ डाला था तो क्या आपको महसूस नहीं हुआ ?

प्रोफेसर : हुआ तो था, किन्तु मैंने समझा कि यह मेरा अपना ही हाथ है।

° ° °

शिक्षक—धनराज बताओ बादशाह से बड़ा कौन होता है ?

धनराज : इक्का गुरु जी।

प्रेरक प्रसंग

वीर माता के उद्‌गार

१८ दिसम्बर १९२७ की संध्या (फांसी से एक दिन पूर्व) की बात है। बिस्मिल के माता-पिता भाई आदि उनसे मिलने गए। माता को देखकर उनकी आंखों में आंसू आ गए। मां ने हृदय पर पत्थर रखते हुए बड़े ही वीरता पूर्ण ये शब्द कहे—"इतने दिन तो देश के लिए आंसू बहाते रहे, अब अन्तिम समय हमारे लिए रोने बैठे हो। मैं तो समझती थी तुमने अपने पर विजय पाई है, किन्तु यहां तो तुम्हारी कुछ और ही दशा है। इस कायरता से क्या होगा ? तुम्हें वीर की भांति हंसते हुए प्राण देते देख कर मैं अपने आपको अन्य समझूंगी। मुझे गर्व है कि इस गए बीते जमाने में भी मेरा बेटा देश की वेदी पर प्राण न्यौछावर कर गया।" माता के ये शब्द सुनकर बिस्मिल ने आंसू पौंछते हुए कहा कि "मां ! मुझे मरने का शोक नहीं है। जो आज पैदा होगा, वह एक न एक दिन मरेगा। जिस प्रकार घी का अग्नि के निकट पिघलन स्वाभाविक है, उसी प्रकार मेरी दशा हुई। आप विश्वास माँ ये, आपका पुत्र अत्यन्त वीरता पूर्वक बलि वेदी पर चढ़ेगा।

× × ×

मिट्टी, पत्थर, नदी, जंगलों और पहाड़ों में देश नहीं बनते। धन-दौलत कमा लेने या लिख पढ़ लेने से भी देश नहीं बनते। हजारों लाखों के पैदा होने या मर जाने से भी देश नहीं बनते। देश बनते हैं वीरों के शौर्य से वीरांगनाओं के सतीत्व से और शहीदों के रक्त से।

इस भारत देश के निर्माण में हमारे पूर्वजों ने भी इसी प्रकार अपने खून की खाद दी है। माताओं-बहिनों ने सिन्दूर चढ़ाये है। अस्त्र-शस्त्रों के लिए ऋषियों मुनियों ने अपनी हड्डियां अर्पित की हैं। आइये, आजादी के इस यज्ञ में हम भी अपनी आहुति देकर पूर्वजों की परम्परा जारी रखें।

—सुभाषचन्द्र बोस

१९७६-७७

सत्यार्थ-प्रकाश शताब्दी वर्ष है।

क्या आप को सत्यार्थ प्रकाश पर श्रद्धा है ?—यदि हाँ

तो १०० सत्यार्थ प्रकाश बांट कर कर्तव्य का पालन करें।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आर्यसमाज से प्यार है क्या ?

★ ★ ★

विचित्र स्थिति है आज संसार की, ऐसा प्रतीत होता है कि सभी परिभाषाएं आज बदल गयी हैं। जो कहा जाता है आचरण उसके सर्वथा विपरीत होता है। युद्ध के विरोध में घोषणाएं करने वाला राष्ट्र युद्ध की तैयारी में व्यस्त रहता है। शान्ति के गीत गाने वाला अशांति का सृजन करता है। निर्माण की योजनाएं विध्वंस की नींव पर खड़ी की जाती हैं। जाति भेद के विरोधी जाति के पक्षपात में अग्रणी रहते हैं। मूर्ति पूजा को महापाप बताने वाला संप्रदाय स्वयं नाना जड़ पदार्थों की पूजा में व्यस्त रहता है।

ऐसी धरती पर आज हम और आप भी रह रहे हैं। हमारी अपनी भी कुछ मान्यताएं, आदर्श और लक्ष्य हैं। हम प्रतिज्ञाबद्ध हैं, इस संसार को बदलने के लिए। किन्तु कभी-कभी यह भय लगने लगता है कि कहीं हम पर भी तो युग की छाया कोई प्रभाव नहीं डाल रही।

यह प्रभाव जिसने भी ग्रहण किया वह समाप्त हुआ। उसके आदर्श बदले और इतिहास में वह भले ही जीवित रहा हो, लेकिन रहा अपने आदर्श और लक्ष्य मिटाकर। अतः हम इन पंक्तियों द्वारा सभी को इस भीषण संकट से सावधान करना चाहते हैं।

आप सभी अपना अन्तर टटोल कर देखें कि कहीं आप वर्तमान की लहर में तो नहीं बह रहे ? कहीं आप की करनी कथनी के विपरीत तो नहीं ?

इस प्रश्न का उत्तर ही हमारा भविष्य निर्धारित करेगा। हम कभी सोचते हैं कि जो लोग प्रति सप्ताह दयानन्द के पवित्र वेद मंदिर में सत्संग में बैठ "संगच्छध्वं, संवदध्वं" सूत्र का पाठकर एकता का प्रण करते हैं वे शान्ति पाठ होते ही फिर विरोधी कैसे हो जाते हैं ? इस प्रश्न का उत्तर आर्य-आदर्श की कसौटी पर हमें नहीं मिल पाया—आप में से किसी के पास हो तो हमें बताएं।

कितनी लज्जा की बात है कि जो संसार में क्रान्ति करने की घोषणा करे वह आपस में लड़े, विवाद करे और विचित्रता यह है कि झगड़ा न सिद्धान्त का, न कार्य का, झगड़ा पदों का स्वार्थ का, अधिकार का।

हम कहना चाहते हैं कि आर्य जनों को दो में से एक को छोड़ना होगा, वे दयानन्द को छोड़ें या फूट को। फूट का विष हृदय में रखते हुए दयानन्द जैसे महान् पवित्र ऋषि का नाम लेना, अपने को उसका उत्तराधिकारी बताना, अपराध है, पाप है।

कौन नहीं जानता कि फूट ने भारत की अधोगति की। देश का सर्वनाश किया और अब यही फूट पिशाचिनी आर्य-समाज के लक्ष्य के सम्मुख बाधा बन खड़ी हो गयी है।

घर की फूट ने सोने की लंका राख कर दी, यह तो सभी जानते ही हैं। आज भी सभी रामलीला मना रहे हैं। हमारा आग्रह है कि देखो अभी कुछ नहीं बिगड़ा, अभी समय है कि हम सँभलें, अपने लक्ष्य को, उत्तरदायित्व को, पहचानें और अधिकार के स्थान पर कर्तव्य का बोझ उठाएं।

आर्य समाज से प्यार है तो फूट के बीज जला दो !!

—भारतेन्द्र नाथ

प्रभु के प्रति !

प्यारे, एक प्रश्न उठ आया—
तूने मुझे बनाया है या मैंने तुझे बनाया ?
यदि मैं ही कर्त्ता हूँ तेरा,
तो कर्तृत्व मृषा क्या मेरा ?
मिथ्या हुआ स्वयं तव तो मैं,
दीखा अब तो और अन्धेरा !
अच्छा तर्क उठाया !
प्यारे, एक प्रश्न उठ आया ?
यदि है तू ही कर्त्ता धर्त्ता
और अन्त में सब का हर्ता
तो फिर क्यों प्रामाणिक मति से,
बता मुझे मेरे भव भर्ता,
मैंने तुझे न पाया ?
प्यारे, एक प्रश्न उठ आया ?
यदि असिद्ध तू मेरी मति से,
तो फिर मैं पाऊं किस गति से,
श्रद्धा से नत-मस्तक होकर
यत्न करूं क्या मन की रति से
हां, अब तू मुसकाया !
प्यारे एक प्रश्न उठ आया।

—मैथिलीशरण 'गुप्त'

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—डा० गणेशशंकर

जीवन के वैदिक आदर्श

★★★

व्यक्तिगत अथवा राष्ट्रीय जीवन पर भौगोलिक परिस्थितियों का प्रभाव पड़ता है, परन्तु उतना नहीं जितना सामान्यतः समझा जाता है। जीवन और वृत्त का निर्माण प्रधान रूप से जातीय आदर्शों एवं धार्मिक विश्वासों तथा विचारों के द्वारा होता है। किसी भी देश और जाति का इतिहास इसका साक्षी हो सकता है। जाति और भौगोलिक स्थिति एक ही होती है, परन्तु राष्ट्रों का उत्थान और पतन होता हुआ दिखाई देता है। स्वतः भारत के अतीत को देखिए तो एक काल में यह अत्यन्त समृद्ध और सुखी व शूरवीरों से भरा था और दूसरे में निर्बल, निःसहाय। अत्यन्त प्राचीन काल में आर्य-वीर और उनका कला कौशल जगद्विख्यात था, परन्तु इधर ग्यारहवीं शती से लेकर अभी हाल तक विदेशी दासता में फंसा था। विचारें तो उत्थान के पीछे ठीक और उदात्त आदर्श मिलेंगे और पतन के पीछे अनुदात्त।

यदि वैदिक काल के जीवन और आदर्शों पर विचार किया जाय तो विदित होगा कि उस समय की समृद्धि का कारण वेदों के ओज-तेजपूर्ण उपदेश व उदात्त वैदिक आदर्श थे, जिनकी झलक वेदों के मंत्रों में स्पष्ट रूप से मिलती है और जिनकी आज अधिकाधिक आवश्यकता है। यह परिताप का विषय है कि वैदिक साहित्य और उस साहित्य का, जैसे कालिदास की प्रधान रचनाओं का प्रभूत अध्ययन-अध्यापन प्रायः नहीं हो रहा है, यद्यपि हम स्वतंत्र हैं। ऐहिकता को लेकर भ्रम और अन्धकार का, प्रसार हो रहा है। इसका उद्देश्य यह है कि सभी मतों और संस्कृतियों का आदर किया जाय, सभी को उन्नत रखा जाय। राष्ट्र को सांस्कृतिक खुराक भी मिलनी चाहिए, केवल अन्न जल की योजना से ही राष्ट्र जीवन पूर्ण न होगा।

यहां हम कतिपय वैदिक मंत्रों से यह दर्शाने का प्रयत्न करेंगे कि जीवन क्या है, उसका स्वरूप क्या है, जीवन का सच्चा आदर्श क्या है और वैदिक काल का घरेलू एवं सामाजिक जीवन कैसा था? उन आदर्शों में, अन्य विषयों के साथ, सच्ची ऐहिकता अथवा धार्मिक निरपेक्षता की भी झलक मिलेगी, जो हमारा सही मार्ग-दर्शन भी कर सकती है।

वैदिक विचारधारा की सबसे पहली और सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि उसमें जीवन को सहर्ष अपनाया जाता है, इस लोक को सुन्दर एवं सुखास्य कहा जाता है, जहां शरीर को सुखी करने जैसे साधन उपलब्ध हैं। वैसे ही आत्मा की तुष्टि के लिए ईश का सान्निध्य भी वर्तमान है—ईशावास्यमिदं सर्वम्।

आरोहतायुर्जरसं वृणाना
अनुपूर्वं यतमाना यतिष्ठ।
इह त्वष्टा सुजनिमा सजोषा
दीर्घमायुः करति जीवसे वः॥
(ऋ० १०।१८।६)

'जीवन को (आयुः) स्वीकार करो और वार्धक्य का स्वागत करो। तुम सभी एक दूसरे के पीछे क्रम से प्रयत्न करते जाओ। सुन्दर वस्तुओं का विधायक देव तुम पर प्रसन्न हो और तुम्हारे जीवन को दीर्घ करे।' यह मंत्र अथर्ववेद में भी दुहराया गया है, जहां केवल अन्तिम पद कुछ भिन्न हैं तथा—सर्वमायुर्नयतु जीवनाय।
(अ० १२।२।२४)

'जीवन की सार्थकता के हेतु अपनी पूरी आयु बिताओ।'

जीवन की इस उपादेयता को बारंबार दुहराया गया है—'जीवेम शरदः शतम्' आदि स्तुतियों में आयु और बल के लिए प्रार्थना की जाती है।

जीना अच्छा तो सभी को लगता है, परन्तु उसे वास्तव में अच्छा बनाने के लिए सतत सक्रिय रहना आवश्यक है, आलस्य छोड़कर कर्म में प्रवृत्त होना, कर्मण्य रहना, अनिवार्य है। अतः यह ओजस्वी उपदेश है—त्रातारो देवा अधिवोचता नो

मा नो निद्रा ईशत मोत जल्पिः।
वयं सोमस्य विश्वह प्रियासः
सुवीरासो विदथमावदेम॥
(ऋ० ८।४८।१४)

'रक्षा करने वाले देव! हमको आशीष दो। व्यर्थ की वार्त्ता और निद्रा दोनों हमसे दूर रहें। वीरों सहित धर्म स्थान में हम बोलें।' 'जो कर्मण्य है वही देवों को प्रिय होता है। देव स्वप्न को नहीं चाहते हैं। वे अतन्द्र हैं और आलस्य को दण्डित करते हैं।' इस पूरक उपदेश को हम ऋग्वेद और अथर्ववेद दोनों में पाते हैं—

इच्छन्ति देवाः सुन्वन्तं न स्वप्नाय स्पृहयन्ति।
यन्ति प्रमादमतन्द्राः।
(ऋ० ८।२।१८, अ० २०।१८।३)

ऋक् में फिर कहा गया है—न ऋते श्रान्तस्य सख्याय देवाः॥

'जो श्रम करता है केवल उसी को देव अपना मित्र बनाते हैं।'

कर्मण्यता पर इस प्रकार बल देकर सत्कर्म का निरूपण इस मंत्र में किया जाता है—

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अक्षैर्मादीव्यः कृषिमित् कृषस्व
वित्ते रमस्व बहु मन्यमानः।
तत्र गावः कितव तत्र जाया
तन्मे विचष्टे सवितायमर्यः॥
(ऋ० १०।३४।१३)

'जुआ मत खेलो, अपने खेतों को जोतो और बोओ, महत्त्वपूर्ण जानकर, धन से आनन्दित हो, अपनी स्त्री और गायों की चिंता रक्षा करो, यह सवितादेव का आदेश है।' ईश्वर के ध्यान के साथ इहलौकिकता का—घर और खेती का—यह कितना सुन्दर आदर्श है और 'वित्ते रमस्व' में कितनी व्यावहारिकता है।

इस प्रकार भक्ति, उद्योग, गार्हस्थ्य और धन की प्रेयता के संग-संग सत्य और नियम पर बल दिया जाता है, असत् मार्ग या साधन से सर्वथा बचने का आदेश किया जाता है—

परि चिन् मर्तो द्रविणं ममन्याद्,
ऋतस्य पथा नमसा विवासेत्।
(ऋ० १०।१३१।२)

'मनुष्य को धन की चिंता करनी चाहिए और सन्मार्ग से ही प्रयत्न करना चाहिए और साथ-साथ देवाराधना भी होनी चाहिए।'

वैदिक ऋषि जितना ईश और धनोपार्जन का ध्यान करते हैं, उतना ही जीवन प्रेयता के आधार स्वरूप स्त्री के गुण-स्वभाव का बारम्बार चिंतन करते हैं, अनेक सुन्दर और महान् अवसरों में उसको उपमान बनाते हैं—

निष्कृतं जारिणीव। (ऋ० १०।३४।५)
कन्येव तन्वा३ शाशदानाँ। (ऋ० १।१२३।१०)
सुसंकाशा मातृमृष्टेव योषा (ऋ० १।१२३।११)
योषेव भद्रा (ऋ० ५।८०।६)

नियत समय पर प्रेयसी की भाँति आने वाली, गुण-गर्वा कन्या की भाँति, माता द्वारा संवारी हुई युवती की भांति, सुशीला युवती की भांति आदि उषा की सुन्दरता के वर्णन में कहा गया है। एक दूसरे संदर्भ में देव की महिमा को स्पष्ट करने के लिए 'अनवद्या पतिजुष्टेव नारी' कहा गया है अर्थात् भगवान की शुभ्रता का अनुमान कराने के लिए 'पतिव्रता नारी' का चित्र उपस्थित किया जाता है। यह ऋग्वेद का १।७३।३वां मन्त्र है।

अथर्व वेद के एक मन्त्र में ईश्वर को सभी रूपों वाला कहते हुए पहले उसे स्त्री कहा है—'त्वं स्त्री त्वं पुमानसि' आदि।

इन मंत्रों के भावों के लालित्य को केवल समझा जा सकता है, शब्दों में व्यक्त करना कठिन है। ये लोक-परलोक की अनुपम अन्विति उपस्थित करते हैं। वेदादर्श में लोक-परलोक भिन्न नहीं, अपितु समन्वित हैं। देव, धन, प्रेम, शृंगार, कर्मण्यता, पावनता आदि सभी मिलकर जीवन का चित्र उपस्थित करते हैं। वेदों की ऐहिकता में विचित्र परमार्थता ओत-प्रोत है। सभी सत् की विभूतियाँ हैं, सभी पावन और उपास्य हैं। अपावन है केवल असत्, अनृत!

इस लोक लालित्य के साथ, वैदिक आर्यों में शौर्य और वीरत्व की भावना का भी सदा दर्शन होता है। उत्साह से आगे बढ़ते जाना, शत्रुओं पर विजय प्राप्त करना, सदा सचेष्ट रहना, उनका प्रधान गुण दिखाई देता है। सच पूछिए तो यह निश्चय करना कठिन हो जाता है कि वैदिक ऋषियों को प्रधानतः ब्राह्म कहें या क्षात्र। दोनों स्वभाव साथ-साथ सामने आते हैं—

प्रेता जयता नर इन्द्रो वः शर्म यच्छतु
उग्रा वः सन्तु बाहवोऽनाधृष्या यथासथ॥

'वीरो, आगे बढ़ो और जीतो, विजयी हो, ईश्वर तुम्हारी रक्षा करें, तुम्हारे अस्त्र-शस्त्र शक्तिमान् हों जिससे तुम अक्षत रहो।' यह चारों वेदों में आता है—(ऋ० १०।१०३।१३, साम० १८६२, य० १७।४६, अथ० ३।१८।७) जिससे इस आदर्श की प्रधानता और सर्व-व्यापकता सूचित होती है। ऐसे मन्त्रों की बहुलता है। वैदिक आदर्श को सामासिक रूप से यजुर्वेद २०।२५वें मन्त्र में अत्यन्त सुन्दर रूप से इस प्रकार व्यक्त किया गया है—

यत्र ब्रह्म च क्षत्रं च सम्यञ्चौ चरतः सह।
तं लोकं पुण्यं प्रज्ञेषं यत्र देवाः सहाग्निना॥

'वही सुन्दर देश है जहां आत्मिक ज्ञान और लौकिक वीरता सम्मिलन होता है, जहां देवगण अग्नि के संग वास करते हैं।' आर्य संस्कृति सम्बन्धी यह सुन्दरतम उक्ति है। गीतोपदेश के अन्त में आगे चलकर इसी आदर्श को दुहराया गया है—

यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम॥
(गीता १८।७८)

ईशोपनिषद में, जो यजुर्वेद का ही अंश है, इसी आदर्श को विद्या-अविद्या, सम्भूति-विनाश का मेल कहा गया है। हमारी मौलिक संस्कृति का यही जीवन विषयक संदेश है। इसको फिर से धारण करने की आवश्यकता है। संस्कृत काव्यों में नायक उसी को बनाया जाता था जो ज्ञान शौर्य से युक्त होकर लोक का नेता होता था। काव्य और जीवन दोनों के आदर्शों को कालिदास ने रघुवंश के लक्षणों में इस प्रकार व्यक्त किया है—

(शेष पृष्ठ २५ पर)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—बनारसी सिंह

अथर्ववेद में मातृभूमि वंदन

मातृभूमि के प्रति अडिग निष्ठा का महान् संदेश पुण्य-भूमि आर्यावर्त में जन्मे आबाल वृद्ध नरनारियों को परम पिता परमात्मा की अमरवाणी वेद ने भी प्रदान किया है। वेदों में विभिन्न स्थानों पर इस प्रकार के सुस्पष्ट निर्देश विद्यमान हैं, जिनमें व्यक्ति को मनसा वाचा कर्मणा मातृभूमि के प्रति अनुरक्ति का संदेश दिया गया है। उन्हीं में से कुछ यहां प्रस्तुत हैं और साथ ही उनका पद्यानुवाद भी।

अथर्ववेद में सुस्पष्ट शब्दों में कहा गया है—

माता भूमि पुत्रोऽहं पृथिव्याः
अथर्व वेद १२।१।१२

मैं हूं इसका पुत्र सलोना
यह भूमि मेरी महतारी

इसी भांति अथर्व वेद में ही अन्यत्र उल्लेख है—

शिला भूमिरश्मा पांसु
सा भूमिः संधृता धृता।
तस्यै हिरण्यवक्षसे
पृथिव्या अकरं नमः॥
अथर्व वेद १२।१।२६

तात्पर्य है—

भूमि में हैं पत्थर मिट्टी
इसमें अगणित रोड़े।
यही धूलि को रही समेटे
क्या पदार्थ ये थोड़े॥
किन्तु सदा संरक्षण चाहती,
है यह उत्तम विधि से
तभी सुरक्षित है हो पाती,
मातृभूमि भर निधि से।

इसके अतिरिक्त अथर्व वेद के ही एक मंत्र में सच्चे मातृभक्त की कामना और आकांक्षा का वर्णन भी किया है। उसमें कहा गया है—

अजितोऽहतो अक्षतो अध्यष्ठां पृथिवीमहम्
अथर्ववेद १२।१।११

इसका अर्थ है—

मातृभूमि की सेवा करते, कभी न मैं प्रभु हारूं।
क्षत विक्षत भी कभी न होऊं, इस हित सब कुछ वारूं॥
अमृत पुत्र बन रहूं करूं, मैं मातृभूमि का रक्षण।
सत्य कर्मरत रहूं सदा ही, कर मातृभूमि का शासन॥

इतना ही नहीं अपितु अथर्ववेद में ही विभिन्न मत-मतान्तरों एवं भाषा-भाषियों में पारस्परिक ऐक्य भाव के सृजन का सन्देश भी सृष्टि के आदिकाल से ही उल्लिखित है। उसमें कहा गया है—

जनं बिभ्रती बहुधा विवाचसं
नाना धर्माणं पृथिवी यथौकसम्
अथर्ववेद १२।१।४५

इस मंत्र का अर्थ निम्नलिखित है—

मातृभूमि में बसते जो हैं, अलग-अलग हो बोली।
भिन्न पंथ के अनुयायी, भी रहें बने हमजोली॥
सबको यह परिवार तुल्य, ही सदा सौख्य बरसाती।
हर जन में जो बसा यहां, है ऐक्य भाव सरसाती॥

अथर्ववेद में ही यह भी दर्शाया गया है कि इस मातृभूमि में निवास करने वाले नागरिकों की स्थिति कैसी होनी चाहिए तथा उनमें मातृभूमि हेतु समर्पण की भावना कितनी उत्कट होनी अपेक्षित है।

एक और मंत्र प्रस्तुत है—

उपस्थास्ते अनमीवा अयक्ष्मा
अस्मभ्यं सन्तु पृथिवि प्रसूताः।
दीर्घं न आयुः प्रति बुध्यमानाः
वयं तुभ्यं बलिहृतः स्याम॥
अथर्ववेद १२।१।६२

इस मंत्र का आशय है—

मातृभूमि दे यह वरदान,
सदा नीरोगी हों गतिमान्।
लुटा रही तू सारे भोग,
भोगें हम और रहें नीरोग।
हम बन ज्ञानी आयु पाएं:,
तेरे हित सर्वस्व लगाएं।
हे वरदायिनी तू कल्याणी,
तुझे समर्पित मेरी वाणी।
तेरा ही मैं करता वंदन,
तेरे चरणों में सब अर्पण।

इस प्रकार यह सुस्पष्ट है मातृभक्ति के प्रति अनुरक्ति का पाठ आर्यभूमि भारतवर्ष को स्वयं परम पिता परमात्मा ने ही प्रदान किया है और मातृभूमि के प्रति अनन्य तथा अडिग आस्था और निष्ठा ही उस जग-न्नियन्ता के प्रति भी सच्चा श्रद्धा ज्ञापन है, जिसने हमें सुजला सुफला वरदा, मलयजशीतलम् भव्य भूमि में जन्म देकर सौभाग्यशाली बनाया है।

सत्यार्थ प्रकाश

२००)—२५०)—३००)—५००)
३१००)—६१००) रु० सैकड़ा के संगाएं :
बांटें।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आयुर्वेद में हृदय का स्थान

—जगदेवसिंहसिद्धान्ती शास्त्री

सम्राट् प्रेस, पहाड़ी धीरज, देहली-६

तुभ्येदिन्द्र स्व ओक्ये सोमं चोदामि पीतये
"एष रारन्तु ते हृदि"

ऋग्वेद-मण्डल ३, सूक्त ४२, मन्त्र ८,

पदार्थ—(तुभ्य) तुभ्यम् (इत्) एव (इन्द्र) ऐश्वर्ययुक्त (स्वे) स्वकीये (ओक्ये) गृहे (सोमम्) रसम् (चोदामि) प्रेरयामि (पीतये) (एषः) (रारन्तु) भृशं रमताम् (ते) तव (हृदि) हृदये।

अन्वय—हे इन्द्र य एष ते हृदि रारन्तु तं सोमं स्व ओक्ये पीतये तुभ्येच्चोदयामि।

भावार्थ—प्राणिभिर्यद्भुज्यते पीयते च तत्सर्वं रुधिरादिकं भूत्वा हृदि संसृत्य मस्तकद्वारा सर्वत्र प्रसरति।

भाषा पदार्थ—हे (इन्द्र) ऐश्वर्ययुक्त जन जो (एषः) यह (ते) आप के (हृदि) हृदय में (रारन्तु) अत्यन्त रमे वृक्ष (सोमम्) रस को (स्व) अपने (ओक्ये) गृह में (पीतये) पीने को (तुभ्ये) आपके लिये (इत्) ही (चोदामि प्रेरणा करता हूं।

भावार्थ—प्राणी लोग जो खाते और पीते हैं वह सब पदार्थ रुधिर आदि हो और हृदय में फैल कर मस्तक के द्वारा सर्वत्र फैलाता है।

(महर्षि दयानन्द रचित भाष्य)

[आयुर्वेद के ज्ञाता विद्वान् इस बात को ठीक रूप से समझते हैं कि जो भक्ष्य और पेय पदार्थ हैं उनका शरीर में रुधिर आदि धातु बन कर हृदय में पहुंच जाते हैं। वहाँ से वे धातुएं नस-नाड़ियों के द्वारा मस्तिष्क में पहुँच कर सारे शरीर में व्याप्त हो जाती हैं। इस बात का ध्यान रखना चाहिये।]

परस्पर शुभ कार्यों में सत्कार

"शुभ कार्य आदि के उत्सवों में परस्पर एक दूसरे का आह्वान करके अन्न और जल आदि से सत्कार करें।"

आ तू न इन्द्र मद्यग्घुवानः सोमपीतये।
हरिभ्यां याह्यद्रिवः॥

ऋग्वेद-मण्डल तीन, सूक्त ४१, मन्त्र १

पदार्थ—(आ) समन्तात् (तु) (नः) अस्मान् (इन्द्र) ऐश्वर्यकारक (मद्यक्) मामञ्चतीति मद्यक् (हुवानः) आहूतः (सोमपीतये) सोमः पीतो यस्मिन्तस्मै (हरिभ्याम्) अश्वभ्याम् (याहि) (अद्रिवः) मेघवान् सूर्य इव वर्त्तमानः।

अन्वयः—हे अद्रिव इन्द्र त्वं सोमपीतये मद्यग्घुवानो हरिभ्यां नोऽस्मानायाहि वयन्तु भवन्तमायाम।

भावार्थ—मनुष्यैरुत्सवेषु परस्परेषामाह्वानं कृत्वाऽन्नपानादिभिः सत्कारः कर्त्तव्यः।

भाषा पदार्थ—हे (अद्रिवः) मेघों से युक्त सूर्य्य के तुल्य वर्त्तमान (इन्द्र) ऐश्वर्य के करने वाले आप (सोमपीतये) सोमलता रूप औषध का रस पीया जाय जिस कर्म में उसके लिये (मद्यक्) मेरी पूजा अर्थात् उपासना करने वाला (हुवानः) पुकारा गया जन (हरिभ्याम्) घोड़ों से (नः) हम लोगों को (आ) सब प्रकार (याहि) प्राप्त हो और हम लोग (तु) शीघ्र आप को प्राप्त होवें।

भावार्थ—मनुष्यों को चाहिये कि शुभ कार्य्य आदि के उत्सवों में परस्पर एक दूसरे का आह्वान करके अन्न और जल आदिकों से सत्कार करें।

(महर्षि दयानन्द रचित वेदभाष्य)

[विशेष—परस्पर शुभ काय्यों और उत्सवों में निमन्त्रित करके अन्न-पान आदि से सत्कार करना उचित है। इससे प्रीति बढ़ती है। परन्तु सामान्य मर्यादा से अधिक को बुलाना अथवा जाना अनुचित है, यह ध्यान रखना आवश्यक है।]

(पृष्ठ २३ का शेष)

शैशवेऽभ्यस्तविद्यानां यौवने विषयैषिणाम्।
वार्धक्ये मुनिवृत्तीनां योगेनान्ते तनुत्यजाम्॥

'शैशव काल में विद्याभ्यास यौवन में विषयों का सेवन और वार्धक्य में योगाभ्यास रघुवंशिगों का विशेष लक्षण था।' झूठे आदर्शों और उपदेशों के चक्कर में पड़कर हम इन उदात्त भावों को भूलते जा रहे हैं। राष्ट्र में बल लाने के लिए इनको अपनाना, इनका प्रचार करना सभी का पुनीत कर्त्तव्य है।

वैदिक संस्कृति एक अर्थ में लोक की संस्कृति है। उसमें एक विचित्र और अत्यन्त पावन ऐहिकता का संदेश है। उससे लोक को ओज और तेज, साहस और स्फूर्ति मिल सकती है। उसके जीवन प्रेम में वह वैचित्र्य है, जिसकी हमको परम आवश्यकता है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

धर्म के नाम पर नई दुकानदारी लाखों का सोना, श्रद्धालु नर-नारी

★ ★ ★

इस देश में धर्म के नाम पर अनेक 'भगवान्' तो पहले ही दुनिया को 'मोक्ष' और कल्याण का झांसा देकर भारतीय जनमानस की अंध श्रद्धा का लाभ उठा रहे हैं। चेले चेली बनाकर अपने चरण पुजवा रहे हैं, चरण धूलि को सुरक्षित डिब्बियों में बंद रखकर पुजवा रहे हैं, किन्तु इनमें से अधिकतर ऐसे हैं कि जो आधुनिक शिक्षा दीक्षा से युक्त हैं और प्रचार कला में पारंगत भी। किन्तु अब एक माडर्न भगवान् का सर्वथा अनोखा कारनामा प्रकाश में आया है। और एक भगवान भी है ऐसा कि जिसका 'गरिमागान' सुनकर एक प्रश्नवाचक चिन्ह सहसा ही मानस पटल पर उभर आता है कि क्या अनेकों भद्र पुरुषों एवम् महात्माओं तथा समाज सुधारकों के अनथक प्रयासों के बावजूद भी ऐसा होना संभव है। क्योंकि यह भगवान था एक सर्वथा अनपढ़ व्यक्ति जो स्वयं को 'धर्म' संस्थापक बना बैठा और जिसने हजारों नर-नारियों को अपने जाल में कुछ इस प्रकार से फंसाया कि वे उसके आदेश को ही 'प्रभु' का आदेश मानने लगे।

पिछले दिनो ही समाचार पत्रों में तामिलनाडु के पुद्दु कोट्टई जिले के एक ग्राम मेत्रभिरलाई की एक झोंपडी पर कस्टम विभाग के अधिकारियों ने छापा मारकर भूगर्भ से २५-३०लाख रु० का सोना एवं आभूषण भी बरामद किए और फिर इस ग्राम में तलाशियों का एक लम्बा सिलसिला चला।

इस 'भगवान्' का जो 'गुणगान' अब तक प्रकाश में आया है उसके अनुसार तिरुची जिले के एक लघु ग्राम पल्लापत्ति में एक ग्वाला निवास करता था। उसका नाम कादरपाश जब इसने जीवन के २६ वसंत देख लिए तो इसने अपने 'गुरु' के साथ तिरुधर कुंडम नामक स्थान पर जाकर अड्डा जमा लिया। बताया जाता है कि इस कथित 'गुरुदेव' ने ही अपने इस पटु शिष्य को यह फरमान दिया कि वह नए धर्म की स्थापना करे। तदुपरान्त कादर पाशम ने राजगंजीरम ग्राम की राह ली। बाद में यही सन् १९४० में पापनाशिवदत ग्राम में जा बसा और उसने इस ग्राम को मेत्रभिरलाई का नया नाम ही दे दिया और 'ब्रह्मोदयम्' के नाम से यह एक नवीन मत का संस्थापक बन गया।

इस मत के अनुयायी स्वयं को 'अनन्तार' (अनन्त) कहलवाते हैं। बताया जाता है कि तामिलनाडु में इनकी संख्या लगभग चार हजार है। ये 'अनन्तार' कादर को भगवान् का अवतार मानते रहे। प्रत्येक पूर्णिमा को कादर के ये श्रद्धालु उसके निवास स्थान पर एकत्रित होकर यथा-शक्ति गुरु दक्षिणा भी समर्पित करते थे।

इन अंध श्रद्धालुओं के लिए कादर का प्रत्येक शब्द ब्रह्म वाक्य के समान माननीय और अनुकरणीय था। कादर बाबा ने स्वयं के साथ ही साथ अपनी पत्नी को भी पुजवाया। अनन्तार कादर की पूजा करते थे तो उनकी पत्नियां कादर की बेगम को अपनी आराध्या मानती थीं।

किन्तु इसी वर्ष १२ फरवरी को कादर बाबा संसार से चिर विदाई ले गए। उनके श्रद्धालु जनों द्वारा उन्हें इसी ग्राम की एक झोंपडी में दफना दिया गया।

किन्तु इस घटना ने अनन्तारों की इस मंडली में एक नई खलबली उत्पन्न कर दी। क्योंकि कादर के देहान्त के उपरान्त कादर के परिवार और अनन्तारों में संघर्ष का सूत्रपात हो गया। अनन्तारों का कथन है कि कादर के पास जो भी सम्पत्ति है उसका उत्तराधिकार 'ब्रह्मोदयम्' मत के सभी अनुयायियों को मिलना चाहिए। जबकि कादर के परिवार के लोगों ने उस सारी संपत्ति पर अपना ही अधिकार जताया।

इस विवाद के परिणामस्वरूप कस्टम विभाग के अधिकारियों को भी यह रहस्य विदित हो गया कि कादर की झोंपड़ी में ही लाखो रुपए का सोना दबा पड़ा है। इसके पश्चात् उन्होंने ग्राम की इस झोंपड़ी की तलाशी ली और प्रचुर सम्पदा प्राप्त की।

बताया जाता है कि अधिकारी वृन्द यह जानने को प्रयत्नशील है कि आखिर कादर ने इतनी सम्पत्ति कहाँ से और किस प्रकार अर्जित की। तलाशी में मिली सोने की सैकड़ों विदेशी टिकियाएं एवं हीरे मोती कादर के पास किस प्रकार पहुंचे, इस रहस्य का उद्घाटन करने हेतु वह सक्रिय है।

तनिक आप भी हंसिए

दो वनवासी पहली बार गांव से निकले। उन्होंने रेलगाड़ी पहली बार देखी थी। एक स्टेशन पर उन्होंने बिस्कुट खरीदे, बिस्कुट भी पहली बार ही देखे थे? उनमें से एक बिस्कुट खाने लगा।

जैसे ही उसने बिस्कुट मुँह में रखा कि गाड़ी सुरंग में घुसी और डिब्बे में अन्धेरा छा गया। तभी वह अपने साथी से बोला—अरे, तुम मत बिस्कुट खाना; मैं तो खाते ही अन्धा हो गया हूं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उत्तर भारत में संस्कृत विद्या का केन्द्र

—प्रेमचन्द्र शास्त्री

★ ★ ★ ★

उत्तर भारत के उत्तर प्रदेश राज्य में हिन्दुओं के पुनीत तीर्थ हरिद्वार के निकट ज्वालापुर में गंगा की नहर के तट पर संस्कृत विद्या का एक बड़ा गढ़ है। उसका नाम है—गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर। इस गुरुकुल से ही सटा हुआ एक और गुरुकुल पूज्य श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा स्थापित किया हुआ गुरुकुल कांगड़ी विद्यमान है। दोनों में ब्रह्मचर्याश्रम प्रणाली द्वारा संस्कृत और आधुनिक सभी प्रकार की शिक्षा दी जाती है। परन्तु आर्यजगत् में संस्कृत विद्या के गढ़ के रूप में गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर का ही नाम अधिक प्रख्यात है। इस गुरुकुल की स्थापना वीतराग संन्यासी स्व० श्री स्वामी दर्शनानन्द जी महाराज ने की थी।

इस गुरुकुल के छात्रों तथा स्नातकों में संस्कृत विद्या की अधिक से अधिक प्राप्ति के लिए होड़-सी लगी रहती है। वैसे तो यहां की स्नातक परीक्षा का पाठ्यक्रम स्वयं में ही परिपूर्ण है, तथापि छात्र और स्नातक पंजाब, उत्तर प्रदेश तथा बंगाल विश्वविद्यालय की संस्कृत परीक्षाओं की अधिक से अधिक उपाधियां प्राप्त करने के लिये तत्पर रहते हैं। तीन-तीन और चार-चार उपाधियां प्राप्त कर चुकने पर भी उनकी ज्ञान-पिपासा शान्त नहीं होती। वहीं के एक स्नातक जो वर्त्तमान काल में वहां के कुलपति पद को सुशोभित कर रहे हैं, आचार्य पंडित हरिदत्त शास्त्री लगभग दो दर्जन उपाधियों से विभूषित हैं, तो भी उनकी पठन-पाठन में रुचि जरा भी कम नहीं हुई।

इस गुरुकुल में संस्कृत विद्या के वेद-वेदांग, साहित्य, व्याकरण, दर्शन और उपनिषद्, आयुर्वेद तथा आंग्ल भाषा का गहन अध्ययन छात्रों को कराया जाता है। यहां के स्नातक शिक्षक, पत्रकार, कवि, लेखक, राजनीतिज्ञ, व्याख्याता और उपदेशक तथा चिकित्सक सहस्रों की संख्या में हैं।

वर्त्तमान काल में इस संस्था में एक महाविद्यालय विभाग है, जिसमें छात्रों को संस्कृत-विद्या की सम्पूर्ण शिक्षा में पारंगत किया जाता है। इस विभाग के स्नातक को विद्याभास्कर उपाधि दी जाती है, दूसरा विभाग आयुर्वेद का है, इसमें छात्रों को आयुर्वेद शास्त्र की ज्ञानात्मक और क्रियात्मक शिक्षा दी जाती है। इस विभाग के स्नातकों को आयुर्वेद भास्कर की उपाधि से सम्मानित किया जाता है। तीसरा विभाग है—अंग्रेजी का एम० ए० का। इसमें संस्कृत विद्या के साथ एम० ए० का पाठ्यक्रम सुयोग्य विद्वानों के निरीक्षण में पूरा कराया जाता है। इस गुरुकुल की विद्या भास्कर और आयुर्वेद भास्कर की उपाधियां कई राज्यों द्वारा स्वीकृत हैं। यहां के छात्र और स्नातक हिन्दी और संस्कृत में धारा प्रवाह रूप से व्याख्यान देने की योग्यता रखते हैं।

महात्मा गांधी जी के असहयोग आन्दोलन में यहां के छात्रों और स्नातकों ने भरपूर योगदान दिया। वे गांव-गांव में जत्थे बनाकर गये, वहां प्रचार किया, भाषण दिये और विदेशी वस्त्रों और शराब की दुकानों पर धरने दिये।

हैदराबाद के धर्मयुद्ध में अनेक स्नातक अपनी नव-वधुओं की अनुमति लेकर कूदे, निजाम-सरकार के अत्याचार और कष्ट उन्होंने हर्षपूर्वक सहन किये।

पंजाब हिन्दी रक्षा-आंदोलन में भी यहां के छात्रों ने बड़ी संख्या में भाग लिया और पंजाब सरकार की जेल-यात्राएं कीं।

इस गुरुकुल में भारत के प्रथम प्रधान मंत्री पं० जवाहरलाल नेहरू भी स्वर्णजयन्ती के अवसर पर पधारे और नवस्नातकों को दीक्षान्त के रूप में वैदिक सन्देश के साथ युगधर्म की प्रेरणा दे गये। प्रथम राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद जी इस गुरुकुल में अपने राजनीतिक जीवन के प्रारम्भ में कुछ काल तक रहे और सबसे प्रथम हिन्दी लेखन कला का अभ्यास उन्होंने यहीं से आरम्भ किया। आपका हिन्दी का प्रथम लेख गुरुकुल के मासिक पत्र 'भारतोदय' में प्रकाशित हुआ तत्पश्चात् जब राष्ट्रपति के रूप में श्रद्धेय डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद जी सन् १९६१ में दीक्षान्त भाषण देने के लिए पधारे, उस समय उन्होंने अपने भाषण में इस बात की चर्चा की और कहा कि—'मैं यहां का पुराना छात्र हूं, इस गुरुकुल पर मेरा उतना ही स्नेह है जितना यहां के स्नातकों का।

यह गुरुकुल देश के स्वतंत्रता आन्दोलन में देश की अन्य संस्थाओं में अग्रणी रहा। इसके साथ-साथ राष्ट्र-नायक लोकमान्य बालगंगाधर तिलक, गोपालकृष्ण गोखले, महात्मा गांधी, पं० जवाहरलाल नेहरू, डा० राजेन्द्र प्रसाद, पं० मोतीलाल नेहरू, महामना पं० मदन मोहन मालवीय, श्री सत्यमूर्ति, लाला लाजपतराय तथा भाई परमानन्द और डा० मुंजे आदि अनेक नेता समय-समय पर यहां पधारे और अपने विचारों से ब्रह्मचारियों को राष्ट्रभक्ति तथा भारतीय संस्कृति की प्रेरणा देते रहे।

अभी गत वर्ष १९७५ के दिसम्बर में राजधानी में आर्यसमाज स्थापना शताब्दि महोत्सव समारोह पूर्वक

(शेष पृष्ठ २६ पर)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कहानी

... और बाजीराव ने छत्रसाल की लाज रख ली

—भानुप्रताप

सतारा दुर्ग दीपमालिकाओं से जगमगा रहा था। नृत्य, गान और वाद्यों की सुमधुर ध्वनि से उसका कोना कोना गुंजित हो रहा था। दीन-दुखियों की भीड़ लगी थी दर्ग के द्वार पर। याचक याचना करते, मालामाल होकर वापस जाते। वीर मराठे सैनिक आज की सजावट एवं रंगीनियों में ऐसे रमे हुए थे कि जैसे उन्हें अब जीवन भर इसी प्रकार के ही सुमधुर स्वर सुनने हैं। वे शस्त्रों की झंकारों से दूर, युद्ध की विभीषिकाओं से परे, आज कल्पना के अत्यन्त कोमल जगत् में वास कर रहे थे। कल तक जिन शक्तिशाली हाथों में दुधारी तलवार रहा करती थी, आज वे रिक्त थे। उनसे आने वाली आवाज किसी शत्रु के शिरश्छेद की आवाज न होकर आनन्द की द्योतक करतलध्वनि थी। उनके कंठ आज हर-हर बम-बम भूल-कर वाह-वाह की बोलियाँ बोल रहे थे। पेशवा बाजीराव के घर में यह जमघट पहली बार ही लगा था। यह आमोद-प्रमोद का कार्यक्रम आयोजित था, उन्हीं के सम्मान में उनके स्वयं के विवाह के सम्बन्ध में।

भरे दरबार में बैठे वीर बाजीराव हर्ष मना रहे थे। वे आत्मविभोर से बैठे किसी कल्पना जगत् में खोये से थे। सहसा द्वारपाल ने तन्द्रा भंग की—महाराज महोबा से एक सवार आया है। वह श्रीमन्त से भेंट करना चाहता है। उसे ऊपर से नीचे तक कई बार देखकर वे बोले—'क्या कहा ? सवार आया है ?'

'जी हाँ ! श्रीमन्त।'

'कहाँ से आया है ? वह क्या चाहता है ?'

'महोबा से महाराज। कहता है कि नितांत आवश्यक कार्य है। श्रीमन्त से भेंट करने को उतावला हो रहा है।'

'अच्छा ! उसे सादर उपस्थित करो।'

क्षणभर बाद ही एक बुन्देला वीर सैनिक बाजीराव के सम्मुख आ खड़ा हुआ। अभिवादन के बाद एक पत्र पेशवा को थमाकर वह बगल हटकर खड़ा हो गया। पत्र पढ़ते-पढ़ते बाजीराव के चेहरे के हाव-भाव बदलने लगे। वह पत्र था ७८ वर्षीय वीर बुन्देला सरदार छत्रसाल का। संकट से घिरे छत्रसाल ने लिखा था—'मैं बचपन से ले लेकर आज तक बुन्देला भूमि की पवित्रता की रक्षार्थ लड़ता रहा। लेकिन अब मजबूर हो गया। अतः इन बूढ़े हाथों में खड्ग संभालने की शक्ति नहीं रही। सैनिक और सरदार सभी समाप्त हो गए। आज तक हमने इसकी रक्षा की, अब आप इसे बचायें। इस समय हम सब किले में बन्द भूख की ज्वाला से जल रहे हैं। हो सकता है कि आपके पत्र पाने तक यहाँ एक भी वीर शेष न रहे। मेरा यह पत्र शायद आपको अन्तिम पत्र है, शायद दूसरा पत्र लिखने का अवसर न मिले। क्योंकि गुलाम होकर जीने से अच्छा है कि मातृभूमि की रक्षार्थ शहीद हो जाएं। आपको यह पत्र लिखने के साथ ही साथ हम दुर्ग का द्वार खोलकर अन्तिम यात्रा पर जा रहे हैं। इस पावन भूमि की पवित्रता आपके हाथों में सौंपकर मैं शत्रु से खुला संघर्ष छेड़कर इस जीवन की इतिश्री करना चाहता हूँ। आप जैसा समझें करें।

पत्र पढ़कर बाजीराव की आँखें भीग गईं। उस आमोद प्रमोद के वायुमण्डल को चीरती उनकी वीर वाणी गूंज उठी—

'पिलाजी जाधव।'

'जी महाराज।'

'आपके रक्त की पुकार है। कहीं वह पराजित होकर दास न हो जाय, यह समारोह बन्द करके युद्ध की तैयारी करो।'

'जो आज्ञा।' कहकर पिलाजी जाधव चले गये। राग-रंग समाप्त हो गया। सुमधुर वाद्य बन्द हो गये। रणभेरी बज उठी और रणनाद करते हुए वीर बाजीराव की वाहिनी बढ़ चली महोबे की ओर। न उसे रात की चिंता थी न दिन की परवाह। चिन्ता थी तो केवल यही कि कहीं बुन्देला भूमि की शान में बट्टा न लग जाय।'

महोबा पहुँचने के पूर्व ही होनी हो चुकी थी। पहला सन्देश बाजीराव को मिला कि महाराज छत्रसाल बंदी-गृह में बद हो चुके हैं। बुन्देलों की सेना परास्त हो चुकी है। पेशवा का हृदय तिलमिला उठा। किसी प्रकार रात कटी। प्रातःकाल ही उन्होंने आततायी मुहम्मद शाह बंगस पर आक्रमण करने का आदेश दे दिया। सेना तैयार होने लगी। उसी बीच शत्रु की आँख बचाकर महाराजा छत्रसाल भी आ मिले। चतुर्दिक् आनन्द की लहर फैल गई, सेना तो तैयार ही खड़ी थी। छत्रसाल को साथ लेकर पेशवा ने सेना का निरीक्षण किया और फिर धीर, वीर और गंभीर वाणी में बोले—वीरो ! हमने अनेक युद्ध लड़े और जीते हैं। शत्रु हमारे शस्त्रों की मार से परिचित हैं। लेकिन यह युद्ध केवल शत्रु संहार के लिये नहीं अपितु अपने सम्मान की रक्षार्थ लड़ना है। शत्रु हमें हटाकर हमारे सम्मान से खेलना चाहता है। अपना अपमान सहकर जीना हमारी परम्परा के विरुद्ध है। शान के प्रतिकूल है। यह हो सकता है कि शत्रु की सेना अधिक हो और हमारी कम। परन्तु यह तथ्य जग-विदित है कि समरांगण में इस बात का इतना महत्व नहीं है कि किसकी सेना कितनी है, शस्त्र कैसे हैं। सम-रांगण में मिलने वाली विजय पुकार पुकार कर पूछती

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

है—'ओ विजयश्री के लोभियो ! पहले यह बताओ कि तुम्हारे सैनिक कैसे हैं ? उनके अन्तर का साहस कैसा है।' वह प्रत्यक्ष कहती है कि जीवन का मोह रखकर स्वर्ण और सुन्दरी के लालच में, भोग की इच्छा से शस्त्रों से सुसज्जित चाहे जितने भी सैनिक हों उन्हें मैं वरण नहीं कर सकती ! मुझे प्रिय हैं वे—जो जीवन का मोह त्याग कर अपने बल विक्रम द्वारा, शस्त्रों के जौहर से रणभूमि में रक्त की गंगा बहाकर अपनी परम्परा का प्रवाह अक्षुण्ण रख सकें।' मैं समझता हूँ कि हमारा संघर्ष अपने सम्मान अपनी परम्परा और पुण्यभूमि की रक्षा के लिए है। हमन राज्य के लिए लड़ते हैं, न राज्य सुखोपयोग की लालसा से ही, वरन् हम लड़ते हैं अपना कर्त्तव्य समझकर अपनी पावन संस्कृति की रक्षार्थ लड़ते-लड़ते मोक्ष प्राप्त करने के लिए। हमारी धारणा है कि जीतेंगे तो पवित्र मातृभूमि विदेशियों से मुक्त हो जायेगी और यदि समर भूमि में खेत रहे तो हमारे लिए स्वर्ग का द्वार खुल जाएगा।'

'एक बात और। वह यह कि जिन्हें भय लगता हो, जिनका साहस टूट रहा हो, और जिन्हें परिवार का, पत्नी का प्यार पुकार रहा हो वे सहर्ष वापस जा सकते हैं। जो इनसे मुक्त हों वे साथ चलें और अपनी वीरता का परिचय दें। आज का कलेवा शत्रु की बोटियों का ही होगा और स्नान उसके रक्त से।'

बाजीराव शान्त हो गये। उन्होंने देखा कि सैनिकों के चेहरों पर वीरता उभर रही थी। थोड़ी देर रुककर पुनः पूछा—'बोलो क्या कहते हो ?'

सैनिकों का समवेत स्वर गूंज उठा 'हम लोग लड़ेंगे और विजय प्राप्त करेंगे। आज हम प्राण देकर अपने सम्मान की रक्षा करने का यश प्राप्त करके ही रहेंगे। आप आज्ञा दें।'

× ×

रणभेरी बज उठी। मराठा वीरों ने मुहम्मद शाह बंगस पर आक्रमण कर दिया। घमासान युद्ध हुआ। अरिमुण्डों से रणभूमि पट गई। वे भूखे नाहर-से जिधर मुड़ते शत्रु दल के सिर कट जाते। जिधर तलवारें घूमतीं शत्रु निःशेष हो जाते। मुट्ठी भर सैनिक काल बनकर घूम रहे थे। बंगस के सैनिक तोबा-तोबा करते पलायन कर रहे थे। आततायी बंगस ने घुटने टेक दिए और युद्ध बन्द हो गया। बंगस की ओर से सन्धि प्रस्ताव आया। बाजीराव बोले 'प्रत्यक्ष समरांगण में निर्णय करते तो सर्वोत्तम होता। तुम्हारी शर्तें मुझे स्वीकार नहीं। पराजित सेनापति की शर्तों का कोई मूल्य नहीं होता। वह तो विजयी की दया पर ही जीने मरने को बाध्य होता है। शर्तें तुम्हारी नहीं, हमारी होंगी।'

लाचार बंगस को बाजीराव की शर्तें माननी पड़ीं। उसे यह लिखित वचन देना पड़ा कि भविष्य में वह कभी बुन्देलखण्ड पर आक्रमण करने का दुस्साहस नहीं करेगा। सारी बुन्देला भूमि पर महाराज छत्रसाल का एकछत्र अधिकार होगा।'

× ×

पराजित बंगस अपनी जान बचाकर इलाहाबाद चला गया था और बाजीराव की विजय वाहिनी सतारा की ओर। वृद्ध छत्रसाल खड़े देखते रहे। घोड़ों की टापों से उठी धूल जब बैठ गई तो दुर्ग की ओर मुड़ते हुए वे बोले शक्ति ही शत्रु के साहस का एकमेव उत्तर है। वह न तो शान्ति की भाषा समझता है और न मजबूरी का सन्देश। उसकी समझ में आता है वह पराक्रम जो उसका मुख मोड़ सके।

(शेष पृष्ठ २७ का)

सम्पन्न हुआ। उसमें इस गुरुकुल ने विशेष सहयोग दिया। यहाँ के ब्रह्मचारी यज्ञ में वेदमन्त्रों का सस्वर पाठ करते रहे और गुरुकुल से एक सौ चिकित्सकों का दल यहाँ आया, चिकित्सा-शिविर स्थापित कर घूम-घूम कर रोगियों की सेवा शुश्रूषा करता रहा।

इस गुरुकुल का वह युग स्मरण हो आता है जब यहाँ के ब्रह्मचारी फूस के छप्परों के नीचे और खुले आकाश में आम के वृक्षों की छाया में वेद-वेदांग, उपनिषदों और दर्शनों की शिक्षा अपने आचार्यों से ग्रहण करते थे। वह दृश्य प्राचीन ऋषिमुनियों, की याद दिलाता था ज्वालापुर के थानेदार बा० सीताराम जी थे। उन पर स्वामी दर्शनानन्द जी का बहुत प्रभाव था। वैदिक धर्म और आर्यसमाज के प्रचार की धुन इन्हें दिनरात लगी रहती थी। एक दिन बा० सीताराम जी ने स्वामी जी को भोजन के लिये अपने घर पर आमंत्रित किया। भोजन कर चुकने पर स्वामी जी ने बच्चों की कुशल पूछी तो बा० सीताराम जी की पत्नी की आँखों में आँसू आ गये और उसने निवेदन किया कि यही इस घर में कमी है। स्वा० दर्शनानन्द जी ने उन दोनों को समझाया कि ईश्वर की इच्छा को ऐसा ही ठीक समझें, तथापि आप ऐसा काम कर सकते हैं, जिससे आपका नाम संतान के होने से भी अधिक उजागर हो जाये। इसी प्रेरणा से उन्होंने स्वामी जी को दक्षिणा के रूप में गंगा नहर के तट पर स्थित अपना बाग दे दिया। स्वामी जी ने उसी स्थान पर वैशाख शुक्ला तृतीया (अक्षय तृतीया) सम्वत् १९६४ तदनुसार १९०७ ई० में इस गुरुकुल की स्थापना कर दी। स्वामी जी के सहयोगी के रूप में सर्वप्रथम पं० गंगादत्त शास्त्री और स्वा० शुद्धबोध तीर्थ यहां पधारे। शनैः शनैः प्रगति होने लगी और देश के अनेक गण्यमान्य विद्वान् यहाँ आने लगे। उनमें श्री पं० नरदेव शास्त्री, पं० पद्मसिंह शर्मा, गुरुवर काशीनाथ, पं० भीमसेन शर्मा (स्वामी भास्करानन्द) और दिलीपदत्त उपाध्याय के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। इन्हीं गुरुजनों की कृपा से यह गुरुकुल वर्तमान में उन्नति के उत्कर्ष पर पहुँच पाया है।

इस समय इस संस्था में वेदवेदांग, संस्कृत तथा आयुर्वेद विषयों के लिये एक अनुसंधान पीठ की आवश्यकता है। आयुर्वेद कालिज के लिये भी पूर्ण सुविधायुक्त भवन की आवश्यकता है। उदार दानी धर्मात्मा सज्जन इन आवश्यकताओं की भी शीघ्र ही पूर्ण कर देंगे—ऐसी आशा है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

नया वैदिक साहित्य

१ धरती का स्वर्ग : गृहस्थाश्रम

लेखक—श्री पं० शिवकुमार शास्त्री, काव्य-व्याकरण तीर्थ, संसद् सदस्य। मूल्य १)५०

पं० शिवकुमार जी शास्त्री आर्यसमाज के पुराने महोपदेशक रहे हैं। पिछले ३० वर्षों के अपने अनुभवों को उन्होंने "धरती का स्वर्ग" नामक पुस्तक में प्रस्तुत किया है।

गृहस्थाश्रम को कैसे स्वर्ग बनाया जाए ? इस विषय में शास्त्री जी का मार्गदर्शन सभी के जीवन को नयी प्रेरणा देने में समर्थ है।

पुस्तक का मूल्य लागत मात्र १)१० है।

२. वैदिक गृहस्थाश्रम

पं० विश्वनाथ विद्यामार्तण्ड की महान् कृति : विवाह पर भेंट के लिए। कपड़े की जिल्द मूल्य ६)

३. धर्म का सार

स्व० पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय लिखित यह पुस्तक प्रचार के लिए अत्यन्त उपयोगी है। साधारण व्यक्तियों को समझाने के लिए इसे ६ कथाओं में प्रस्तुत किया गया है। मूल्य १) किन्तु १०० मंगाने पर ६५) सैंकड़ा

४. महान् दयानन्द ! मूल्य १)५० १००) सैंकड़ा

महर्षि दयानन्द को विभिन्न दृष्टिकोणों से देखते हुए पं० शिवदयालु जी ने इस अनमोल पुस्तक में प्रस्तुत किया है।

५. आदर्श परिवार ४०) सैंकड़ा

राजस्थान के भूतपूर्व मंत्री श्री युगलकिशोर द्वारा लिखित यह पुस्तक प्रचार व विवाह आदि पर बांटने के लिए विशेष उपहार है।

मूल्य ६० पैसे।

६. प्रभु के चरणों में मूल्य १.५०।

प्रसिद्ध विद्वान् पं० हरिशरण जी द्वारा सामवेद के कुछ मंत्रों की सरल व्याख्या प्रार्थना रूप में प्रस्तुत की गयी है। मंत्रों को पढ़ते हुए साधक भाव विभोर हो जाता है।

७. वन्दना के स्वर मूल्य ८)

संपादक—श्री क्षेमचन्द्र 'सुमन'

डिलक्स १५)

अधिक से अधिक मंगाएं : बांट

जन-ज्ञान प्रकाशन, नई दिल्ली-

बालजगत्

आओ, बच्चो आओ।
अपना ज्ञान बढ़ाओ !

क्या तुम जानते हो कि:—

—छापाखाना (प्रेस) का आविष्कारक था ह्यू।

—थर्मामीटर का आविष्कार किया था मौंट गोल-फायर ने।

—सिलाई मशीन पहले-पहल बनाई थी एलियस हाव ने।

—मशीनगन के आविष्कारक थे श्री गेटलीयन एवम् दियासलाई के आविष्कारक थे श्री सारिया।

—बैरोमीटर पहली बार श्री हौरीशैली ने बनाया था तो फाउन्टेनपेन के आविष्कारक थे श्री वाटरमैन।

—ग्रामोफोन संसार को श्री बरनीयर की देन है और मोटर साइकिल श्री डायमलर की।

—चलचित्र (सिनेमा) का आविष्कार श्री एडीसन ने किया था और चश्मे का एलेग्जेन्डर दो स्पीन ने।

—पैन्सिल के आविष्कारक श्री फ्लेमिंग थे।

—सेफ्टी रेजर का आविष्कार किया था श्री जिलेट ने।

—टेलीविजन का आविष्कार श्री बेयर्ड ने किया था।

—अणुबम के प्रथम निर्माता श्री काम्पटन थे।

—राकेट का आविष्कार श्री मार्क्स ग्रेक्स ने किया था।

—स्टीम इंजन के आविष्कारक श्री वाट थे।

—एक्सरे लाइट के आविष्कारक श्री डब्लू० के० रांतजेन थे।

—विमान आविस्कारक थे मार्कोनी।

—टाइपराइटर श्री सेल्स लीडन की देन है और पिस्तौल है श्री कमेट हिट की।

—उत्तम कुमार

संसार में सत्य-धर्म-ज्ञान का सन्देश फैलाने के लिए

दयानन्द संस्थान द्वारा प्रकाशित

जन-ज्ञान (साप्ताहिक) के सदस्य बनाइए।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—कुमारी सत्या

मेरी दो अविस्मरणीय यात्राएं

***

दयानन्द संस्थान की कार्यकर्त्री होने के नाते मैं देश के अनेक स्थानों की यात्रा करती रहती हूँ। कुछ दिन हुए मेरे मन में विचार आया कि इन स्थानों में मैं जो कुछ देखती हूं, क्यों न उसमें जन-ज्ञान के पाठकों को भी सहभागी बनाऊं। इसी विचार के फलस्वरूप मैं ये पंक्तियां लिख रही हूं।

२७, २८, २९ फरवरी को वाराणसी में आर्यसमाज स्थापना शताब्दी-समारोह मनाया गया। दयानन्द संस्थान ने वहां अपना स्टाल लगाया। उसके प्रबन्ध के लिए मैं वहाँ गई। संस्थान के अध्यक्ष पं० भारतेन्द्रनाथ जी भी साथ थे। हम २५ फरवरी को प्रातःकाल सात बजकर पच्चीस मिनट पर जयन्ती जनता से रवाना हुए। अगले दिन प्रातः सात बजे वाराणसी रेलवे स्टेशन पहुंचे। वहां से सीधे रिक्शा पर डी. ए.-वी. कालेज के लिए प्रस्थान किया, जहां समारोह आयोजित था। स्टाल की व्यवस्था की। लगातार भागदौड़ के कारण प्यास लग आई, हालांकि ठण्ड काफी थी। पेय पदार्थ लेकर प्यास बुझाई। सायंकाल दशाश्वमेध घाट देखने गये। लम्बी सैर के बाद निवास स्थान को लौटे।

तीन दिन तक समारोह की चहल-पहल देखी। साहित्य-प्रेमी आर्य बन्धुओं को उनकी पसन्द की पुस्तकें दीं। अनेक कारणों से उपस्थिति आशा से कम थी, फिर भी जितना बन पड़ा, हमने वैदिक और आर्यसाहित्य जन-जन तक पहुंचाने का प्रयत्न किया।

पहली मार्च को दोपहर बाद लगभग १॥ बजे तक स्टाल का काम निपटाया। अन्तिम क्षण तक धर्म-पिपासु जनता का आग्रह था कि "वह पुस्तक चाहिए, वह पुस्तक चाहिए। क्या आपके पास वह पुस्तक नहीं, क्या आपके पास वह पुस्तक नहीं?" जैसा मैंने ऊपर लिखा, हमसे जितनी सेवा बन पड़ी, हमने की। काम निपटाकर बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय देखने गये। पं० मदनमोहन मालवीय की स्मृति हो आना स्वाभाविक था। विश्वविद्यालय के प्रांगण में विश्वनाथ मन्दिर है। उसे देखा। दीवारों पर देवी-देवताओं और ऋषि-मुनियों के चित्र एवं गीता के श्लोक अंकित हैं। मन्दिर देखने के बाद शॉपिंग के लिए बाजारों में घूमते रहे। ४-५ घण्टे का समय बीत जाने का पता ही न चला। बाद में दूसरा विश्वनाथ मन्दिर देखने गये। तब तक रात हो चुकी थी। मानस मन्दिर गये। कुछ ही क्षण उसकी रम्यता का आनन्द लिया था कि वह बन्द हो गया। उसकी दीवारों पर सम्पूर्ण रामचरितमानस अर्थ सहित अंकित है। अनेक चित्र हैं। रामायण पढ़ते समय की गोस्वामी तुलसीदास जी की मूर्ति है। मूर्ति अत्यन्त सजीव है। दस बजे के लगभग निवास स्थान को लौटे। भोजन किया और निद्रादेवी की गोद में चले गये।

अगले दिन प्रातःकाल पांच बजे उठे। नित्यकर्मों से निवृत्त होकर ६ बजे दशाश्वमेध घाट के लिए प्रस्थान किया। प्रयाग धाम माधव घाट से नाव में बैठकर दशाश्वमेध घाट तक गये और वहां से वापसी पर गोदालिया रोड आये। वहाँ से सारनाथ के लिये टैक्सी पकड़ी और आठ बजे के लगभग सारनाथ पहुंचे। यहां महाराजा अशोक के समय के दो विशाल स्तम्भ देखे। सच मानियेगा कि स्तम्भों की कारीगरी देखकर मुँह से अनायास ही निकला—वाह-वाह! कमाल कर दिया! सारनाथ मन्दिर की दीवारों पर भगवान् बुद्ध के जीवन और बौद्ध मत से सम्बन्धित चित्र खुदे हुए देखे। एक प्राचीन पुस्तकालय देखा। ऊपर मैं लिख चुकी हूं कि भारतेन्द्रनाथ जी (जिन्हें हम पिताजी के नाम से सम्बोधित करते हैं) हमारे साथ थे। संस्थान कार्यालय के कुछ अन्य कर्मचारी और पारिवारिक जन भी थे। सारनाथ मन्दिर के सामने सबका ग्रुप फोटो लिया गया। पूरा सारनाथ घूमने के बाद वाराणासी जंकशन पहुंचे। वहां से इलाहाबाद के लिये प्रस्थान किया। अगले दिन (दो मार्च) प्रातःकाल पांच बजे रेलगाड़ी इलाहाबाद पहुंची। संगम पर गये। यहां यमुना-गंगा का आपस में मेल होता है। पानी का अलग-अलग रंग साफ दिखाई देता है। घण्टे भर तक नौका विहार करते रहे। सूर्य अस्त हो चुका था। ६ बजे के लगभग इक्का करके आर्य समाज कटरा आये और वहीं डेरे डाल दिये। इलाहाबाद की यात्रा प्रारम्भ हुई। आनन्द भवन देखा—अन्दर तो खैर न जा पाये—रात जो हो चुकी थी। काफी रात बीत चुकी थी, जब आर्य समाज मन्दिर लौटे। अगले दिन अर्थात् ३ मार्च को उषःकाल में ही उठ बैठे। इलाहाबाद जंकशन पर पहुंचे और वहां से लखनऊ रवाना हुए। पौने दस बजे लखनऊ पहुंचे। सामान तो रक्खा स्टेशन पर और निकल पड़े शहर में घूमने। एक परिचित मित्र के यहां गये। वहीं स्नान और भोजन किया। "आर्यमित्र" के दफ्तर में गये—वहां कुछ काम भी था। मित्रों से बातें भी हुईं। वहां से भूल-भुलैया देखने गये। खासा मनोरंजन हुआ। चौक बाजार का चक्कर लगाया; शॉपिंग भी की। थक कर चूर हो चुके थे। ऐसे में भूख लगना स्वाभाविक था। सो डटकर शाम का चायपान हुआ। नाश्ता करके

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

फिर घूमने निकल पड़े। चिड़ियाघर और मछलीघर देखा। वहां से स्टेशन आये। रात के आठ बजे रेलगाड़ी दिल्ली रवाना हुई।

अगले दिन पौने सात बजे प्रातःकाल हमने अपने आपको दिल्ली जंकशन पर पाया। वहां से सीधे हरध्यान सिंह रोड़ (करोलबाग) के लिये रवाना हुए। जाते ही स्नान किया और फिर प्रातराश। उसके बाद नित्यप्रति का काम काज शुरू हो गया। बड़ी मुश्किल से समय निकालकर ये पंक्तियां लिख पाई हूं।

चौरासी खम्भों वाली यज्ञशाला के दर्शन

चार अप्रैल। अभी प्रभात के चार भी नहीं बजे थे कि हम नींद त्याग कर उठ बैठे। शौच-स्नानादि से निवृत्त हुए। अल्पाहार किया। पौने पांच बजे दयानन्द संस्थान की कार पर एटा रवाना हुए। पं० भारतेन्द्रनाथ जी, उनकी धर्म पत्नी श्रीमती राकेशरानी, पुत्री श्रीमती ज्योत्स्ना आदि भी साथ थे। हमारी यात्रा ३३७-ए, सूर्यनगर से प्रारम्भ हुई। गाजियाबाद, दादरी, बुलन्दशहर और अलीगढ़ होते हुए दस बजकर पच्चीस मिनट पर आर्ष गुरुकुल एटा पहुंचे। यहां का सबसे बड़ा आकर्षण है चौरासी खम्भों की यज्ञशाला, जो संगमरमर से बनाई जा रही है। जब हम पहुंचे, सभा हो रही थी। यह सभा वार्षिकोत्सव के अंग के रूप में आयोजित थी। गुरुकुल के आचार्य ज्योतिस्वरूप जी ने भारतेन्द्र जी और राकेशरानी जी का (प्रतिदिन व्यवहार में लाये जाने वाले शब्दों में कहूं तो पिताजी और अम्मां जी का) भावभीना स्वागत किया। उन्हें उपहार रूप में फल और मिठाइयाँ भेंट की गईं। हार पहनाये गये, चन्दन का तिलक लगाया गया और पुष्प वर्षा की गई। भोजन आदि से निवृत्त होकर १२॥ बजे दोपहर बाद हमने गुरुकुल से विदा ली। दिल्ली से एटा तक की यात्रा के वर्णन में गाजियाबाद के समीप वर्ती एक मनोरम स्थल का वर्णन करना भूल गई, जिसकी अब चर्चा कर रही हूं। गाजियाबाद पार करते ही एक नहर देखी, जिस पर लिखा था—पंचवर्षीय योजना नहर। अतीव मनोहारी दृश्य था। हमने वहां १०-१५ मिनट के लिये गाड़ी रोककर पानी का उतार-चढ़ाव देखा। दिल-दिमाग ताजा हो गये। जी में तो आया कि यहीं रुक जायें और पिकनिक का आनन्द लें। लेकिन फिर चौरासी खम्भों वाली यज्ञशाला के दर्शन कैसे करते? बच्चे तो सारा दिन वहीं गुजारने का हठ करने लगे। आखिर उन्हें सन्तरे देकर और चाय पिलाकर परचाया और तब जाकर एटा की यात्रा पुनः प्रारम्भ हो सकी। अस्तु, मैं गुरुकुल से विदाई की चर्चा कर रही थी। एटा से हम आगरा के लिए रवाना हुए। आगरा दिल्ली से १६४ किलोमीटर है। २॥ बजे के आसपास वहां पहुँचे। ताजमहल देखने गये। इसे शाहजहाँ ने अपनी बेगम मुमताजमहल की याद में बनवाया था। ताजमहल संसार के सुन्दरतम भवनों में से एक है। इसके बनने में लगभग बीस वर्ष लगे। लगभग बीस हजार मजदूर बराबर काम पर लगे रहे। सारा संगमरमर मकराने की खानों से मंगवाया गया। करोड़ों रुपये खर्च हुए। इसमें मुमताज और शाहजहाँ की कब्रें हैं। ताजमहल देखने के बाद हमने अकबर का मकबरा देखा। आगरा से हम मथुरा गये। आर्यसमाज मन्दिर में ठहरे। यमुना नदी के घाट देखते-देखते गुरुधाम पहुँचे। कभी यहां दण्डी स्वामी विरजानन्द जी रहते थे। वहां ताला लगा मिला, इसलिए अन्दर न जा सके। इसके बाद हमने वह जेल देखी, जहाँ भगवान् कृष्ण का जन्म हुआ था। बाद में मुसलमानों ने इसे मस्जिद का रूप दे दिया। बच्चों ने फिर खाने-पीने की इच्छा प्रकट की, जिस पर हमने पेड़े, खुरचन और रसमलाई खरीदी। सबने तृप्त होकर छका। मथुरा से हम वृन्दावन पहुंचे। मन्दिरों का चक्कर लगाया। एक-दो मन्दिरों को भी देखा। बिहारीजी के मन्दिर के साथ एक मन्दिर देखा, जिसमें सोने का हाथी रखा है। आकृति हूबहू हाथी से मिलती है। इसे वर्ष में एक बार बाहर निकाला जाता है और इस पर भगवान् कृष्ण की सवारी का जुलूस निकाला जाता है। वृन्दावन की सैर कर मथुरा लौटे। वहां से कोसीकलां, पलवल, होडल, गुड़गांव, बल्लभगढ़, फरीदाबाद, इन्द्रप्रस्थ और बदरपुर होते हुए रात के ११ बजकर १० मिनट पर वापस सूर्यनगर पहुँचे।

अन्त में मेरी प्रभु से यही प्रार्थना है कि जैसे हमारी ये दो यात्राएं सफल हुईं, वैसे ही हम सबकी जीवन-यात्राएं सफल हों। तथास्तु।

भगवन्!

अमर प्राण तेरा, अमर गान तेरा,
अमर ज्ञान तेरा, अमर नाम तेरा,
अमर तू ही सब का, है त्राता विधाता,
तू ही प्राण दाता, है शक्ति प्रदाता,
तेरे नाम की ही, माला निरन्तर,
सभी ने जपी है, सदा भूल अन्तर,
तू पालक सभी का, तू साधक सभी का,
सभी में रमा तू, सहारा सभी का,
तेरो राह पर चल के मिलता किनारा,
तेरे याद-बल से, बता कौन हारा?
ओ प्राणों के दाता, यह नैया भंवर में,
पड़ी है इसे अब, किनारे लगा दे!
यह तेरी है दुनिया, तुझी को मिटाती,
तू इस को डगर, रोशनी की बता दे।
हृदय में है छाया, जो काला अन्धेरा,
उसे दूर कर, फिर हृदय जगमगा दे,

—भारतेन्द्रनाथ

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

विज्ञान वार्ता

१. विडियो टेप के उपकरण

२. भवन-निर्माण के लिए पट्टियाँ तैयार करने वाला यंत्र

३. पानी की शुद्धता की तत्काल जांच के लिए उपकरण

विडियो टेप के लिए उपकरण

कैलिफोर्निया की एक फर्म, गायर प्रोडक्ट्स, ओडेटिवस, इन्कारपोरेटिड, ने कैसेट प्रोग्रैम लोकेटर नामक एक नया उपकरण तैयार किया है, जिसकी सहायता से विडियो टेप रिकार्ड का प्रयोग करने वाले लोग विडियो टेप के ठीक उसी अंश को चालू कर सकते हैं, जिसे वे सुनना चाहते हैं। अभी तक टेप के किसी विशेष अश पर आने के लिए काफी अनावश्यक अंश को भी चलाना पड़ता है। किन्तु अब इस नये उपकरण द्वारा टेप के इन अनावश्यक अंशों को छोड़ कर सीधे इच्छित अंश पर पहुंचा जा सकता है। उदाहरण के लिए, रसायन विज्ञान का अध्यापक टेप अंकित अनेक प्रयोगों में से किसी एक को भी चुन सकता है। इसके लिए उसे कुछ बटनों के एक सेट पर ४ अंकों वाली एक संख्या टेप करके 'सर्च' बटन दबा देना पड़ेगा। इससे वह उपकरण चालू हो जायेगा। सर्च बटन को एक बार फिर दबा देने पर इच्छित अंश को सुना जा सकेगा। किसी अन्य अंश को प्राप्त करने के लिए उसे इच्छित अंश के अनुरूप एक अन्य संख्या को टेप करना पड़ेगा।

कैसेट प्रोग्रेम लोकेटर एक दूरस्थ नियन्त्रण उपकरण है, जो एक तार द्वरा विडियो टेप कैसेट प्लेयर और रिसीवर से सम्बद्ध होता है। यह किसी मेज पर रखने पर केवल ७×९ इंच जगह घेरता है। इसे अन्य दोनों मशीनों से २५ फुट तक की दूरी पर रखा जा सकता है।

लोकेटर के पर्दे पर दिखाई पड़ने वाली संख्याएं रिकार्ड प्लेयर बजाते समय टेप की स्थिति की सूचक होती है।

इस नये उपकरण की सहायता से शिक्षक अविच्छिन्न गति से पढ़ाने का क्रम जारी रख सकता है। इसके लिए अब उस अंश तक पहुँचने के लिये टेप को आगे-पीछे चलाने की आवश्यकता नहीं रहेगी।

भवन निर्माण के लिए पट्टियां तैयार करने वाला यन्त्र

अमेरिका में फ्लोरिडा की फर्म, मोडुलोक इन्कारपोरेटेड, एक ऐसी मशीन बना रही है, जो एकाकी परिवार के मकानों से लेकर स्कूलों और दफ्तरों तक के भवनों में दीवारों, फ़र्शों और छतों का निर्माण करने के लिए कंक्रीट की बड़ी-बड़ी पट्टियां अति शीघ्रता से तैयार करती है। इसका नाम डाइनालोक कंक्रीट पैनेल मशीन है।

निर्माताओं का कहना है कि इस मशीन द्वारा बड़ी शीघ्रता और सरलता से कम लागत वाली कंक्रीट की पट्टियाँ तैयार की जा सकती हैं। ये पट्टियां अनेक प्रकार की भी हो सकती हैं। पट्टियों का आकार ५×१२ फुट होता है और उनकी मोटाई ४ से १२ इंच तक होती है।

निर्माताओं का कहना है कि यह पूर्णतया एक नया उत्पादन है और वर्षों के व्यावसायिक अनुभव के उपरान्त विकसित हुआ है। इसका पूर्ण रूप से परीक्षण किया जा चुका है। यह भवन-निर्माताओं, वस्तुशिल्पियों और इन्जिनीयरों के लिये बहुत उपयोगी है।

पानी की शुद्धता की तत्काल जांच के लिए उपकरण

अमेरिका में न्यूजर्सी की एक फर्म, वुल ऐण्ड राबर्ट्स इन्कारपोरेटेड, ने सिगरेट के आकार का एक उपकरण तैयार किया है, जिसके द्वारा पानी की शुद्धता की तुरन्त जाँच की जा सकती है। यह उपकरण कांच का बना होता है, और इसे प्रयुक्त करने के बाद फेंका जा सकता है।

'केमेट' नामक इस उपकरण को अप्रशिक्षित व्यक्ति भी बड़ी आसानी से प्रयुक्त कर सकता है। इसे जांचे जाने वाले पानी में केवल डुबा देना होता है और प्लास्टिक के एक स्नैपर द्वारा उसके सिरे को तोड़ देना होता है। ऐसा करने पर पानी का रंग बदल जाता है। पानी के इस रंग का मिलान एक छपी हुई रंग-तालिका के रंग से करके यह पता लगाया जा सकता है कि पानी शुद्ध है या नहीं। निर्माताओं द्वारा यह रंग तालिका भी इस उपकरण के साथ ही सुलभ की जाती है।

निर्माताओं का कहना है कि इस सरल विधि द्वारा अनुभवहीन व्यक्ति भी बहुत ही कम पैसे खर्च करके पानी का सही-सही विश्लेषण कर सकता है। विद्युत् संयंत्रों, मत्स्यपालन केन्द्रों, जलशुद्धीकरण कारखानों और रसायन-संसाधन संयंत्रों के लिए यह अतीव उपयोगी है। इसके द्वारा पानी में घुले ऑक्सीजन, अमोनिया, नाइट्रोजन, क्लोराइन, क्रोमो और लौह तत्वों की जांच की जा सकती है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—दिग्दर्शनानन्द

जमाना रंग बदलता है और आदमी वह है जो जमाने के साथ चलता है। आज फैशन का है जमाना आपको भी चाहिए जमाने के रंग-ढंग अपनाना। आप जिज्ञासानन्द जी, अभी भी पुरानी ही ढपली बजा रहे हैं। इस जमाने में भी पुरानी ही परम्परा निभा रहे हैं।' फरमा रहे थे सदानन्द।

जिज्ञासानन्द बोले 'ऐसा क्या हो गया है मेरे भाई कि तुम्हारे मुख से गूंज रही है यह बेवक्त की शहनाई।'

'क्या आप नहीं देख रहे हैं कि अब पैंट, बुश-शर्ट का रिवाज भी पुराना पड़ गया है और पैन्ट की जगह आ गया है बैलबाटम। आपने देखा ही होगा अनेकों धर्म धुरंधरों को भी बैलबाटम धारे।'

जिज्ञासानन्द जी ने बीच में ही ब्रेक लगायी और फर्माया 'अरे हां भाई हमने भी उस दिन था निहारा एक बड़े धर्मरत्न जी का सुपुत्र था हमारे कार्यालय में पधारा। हमने उसे पैरों में अनोखा सा वही वस्त्र धारे देखा था तो पूछा था 'भइया इसे ही कहते हैं न बैलबाटम।' और उसने हमें बताया था अंकल आपने ठीक ही कहा था। किन्तु हम तो ठहरे जिज्ञासु जन तो हमने पूछ ही लिया कि इसका अर्थ कहीं जानवर के गले में पड़ी घंटी तो नहीं होता अंग्रेजी में। वह कुछ सकुचाया तो फिर हमने उसे अपनी अकल शरीफ के अनुसार था बताया 'चिरंजीव! बैल माने होता है न घंटी। जानवर के गले में बंधी हुई घंटी भी ऊपर से संकरी और नीचे से चौड़ी ही होती है, ठीक तुम्हारे इस पग वस्त्र सी ही तरह। वह कुछ मुस्कराया और उसने बताया।

अंकल, इसमें हैं बड़े-बड़े गुण। चाहे लड़का पहने या लड़की। पति पहने या पत्नी। दोनों के काम आ जाता है यह वस्त्र और फिर इस पर शर्ट भी दोनों को ही भाती है।'

हमने उससे कहा कि यह तो सही है किन्तु बेटा इससे नर-नारी में भेद-भाव तो नहीं हो पाता।'

तभी बीच में सदानन्द ने एंड़, लगाई और बोले 'जिज्ञासानन्द जी, आप भी न जाने किस जमाने की सोच रखते है जो मन में ऐसे-ऐसे संकोच रखते है। अन्तर-मन्तर में क्या धरा है। इन्सान की बुद्धि तो बड़ी उर्वरा है। बुद्धि के किवाड़ बंद करने मे क्या धरा है! आज तो हर चेहरा का ही पृथक् है फैशन। अब तो जो गंजे है वे भी नकली केश लगाकर सिर की शोभा बढ़ाते हैं, इसी भांति नकली बालों का जूड़ा महिलाएं लगाती हैं। सिर को पूरा मधु मक्खियों का छत्ता बनालेती हैं।'

यह तो ठीक है सदानन्द जी, किन्तु हमने तो कुछ उलटा भी है देखा। अनेकों देवियां केश कटा रही हैं और अपने आपको बुढ़ापे में भी युवकों सा जता रही है। क्या इस प्रकार वे अपनी गरिमा को नहीं गिरातीं।'

जिज्ञासानन्द जी, छोड़िए न पुराना पन बनिए गा माडर्न! यही तो है आज का जीवन दर्शन।

सदानन्द जी बात तो हम ने आपकी मानी किन्तु हमारी कुछ शंकाएं है उनका कर दें तनिक समाधान। इनमें से एक शंका यह है कि 'क्या केश कटाकर स्वयं को लड़का सा जताने से वे लड़का बन जाती हैं। क्या वे पुरुष के समान स्वयं को दिखाने से पुरुष हो जाती हैं। क्योंकि इस सब के बावजूद उनको स्वयं को कुमारी या श्रीमती ही कहलाना पड़ता है। अपने सिर पर नाम तो पति देव या पिता का ही लिखाना पड़ता है। स्वयं को किसी न किसी की पुत्री या पत्नी ही जताना पड़ता है। क्या आपने ऐसा भी नुस्खा किया है ईजाद कि जिससे रहे न यह भी अपवाद।'

जिज्ञासानन्द जी, यह तो हम नहीं कर पाए किन्तु इतना सही है कि हममें कई ऐसों को अपनी हट्टी का चौधरी बना दिया है कि जो नर से बन गए है देखने भालने में नारी। मूंछें तो सफाचट कराते हैं, किन्तु बाल लड़कियों के समान तनिक लम्बे ही रखाते है। गीत तो भारतीय वेशभूषा को के अलापते हैं किन्तु अपने पहनावे व खान पान में यूरोपियनों को भी पछाड़ते है।

तो क्या आपकी 'हट्टी' में सभी ऐसे है सदानन्द जी, जिज्ञासानन्द जी ने जिज्ञासा व्यक्त की। इस पर परमानन्द जी ने बताया। नहीं, अभी हमारी प्राइवेट लिमिटेड में एडवान्स होने का नुस्खा शत-प्रतिशत तो कारगर नहीं हो पाया। किन्तु आप विश्वास रखिए कि हम पग पीछे नहीं धरेंगे। जब भी हमारा वश चलेगा ऐसा ही करेंगे। क्योंकि हमारे डायरेक्टरों में से कई पहले रखते थे बड़ी-बड़ी मूंछ। फिर वे तितली कट बनी और अब कर गई हैं कूच।

जिज्ञासानन्द ने पूछा तो बताइए कि वह समय कब आएगा और सदानन्द जी ने फरमाया हम अभी से क्या बताएं यह तो समय ही बताएगा।

घर को स्वर्ग बनाने के लिए
"धरती का स्वर्ग : गृहस्थाश्रम"
पढ़िए। मूल्य १ रु० ५० पै०

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

की महती उपयोगिता देखकर उसे एक देवता का रूप प्रदान कर दिया दिया गया है। प्रतिदिन सूर्य को जल देने से प्रातःकालीन गुणकारी किरणें हमारे नेत्रों और शरीर पर पड़ती हैं। उनसे सारे शरीर पर स्वास्थ्य वर्द्धक प्रभाव पड़ता है। भिन्न-भिन्न नदियों के जल में वैज्ञानिक लोग उपयोगी क्षारों का सम्मिश्रण बतलाते हैं। इनमें स्नान करने तथा इनके जल का पान करने से बिगड़ा हुआ स्वास्थ्य भी सुधरता है। कब्ज से छुटकारे के लिये उषः पान का विधान है।

कुछ वृक्ष तथा फल मनुष्य के स्वास्थ्य के लिए विशेष रूप से उपयोगी हैं। उनके फल फूल पत्तियों तक को धर्म का अंग बनाकर महत्त्व दिया गया है। पीपल बेल, बरगद, तुलसी, आंवला आदि के वृक्ष तथा फलों को मानव मात्र के स्वास्थ्य के लिए उपयोगी मानकर धर्म में सम्मिलित किया गया है। हमारे यहाँ तुलसी का पौधा धार्मिक दृष्टि से पूजा जाता है। आधुनिक विज्ञान ने अब यह स्पष्ट प्रमाणित कर दिया है कि तुलसी में ऐसे चमत्कारी रासायनिक गुण भी हैं, जिनसे शारीरिक और मानसिक आरोग्य प्राप्त किया जा सकता है। तुलसी के संसर्ग से वातावरण शुद्ध रहता है। मलेरिया के विषैले कीटाणु नष्ट होते हैं। मनुष्य की मृत्यु की निकटता में तुलसी मिश्रित जल मिलाने का विधान है जिससे आत्मा पवित्र हो और सुख-शान्ति प्राप्त हो। तुलसी कफ दूर करने वाली, मूत्रावरोध दूर करने वाली, रक्तशोधक हैं। हमारे यहाँ वृक्षों में चेतनता मानी गई है। पीपल और आंवले की परिक्रमा का विधान है।

हमारे यहां चरणामृत में गंगाजल का उपयोग होता है। गंगाजल में शारीरिक शक्ति बढ़ाने की अद्भुत क्षमता है। रोगियों तथा दुर्बल पुरुषों के लिए टॉनिक है। अजीर्ण रोग, अजीर्ण ज्वर संग्रहणी, राजयक्ष्मा, दमा इत्यादि सब रोग नष्ट हो जाते हैं गंगा स्नान करने से मस्तक के समस्त रोगों तथा चर्म रोगों का नाश होता है। यदि गंगाजल में यह रोग-निवारणी दिव्य शक्ति न होती, वो हिन्दू क्यों इसको इतनी महत्ता देते ?

इस प्रकार हिन्दू धर्म के अन्तर्गत असंख्य ऐसे तत्त्वों का समावेश किया गया है जो आध्यात्मिक लाभ के साथ-साथ जिन्दगी में उपयोगी और लाभदायक भी हैं: सब लाभदायक बातों को एक आदर्श जीवन में उतारने के लिए उन्हें धर्म का रूप दे दिया गया है।

क्या आप ३०१) भेजकर आजीवन सदस्य नहीं बन सकते ?

क्या आप के मन में कभी यह इच्छा नहीं जागती कि आपका भी अपना कोई अच्छा पत्र हो ?

भूलिए नहीं—शताब्दी वर्ष का उपहार जन-ज्ञान साप्ताहिक—आपके सहयोग की राह देख रहा है—कैसे भी दें, पर ३०१) भेजकर हमें आगे बढ़ने में सहयोग दें।

—संपादक

संस्थान के नए प्रकाशन

१. आर्याभिविनय

काव्यमय व्याख्या सजिल्द २.५०

अजिल्द १.५०।

◆

२. वैदिक गृहस्थाश्रम : सजिल्द

पं० विश्वनाथ विद्यामार्तण्ड

मूल्य ६ रु०

◆

३. वैदिक गीता (पद्यानुवाद)

मूल्य १ रु०

◆

४. दयानन्द चित्र दर्शन

मूल्य २० रु०

किन्तु प्रचार के लिए

अभी मूल्य १५ रु०

◆

५. संस्कार विधिः

राज संस्करण बड़ा साइज, कपड़े की जिल्द

मूल्य ६ रु०

सादी जिल्द, मूल्य ५रु०

◆

शीघ्र मंगाइए

दयानन्द संस्थान, नई दिल्ली-११०००५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—डा० योगानन्द शास्त्री

सच्चा आचरण

* * * *

संसार में रह रहे प्राय: प्रत्येक व्यक्ति के सामने अनेक ऐसे अवसर आते हैं, जबकि वह द्विविधा में पड़ा हुआ किंकर्त्तव्य विमूढ़ सा बन जाया करता है। वह एक कार्य को करने के लिए सोचता है कि मुझे यह करना चाहिए और वह उस कार्य को करने के लिये तैयार हो जाता है, किन्तु दूसरे ही क्षण उसे विचार आता है कि मुझे यह कार्य तो नहीं करना चाहिए। इस प्रकार 'करूं न करूं' के इस विचित्र भूल भुलैय्या में पड़कर वह अपना पर्याप्त अमूल्य समय बिता देता है और इस पर भी कई बार परिणाम ज्यों का त्यों बना रहता है।

मनुष्य जब तक मनुष्य रहेगा, देवता या कुछ और नहीं बन जाता तब तक अल्पज्ञ होने के कारण उसके मन में द्विविधा का बना रहना स्वाभाविक है। किन्तु आखिर संसार में कुछ तो करना ही है। फिर क्यों न हम ऐसा व्यवहार करें जिससे कि हम दुनियां में वास्तविक जीवन जी सकें।

प्राय: यह देखा जाता है कि एक ही कार्य को एक व्यक्ति बिल्कुल ठीक मानता है तो दूसरा व्यक्ति उसी कार्य को बिल्कुल गलत और अशोभनीय बतलाता है। एक आचरण एक व्यक्ति की दृष्टि में सच्चा और सभ्य आचरण है तो वही दूसरे की नजरों में कतई असभ्य और निकम्मा आचरण माना जाता है। ऐसी अवस्था में किसी कार्य एवं आचरण को बिल्कुल ठीक और सर्वमान्य कह देने का साहस एक दम कर लेना थोड़ा कठिन पड़ जाता है। ऐसी द्विविधापूर्ण स्थिति में केवल एक ही कसौटी ऐसी हो सकती है जो हमें निणय तक पहुंचा सकती है। वह कसौटी है— अन्तरात्मा की आवाज। यह एक अटल सत्य है कि जो आचरण सचाई पर आधारित होगा, उस आचरण में हमें आन्तरिक सन्तुष्टि होगी और उसको करते हुए हमारा उत्साह बढ़ेगा, और यदि आचरण झूठा होगा तो मन में भय शंका और लज्जा होगी तथा उसको करते समय उत्साह बढ़ने की अपेक्षा टूटेगा तथा मन में घबराहट होगी।

कई बार देखा जाता है कि बुराई को बार बार दोहराने से वह आचरण के रूप में आकार सामान्य बात बनकर रह जाती है। किन्तु इसका यह अभिप्राय नहीं कि वह बुराई ही नहीं रहती। वह सामान्यतया भले ही देखने में बुराई न लगती हो, परन्तु उसके परिणाम बड़े ही भयंकर होते हैं। ऐसे कार्य को योगिराज श्री कृष्ण जी के—शब्दों में इस प्रकार कहा जायेगा—'यत्तदग्रे ऽमृतमिव परिणामे विषोपमम्।' अर्थात् कई कार्य देखने में बड़े ही अच्छे होते हैं किन्तु उनका परिणाम जहर के समान होता है। कार्य का परिणाम भी आचरण की परख के लिए एक सच्ची कसौटी है।

सच्चे आचरण की परख इस बात में नहीं कि दुनियावी लोग अधिक संख्या में उसको मानने वाले है, अथवा उसमें दुनिया की वाह-वाह अधिक है, अपितु सच्चे आचरण की परख तो इस बात में है कि उस आचरण का करने वाला दुनियावी विरोध होते हुये भी उस आचरण पर आगे बढ़ता जाता है वा नहीं। यदि तो कार्य ठीक है और उस पर हो रहा आचरण भी सच्चा है तो यह स्वाभाविक है कि उसका करने वाला लोगों के विरोध की उपेक्षा करके भी आगे बढ़ता चला जायेगा। कार्य की श्रेष्ठता और आचरण की सच्चाई उसे इतना दृढ़ बना देगी कि वह अपने पथ से तनिक भी नहीं डगमगायेगा।

किसी भी कार्य की कठिनाई को देखकर अथवा उस सम्बन्ध में लोगों की मत भिन्नता से घबड़ाकर उस कार्य को छोड़ हाथ पर हाथ रखकर बैठ जाना महामूर्खता है। आत्मा के अनुकूल कार्य में चाहे सारी दुनिया का भी विरोध क्यों न हो उसको अनसुना करके कार्य को करते चले जाना ही सच्चा आचरण है।

अपने एक लाभ को छोड़ देने से यदि उसके कारण अधिक लोगों का भला होता है तो उस को छोड़ देना ही सच्चा आचरण है। मेरे द्वारा अपने प्राण होम कर देने से यदि सम्पूर्ण देश की स्वतंत्रता चिरकाल तक स्थिर हो सकती है, अथवा राष्ट्र का और कोई बड़ा उपकार हो सकता है तो मेरा इससे बढ़कर और कौन सा सच्चा आचरण होगा कि मैं उन क्षण भगुर प्राणों का मोह छोड़कर उन्हें राष्ट्र की बलिवेदी पर न्यौछावर कर दूं। मैं समझता हूं उन वीर सैनिकों का वह सबसे अधिक सच्चा आचरण होता है जो वे रष्ट्र रक्षा के लिए खून पसीना एक करते हुये अन्त में राष्ट्र की बलिवेदी पर अपने प्राणों तक होम दिया करते हैं। उनका यह आचरण सर्वोपरि सच्चा आचरण है।

सच्चे आचरण की परिभाषा यदि हम एक ही बात में कहना चाहें, तो वह इस प्रकार कही जा सकती है— आत्मन: प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्' अर्थात् प्रत्येक व्यक्ति को दूसरों के साथ ऐसा ही आचरण करना चाहिए

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जैसाकि वह दूसरों से कराना चाहता है। यह बात संसार के लिए भारतीय संस्कृति की एक बहुत बड़ी देन है। आज शान्ति स्थापित करने के लिए संसार भर में न जाने कितना धन व्यय किया जाता है, किन्तु यदि संसार का प्रत्येक व्यक्ति भारत के ऋषियों की इस अमूल्य देन को अपने अन्तःकरण मे थोड़ा सा भी स्थान दे तो संसार के वर्तमान अशान्त और भयावह ढर्रे का नक्शा ही बदल सकता है। मनुष्य जैसा अपने साथ चाहता है यदि वैसा ही दूसरों के साथ व्यवहार करे तो वही स्थिति होगी कि 'न रहेगा बांस और न बजेगी बाँसुरी' अर्थात् इस भावना से यदि एक दूसरे के प्रति विरोध ही नहीं रहेगा तो फिर लड़ाई झगड़े की तो बात ही क्या ?

यह सब हो सकता है, किन्तु उसी अवस्था में जबकि दोनों ओर से इस दिशा में जी जान से प्रयत्न करें। एक पक्ष तो इस पर बिल्कुल अटल हो जाये और दूसरा पक्ष उसकी भल-मानसी का अनुचित लाभ उठाकर उसे अपने शिकंजे में कसना चाहे तो उस समय उस पक्ष का जो कि उदारता और शान्ति से काम ले रहा है, यह कर्त्तव्य हो जाता है कि वह समय को पहचाने और उस व्यक्ति अथवा समाज की ईंट का जवाब पत्थर से दे जो कि उसकी उदारता का अनुचित लाभ उठाना चाहता है। उस समय उसका सच्चा आचरण यही है कि वह अपने आत्म रक्षा के जन्म सिद्ध अधिकार की रक्षा के लिए तथा मानवता और मानव सभ्यता की रक्षा के लिए शत्रु को मजा चखाये।

आचरण की सच्चाई का सम्बन्ध जहाँ एक ओर मूलतः हमारे निर्मल अन्तःकरण से है वहाँ दूसरी ओर आचरण की वास्तविकता का सम्बन्ध आत्मा के माध्यम से सामयिक परिस्थिति से भी मानना पड़ेगा। यदि एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र पर आक्रमण करे और आक्रमण की लपेट में आया हुआ राष्ट्र शान्ति और अहिंसा की रट लगाये तो उसका यह आचरण बिल्कुल झूठा और निकम्मा आचरण माना जायेगा। सच्चा आचरण इसका नाम नहीं कि दूसरा तो हमारे सिर पर जूतों सहित चढ़ता चला जाये और हम थोथे आदर्शों को लेकर उसके आगे हाथ जोड़े खड़े रहें। अहिंसा का व्यवहार उन लोगों के साथ चाहिये जो भले और सच्चे हों, परन्तु उन लोगों के साथ अहिंसा का बर्ताव जो धर्मान्धता, बर्बरता और अंधे जोश के मद में लूट पाट और मारकाट करके हमारे घरों में खून की धार बहा दें, उन लोगों से अहिंसा और शिष्टाचार का व्यवहार करना मूर्खता ही नहीं अपितु पाप भी है। ऐसे लोगों के साथ नम्रता का व्यवहार करना सच्चे आचरण के रहस्य को न समझना ही है।

किसी प्राणी को दुःख मत दो और किसी भी छोटे से छोटे जीव को मत सताओ, मैं समझता हूँ कि आचरण की इस सचाई से किसी को इनकार नहीं, परन्तु संसार के घटना चक्र को देखकर बड़े दुःख से कहना पड़ता है कि सांसारिक व्यवहार और राजनीति में बुरे लोगों के साथ उदारता करने में हमेशा धोखा खाना पड़ता है।

इतिहास इस बात का साक्षी है कि न्याय के ऊँचे सिद्धान्त और आत्म रक्षा के जन्मसिद्ध अधिकार के आगे अहिंसा अथवा दया की न कभी किसी मनुष्य ने परवाह की है और न प्रकृति ने ही। परमात्मा जिसे सच्चा-न्यायकारी कहा जाता है अथवा यों कहिए कि जिससे बढ़कर कोई सच्चा न्यायकारी है ही नहीं वह स्वयं मनुष्य को भले बुरे कर्मों का फल देते समय ऐसी बातों की परवाह नहीं करता। उसके द्वारा भेजी गई मृत्यु उस समय की मानव परिस्थितियों की कहाँ परवाह करती है। वह नहीं सोचती कि माँ के प्यार से बिछुड़ा बच्चा भूख से तड़प कर बिलबिलाया करेगा और नन्हा सा प्राणी विकराल काल के थपेड़े खाकर प्राण तक गँवा बैठेगा। फिर सत्ता के नशे में चूर मनुष्य तो साम्राज्यवाद की लिप्सा को कैसे छोड़ सकता है।

यदि कोई लुटेरा अथवा अत्याचारी करने वाली जाति किसी दूसरे देश अथवा जाति को गुलामी की जंजीर में जकड़ कर उसे पंगु बनाना चाहती है, तो उसदेश के नवयुवकों का यह कर्त्तव्य हो जाता है कि वे अपनी चौड़ी छाती और विशाल भुजाओं से उस विनाशकारी बाढ़ को रोकने के लिए दीवार बन कर खड़े हो जाएँ, अपनी तलवार की बिजलियों और बरछे भालों की अग्नि शिखाओं से उसे सुखा जला कर भस्म कर दें। जन राष्ट्र पर आपत्ति के बादल मँडरा रहे हों, देशवासियों का सच्चा समय में जबकि आचरण इसी में है कि वे जैसे भी हो उन आपत्ति के मंडराते हुए बादलों को अपने बाहुबल और बुद्धिबल से छिन्न भिन्न कर दें। यथायोग्य व्यवहार अर्थात् जैसे को तैसा की नीति के आधार पर—आत्मा की आवाज के आधार पर आचरण करना ही वास्तव में सच्चा आचरण है।

आर्यसमाज शताब्दी पर दयानन्द संस्थान का

अनुपम उपहार

वन्दना के स्वर

[सम्पादक श्री क्षेमचन्द्र 'सुमन']

हिन्दी साहित्य के प्रायः सभी मूर्धन्य कवियों द्वारा महर्षि दयानन्द पर लिखी कविताओं का अनुपम संग्रह।

बड़ा साइज : बढ़िया कागज
पृष्ठ लगभग २५० : मूल्य ८)

डिलक्स लाइब्रेरी संस्करण : १५)

आज ही आदेश भेजें

दयानन्द-संस्थान

नई दिल्ली-११०००५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हम किस रास्ते पर चलें ?

सुप्रसिद्ध विचारक इंगरसोल का कथन है—"एक रास्ता है—तंग रास्ता, जिस पर स्वार्थी लोग अकेले चलते हैं, जिस पर उनके बच्चे और पति पत्नी भी साथ नहीं चलते। मिथ्या विश्वास और कड़वे अहंकार की यह तंग सड़क है। यदि इस रास्ते पर तुम्हें एक फूल भी दिखाई दे जाए, तो उसे न उठाओ। यह लोभ का फूल है। इसके हरेक पत्ते में एक सांप छिपा है।

दूसरा रास्ता है—विशाल रास्ता। मुझे चौड़ा रास्ता दो, जो कम से कम इतना चौड़ा अवश्य हो कि हम सब उस पर मिलकर चल सकें। चौड़ा रास्ता, जहां पक्षी आते हों, जहां सूर्य चमकता हो और जहां पानी के झरने कल-कल करते हों।

आओ, हम सारे संसार के साथ चौड़े रास्ते पर चलें, विज्ञान और कला के साथ संगीत और नाटक के साथ, उस सबके साथ जो प्रसन्न करता है, जो धड़कन पैदा करता है, जो संस्कृत बनाता है और जो शांति प्रदान करता है। आओ, हम बच्चों, नारियों, युवकों और मित्रों के साथ इस चौड़ी सड़क पर चलें और उस सम्पूर्ण आनन्द एवं प्रेम के साथ, जो जीवन के उषःकाल और जीवन की गोधूलि वेला के विचित्र दिन में हमें प्राप्त हो सकता है।"

तो जीवन का सही रास्ता है उदारता और गलत रास्ता है संकीर्णता। उदारता में विस्तार है, संकीर्णता में जकड़न, घुटन।

देश के लिए

असहयोग आन्दोलन के समय की बात है। देशबन्धु चित्तरंजनदास कुछ योजना बनाने में संलग्न थे। इसी समय एक महाजन जिसका देशबंधु पर लगभग पांच हजार रुपया उधार था, वसूली के लिए आया। देशबंधु ने उत्तर भिजवाया कि कल आना, आज मुझे अवकाश नहीं। इस पर महाजन बड़ा क्रुद्ध हुआ, बड़बड़ाने लगा और बाहर ही जमकर बैठ गया—यह कहकर कि "मैं आज धन लिए बिना यहां से नहीं हटूंगा। 'उसी समय एक बहुत बड़े ताल्लुकेदार आ गये। वे देशबंधु को अपने मुकद्दमे में वकील रखना चाहते थे। पर उनको तो देशप्रेम की ही धुन थी। उन्होंने साफ इनकार कर दिया कि मुझे अभी मुकमा लेने की फुर्सत नहीं। ताल्लुकेदार ने बहुत खुशामद की। एक लाख रुपये देने की बात भी कही परन्तु देशबंधु टस से मस न हुए। उन्होंने राशि दो लाख रुपये तक बढ़ायी परन्तु देशबंधु का एक और सुनिश्चित तथा अटल उत्तर था—'मुझे देश के कार्य से अवकाश नहीं।' अन्ततः वे निराश होकर चले गये। महाजन यह सब बातें सुनकर बड़ा चकित हुआ। उसे अपनी तुच्छता पर बड़ी लज्जा अनुभव हुई और वह देशबंधु की महानता को समझ उनके सम्मुख नतमस्तक होकर क्षमा-याचना करके वापस लौट गया। एक अनुपम उदाहरण देश के कार्य के लिए अपना सर्वस्व समर्पण करने का। प्रत्येक देशभक्त के लिए प्रेरक है उनका यह जीवन प्रसंग।

उठो ! जागो ! और घर घर में
'वेद' पहुँचाकर धर्म का प्रचार करो

१५,५०० परिवारों में वेद भाष्य पहुँचाने के बाद
दयानन्द संस्थान सम्पर्क घोषित करता है

घर-घर में 'वेद' पहुँचाने के लिए

चारों वेदों के भाष्य
का जनता संस्करण

दो सुनहरी जिल्दों में : २२०० पृष्ठ। वजन लगभग ८-९ किलो। मंत्र-अर्थ-भावार्थ-छन्द-स्वर-देवता सहित।

लागत मूल्य २५१)। किन्तु प्रचार के लिए
केवल ७ मई १९७६ तक

भेंट मूल्य १५१) : साथ में १०१) की
२१ पुस्तकें मुफ्त

पैकिंग, प्रेषण व कवर व्यय पृथक्

वितरण कार्य २६ अप्रैल १९७६ से आरम्भ हो गया है। इस योजना में थोड़ी सी ही प्रतियां दी जा रही हैं—शीघ्रता करें।

रेलवे स्टेशन लिखें। ५०) अग्रिम भेजें

दूरभाष—५१६६३९—२०१५८४

पंडिता राकेश रानी
प्रधान मंत्री

दयानन्द संस्थान, वेद मंदिर
१५९७ हरध्यानसिंह मार्ग करोल बाग
नई दिल्ली-५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

महर्षि का सच्चा स्मारक

★★★

यह मानव स्वभाव है कि वह अपने प्रिय की स्मृति को चिरस्थायी रखने का प्रयत्न करता है। वह उसकी स्मृति में ऐसा स्मारक चाहता है जो सुन्दर भी हो और सरल भी। किसी की स्मृति में स्मारिका या पुस्तक लिख देना सरल तो है पर स्थूल दृष्टि से सुन्दर नहीं।

दयानन्द विद्यालय, दयानन्द मठ, दयानन्द भवन, दयानन्द संस्थान, दयानन्द पीठ, दयानन्द मार्ग आदि महर्षि दयानन्द की स्मृति को चिर स्थायी रखने के ही तो प्रयत्न हैं।

ऋषि दयानन्द अपने पीछे आर्य समाजों को, अपने ग्रन्थों को, अपने चरित्र को और कई शिष्यों को छोड़ गये थे। इनमें से प्रत्येक उनका स्मारक है परन्तु जिस स्मारक की स्थिरता सबसे अधिक है वह आर्यसमाज है।

समझदार लोग सरल और सुन्दर के साथ यह भी देखते हैं कि वह स्मारक स्मरणीय के उद्देश्यों का प्रचारक तथा उपयोगी भी हो। दयानन्द की स्मृति में उसकी मूर्ति बनाकर पूजना, दयानन्द की भावनाओं के सर्वथा विपरीत कृत्य है। इसी प्रकार महर्षि की स्मृति में कोई स्थूल कार्य या शानदार भवन खड़ा कर देना उपयोगिता की दृष्टि से सर्वथा सारहीन है।

पंण्डित गुरुदत्त विद्यार्थी अपने व्याख्यानों में कहा करते थे कि "ईंट पत्थर पर किसी ऋषि का नाम खुदवा देने से ऋषि का स्मारक नहीं बनता, प्रत्युत यदि ऋषि का स्मारक स्थापित करना चाहते हो तो उन सिद्धान्तों का प्रचार करके दिखाओ जिन सिद्धान्तों का प्रचार स्वयं ऋषि करते रहे हैं। स्वामी दयानन्द का स्मारक यही है कि वेद के सिद्धान्तों का संसार में प्रचार हो जाये।"

आर्यसमाज पर चूंकि महर्षि के सिद्धान्तों के प्रचार का पूर्ण उत्तरदायित्व है एवं गत एक शताब्दी से वह महर्षि के सिद्धान्तों का सफलतापूर्वक प्रचार कर भी रहा है, अतः आर्यसमाज ही महर्षि का वास्तविक स्मारक हो सकता है।

महर्षि दयानन्द अपनी स्मृति में किसी स्थूल स्मारक बनाने के सर्वथा विरुद्ध थे। तभी तो उन्होंने उदयपुर में कविराज श्यामलदास से कहा था कि मेरी अस्थियों को किसी खेत में डाल देना, कोई समाधि या कोई चिह्न कदापि न बनाना"।

पण्डित इन्द्र जी ने ठीक ही लिखा है—"यदि आर्य जनता ऋषि की यादगार में कोई स्तूप या मकबरा बना देती तो आज हिन्दू स्त्रियां उस पर फूल और बतासे चढ़ा कर अपने जीवन को सफल मान रही होतीं"।

यदि देखा जाय तो महर्षि स्वयं भी आर्य समाज को ही अपना स्मारक मानते थे। उनका कथन है—"मेरे शिष्य सभी आर्य समाजी हैं। वे ही मेरे विश्वास और भरोसे के भव्य भवन हैं। उन्हीं के पुरुषार्थ पर मेरे कार्यों की पूर्ति और मनोरथों की सफलता अवलम्बित है।

इतना ही नहीं महर्षि कहते हैं—"मैंने आर्यसमाज का उद्यान लगाया है इससे मेरी अवस्था माली की सी है। पौधों में खाद डालते समय, राख और मिट्टी माली के सिर पर पड़ ही जाया करती है। मुझ पर राख और धूल चाहे जितनी पड़े मुझे इसका कुछ भी ध्यान नहीं पर वाटिका फूली फली रहे।"

—यशपाल आर्य बन्धु
आर्य निवास, चन्द्रनगर (मुरादाबाद)

क्षत्रिय है कर्त्तव्य-परायण

ऋतावाना निषेदतु साम्राज्याय सुक्रतू।
धृतव्रता क्षत्रिया क्षत्रमाशतुः॥ [ऋ०८।२५।८]

क्षात्र तेज को प्राप्त कर रहे,
सत्यव्रती, व्रतधारी क्षत्रिय।
उत्तम कर्म सदा करते हैं,
साम्राज्य के लिये यत्नशील।
क्षत्रिय हैं कर्त्तव्य-परायण,
सबके कष्ट मिटाते हैं।
पर पीड़ा से व्याकुल होते,
सबकी रक्षा करते हैं।
चोट से रक्षा करते हैं,
क्षात्र-धर्म हैं पाल रहे।
क्षत्रिय हैं समाज के भूषण,
राज-धर्म अपना रहे॥

—राम कृष्ण भारती

मेरे प्रभु

गूंज उठे फिर से धरती पर वेदों का संगीत,
रुद्ध प्राण विकसित हो सरसे मंगलमय मधुप्रीत।
सत्य स्नेह से पूरित युग हो, शांति सुधा बरसाए,
कण-कण में हो हर्ष थिरकता प्रेम प्राण सरसाए।
जन-जन का सौभाग्य उदय हो बुझे द्वेष की ज्वाला,
भेद-भाव की छाया मिटकर बंधे ऐक्य की माला।
धन वैभव से परिपूरित हों सारे ही नर-नारी,
सब दाता हों मुक्त भाव से, रहें न शेष भिखारी॥
मेरे प्रभु! दे बुद्धि सभी को यह संसार बचाओ।
महानाश की ज्वालाओं को अब तो शांत कराओ।
मन-मन्दिर में ज्योति-दान दे तम-अज्ञान हटाओ,
विजय वरण का अभय मन्त्र दे जन-जन को हरषाओ

—राकेश रानी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स्वराज्य संस्थापक शिवाजी

●●●

भारत के भाग्याकाश पर जब छत्रपति शिवाजी के रूप में स्वराज्य संस्थापक महान नक्षत्र का उदय हुआ तो उस समय आर्यावर्त का दक्षिणांचल सात परकीय सत्ताओं के जाल में फंसा निढाल हो रहा था। और समग्र उतरांको लीलने के उपरांत विशाल मुगल साम्राजय का अधिपति औरंगजेब दक्षिणांचल को भी निगलने के लिए उतावला था। इन्हीं आठों सत्ताओं के प्रबल प्रभंजन को चुनौती देकर स्वराज्य की संस्थापना का सद् संकल्प शाह जी के सुपुत्र सरजा शिवाजी ने ग्रहण किया।

माता जीजाबाई के नेत्रों के तारे एवम् समर्थ स्वामी रामदास के दुलारे शिवाजी ने बाल्यकाल में ही वैदिक संस्कृति का गरिमा गान सुना था। महान् आर्य वीरों के पावन चरित्र भी उनके पथ प्रदर्शक बन गए थे।

१६४६ ई० में १६ वर्ष की बाल्यावस्था में ही शिवाजी ने तोरण दुर्ग पर स्वतंत्रता की पुनीत पताका फहराई थी तो १६४८ ई० में इस महान वीर ने बाल रवि की न्याईं अपनी शक्ति का विकास कर पुरन्दर के अजेय कहे जाने वाले दुर्ग पर स्वतंत्रता की पताका फहरा दी थी। १६५६ ई० में बीजापुर के सेनापति अफजल खाँ ने इस महान राष्ट्र निर्माता को अपने षड़यंत्र में फंसाकर समाप्त करने की दुरभिसन्धि भी की। किन्तु 'शठे शाठ्यम् समाचरते' एवम् 'शस्त्रेण रक्षिते राष्ट्र' के वैदिक नीति वाक्यों के अनुगामी शिवा ने उसकी योजनाओं को ही धूल में नहीं मिलाया, अपितु उसे भी चिरनिद्रा में सुला दिया।

१६५७ में ही शिवाजी द्वारा संस्थापित स्वराज्य से मुगल साम्राज्य की छेड़छाड़ तो आरम्भ हो उठी थी किन्तु वास्तविक संघर्ष उस समय हुआ जब शिवाजी ने मुगल साम्राज्य के व्यापारिक केन्द्र सूरत को ही लूटकर अपने प्रचंड साहस का परिचय दिया। उन्हें तदुपरांत आगरा में जाकर बंदी तो बनना पड़ा किन्तु वहाँ भी इस महान् वीर ने अपनी कूटनीति के बल पर बंदी वास से मुक्ति प्राप्त कर औरंगजेब की नींद हराम कर दी।

१६ जून १६६४ को छत्रपति शिवाजी के राज्यभिषेक के रूप में कई शताब्दियों के उपरांत भारत के दक्षिणांचल में स्वराज्य की संस्थापना हुई और उनके राज्यारोहण के साथ ही स्वराष्ट्र की सांस्कृतिक चेतना, राजनीतिक आंदोलन एवम् समाज सुधार के प्रयासों का इतिहास भी जुड़ गया।

छत्रपति का शासन काल नितांत संक्षिप्त रहा। क्योंकि सिंहासनारूढ़ होने के ६ वर्ष बाद ही उनका निधन हो गया। किन्तु इतिहास पुरुषों के मध्य छत्रपति शिवाजी को सदैव उच्च स्थान प्राप्त रहेगा। वे हिन्दुत्व के महान् पक्षधर थे तो एक सद्गृहस्थ व महान् राष्ट्र निर्माता भी थे। धार्मिक मतान्धता के इस युग में भी उन्होंने सभी मतों एवम् संप्रदायों के प्रति सहिष्णुता की नीति को अपनाया था। निष्ठावान हिन्दू होने पर भी उन्होंने कभी अन्य मतविलम्बियों पर अत्याचार न किया और कभी भी उन्हें अपने दमन का शिकार न बनाया।

उनका उज्जवल जीवन दर्शन भारत की भावी पीढ़ियों का भी राष्ट्र एवम् स्वातन्त्र्य रक्षा की प्रेरणा देगा।

पं० जवाहर लाल नेहरू ने इस महान् युग निर्माता की यशगाथा इन शब्दों में गायी थी:—

"शिवाजी महाराज का संबंध न केवल महाराष्ट्र व बल्कि सारे देश से था। वह सिद्धान्तवादी बुजुर्गों की शिक्षाओं से बहुत प्रभावित थे। उन्होंने अपने निजी हितों के लिए वैयक्तिक शासन स्थापित करने की इच्छा न की थी। अपने काल की शासन व्यवस्था की अच्छाइयों व बुराइयों का भी उन्होंने ध्यानपूर्वक अध्धयन किया था और उसके प्रकाश में उन्होंने अपने शासन प्रबन्ध के ढंग निश्चित किए। शिवाजी महाराज एक कट्टर हिन्दू थे, परन्तु दूसरे धर्मों के लोगों का भी बहुत ध्यान रखते थे। उन्होंने दूसरे धर्मों की इबादतगाही के लिए धन दिया। उनकी सेना के कई प्रमुख सेनापति मुस्लिम थे। वह कुरान शरीफ का आदर करते थे। उन्होंने युद्ध के दौरान हमेशा इस बात का ध्यान रखा कि मुस्लिम महिलाओं का सम्मान सुरक्षित रहे। वह एक महान् योद्धा थे। स्वतंत्रता की रक्षा के लिए समुद्री बेड़े की आवश्यकता और महत्व को अच्छी तरह समझते थे। अंग्रेजों और मुगलों के हमलों की रोकथाम के लिए उन्होंने एक शक्तिशाली समुद्री बेड़ा कायम किया। प्रतापगढ़ के किले के निर्माण में उनके यौद्धिक गुणों का पता चलता है। शिवाजी महाराज को अपने देश से बहुत प्यार था। वह मानवीय खूबियों और अच्छाइयों के एक बहुत बड़े प्रतीक थे।

★★★

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आर्य समाजी होने के नाते :—

आप क्या करते हैं ?

(एक विचारक)

★ ★ ★ ★

सभी उन व्यक्तियों से जो आर्यसमाज के अधिकारी हैं, सदस्य हैं, नेता हैं जब यह पूछा जाता हैं कि वह ठंडे दिल से विचार करें कि आर्य समाजी होन के नाते आर्य समाज के लिए वह क्या कुछ करते हैं ? तब—

कुछ सज्जन उत्तर में कह देते हैं कि हम स्कूल चलाते हैं, कन्या पाठशालाएं खोलते हैं, चन्दा इकट्ठा करते हैं और उनके संचालन के लिए दिन रात एक कर देते हैं।

उनकी यह बातें सुन कर सभी बहुत प्रसन्न होते हैं और समझते हैं कि वास्तव में आर्यसमाज उन्नति कर रहा है ? पर—

सभी यह क्या भूल जाते हैं कि, क्या एक योग्य नागरिक का भी यह कर्तव्य नहीं है कि वह बच्चों को अच्छी शिक्षा देने के लिए अच्छे विद्यालयों का प्रबन्ध करे। ऐसा कर के तो हम ने केवल एक भारतीय नागरिक के कर्तव्यों को पूरा किया। इस में आर्यसमाजी होने के नाते क्या कुछ हुआ ?

(२) कुछ भाई बोल पड़ेंगे कि हम प्रति सप्ताह एक स्थान पर इकट्ठे होते हैं, सत्सग लगाते हैं। व्याख्यान सुनते हैं, हवन यज्ञ, संध्या करते हैं यह क्या कुछ कम है ?

हम पूछते हैं कि क्या एक साधारण जन को जो आर्य समाज का सभासद नहीं भी है यह सभी कृत्य नहीं करना चाहिए। यह तो मानव मात्र का साधारण धर्म है। नित्य ईश वंदना, नागरिक नियमों द्वारा आबद्ध हो परस्पर प्रेम बढ़ाने के लिये सप्ताह में एक बार अपने-अपने मोहल्ले में इकटठा होकर कुछ कहना, कुछ सुनना सभी के लिए उन्नति का मूल है। पर ऐसा कर आपने आर्यसमाजी होने के नाते क्या किया ? सोचिए तो सही लबी चौड़ी हजारों रुपए की इमारतें खड़ी कर आप हर्ष में फूले नहीं समाते पर आप यह क्यों भूल जाते हैं कि लंबे चौड़े भवनों का नाम तो आर्यसमाज नहीं है।

आर्य समाजियों ! आप अपने कार्यों का आज चाहे जितना भी ढोल पीटें पर वास्तविकता यही है कि आप आर्य समाजी होने के नाते आज कुछ भी नहीं कर रहे हैं। आप की प्रगति आज केवल (शो) दिखावे के लिए रह गई है। और इसी विषम परिस्थिति में यह पंक्तिएँ लिखी जा रही है।

नागरिक कर्तव्यों की पूर्ति के लिए आप प्रयत्न करें समय दें यह अच्छा है और उचित भी, पर यदि आप अपने को आर्य समाजी कहना चाहते हैं तो आप का केवल एक ही कर्तव्य है—

सोते, जागते, उठते, बैठते, हर अवस्था में वैदिक-विचारधारा का प्रचार। जन-जन के मन को, मस्तिष्क को बदलना, सोचने का तरीका, जीवन निर्वाह का तरीका, प्रत्येक कार्य करने का तरीका बदलना, यह होना चाहिए आपका कार्यक्रम ! संसार की राजनीति, धर्म नीति, अर्थ नीति, वैदिक विचारों से प्रभावित हो। यह होना चाहिए आप का उद्देश्य ? आज क्या आप ऐसा कर रहे हैं यदि नहीं तो क्यों नहीं। बताइए ?

(१) कितना साहित्य आपकी विचारधारा के प्रसार के लिए आज प्रकाशित हो रहा है ?

(२) कितने कार्यकर्त्ता आज आप के महान् आदर्शों को देश विदेश में फैलाने के लिए ट्रेनिंग पा रहे हैं। ?

(३) कितने व्यक्ति अपना जीवन् आज की चकाचौंध करने वाली भोग वादी लहर में न बहा कर वेद की शिक्षा के अनुकूल बना रहे हैं ?

(४) और कितने धर्म प्रसारक आज प्राणों की आहुति देकर संसार को उठाने के लिए तत्पर हैं।

(५) भिन्न-भिन्न संसार की भाषाओं में कितने समाचार पत्र आपके मंतव्यों को फैलाने के लिए प्रकाशित हो रहे हैं ?

सोचिए तो सही आप हैं कहाँ ? महर्षि दयानन्द का कार्य अधूरा पड़ा है। संसार नीचे की ओर जा रहा है और हम भी उसके साथ हैं। हम तो केवल यह चाहते हैं कि अगर आप आर्य समाजी हैं तो जन-जन को आर्य बनाने के लिए कुछ कीजिए। केवल यही आपका कर्तव्य है और सभी काम नागरिकों के हैं नागरिक होने के नाते हैं। आप अपना कर्तव्य निभाइए। इधर उधर न भटकिए। देखिए, कहीं आप कर्तव्य भ्रष्ट तो नहीं हो रहे ?

यह आप सोचें और सोचकर आर्य होने के नाते वह सभी कुछ करना प्रारम्भ करें जो आप आज नहीं कर रहे।

आपकी सारी शक्ति, सारा धन, सारी आयु, केवल वेद ज्योति के प्रचार के लिए व्यय हो। और आपका सपना, उद्देश्य आदर्श केवल एक हो वेद की भावनाओं का प्रसार।

क्या आप ऐसा करेंगे ? यही पूछना है।

□

सम्पादक—प्रकाशक—मुद्रक पंडिता राजेश्वरानी द्वारा—दयानन्द संस्थान के लिए—भाटिया प्रेस दिल्ली में छपा।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

न ज्ञान [साप्ताहिक]
मन्दिर, १५६७ हरध्यानसिंह मार्ग
ई दिल्ली-११०००५। दूरभाष : ५६६६३६/२०१५८४

रविवार
२ मई
१९७६

रजिस्ट्रेशन
D-(C) 619

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi